CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10-3

अष्टाध्यायी-सूत्रपाठस्य परिशिष्टानि

न्थालय
वाराणसी-५
37/7

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ... ॥

१) ङित्यभ्यासात्पञ्चानुबन्धकरणं सामर्थ्याकृतम् ॥ ३।४।१४२॥ महाभा० वार्तिकम् ॥ पृ० ८५३॥
२) ङित्करणस्यानुबन्धकरणसामर्थ्यात् इ. ओणो भवति ॥ काशिका ॥ ६।४।१४२॥
३) अविहितसाधुदातत्वं वृषादिषु द्रष्टव्यम् ॥ पृ. २८०। वृषादीनां च ॥ ६।१।२०३॥ महाभाष्यम् ॥ पृ. २८९॥
४) उञ्छादीनां च ॥ ६।१।१६०॥ पृ. २२५॥ अन्तोदात्तत्वम् ।
५) यतोऽनावः ॥ ६।१।२०७॥ पृ. २०१॥ यत्प्रत्ययान्तस्य द्व्यच आदिरुदात्तः ॥
६) छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ॥ ३।४।६॥
७) छन्दस्युभयथा ॥ ३।४।११७॥ सार्वधातुके आर्धधातुके छन्दसि उभयथा भवति।
८) व्यत्ययो बहुलम् ॥ ३।१।८५॥ आत्मनेपद व्यत्ययः परस्मैपदव्यत्ययः इत्यादि ॥
९- बहुलं छन्दसि विषये सर्वे विधयो भवन्तीति ॥ महाभा० वा० ॥ ३।१।८५॥ पृ० ११५५
१०- बहुलं छन्दसि ॥ अष्टा० ॥ ३।२।८८॥ बहुलं छन्दसि विधौ क्विप् प्रत्ययः यतोऽनेन ।
११- विभाषा छन्दसि ॥ अष्टा० ॥ १।२।३६॥ विकल्पेन एकश्रुतिः ।
१२-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टाध्यायी-सूत्रपाठस्य परिशिष्टानि

विविधपाठान्तर-पाणिनीयशिक्षा-सूत्रसूच्यादिरूपाणि

॥- "सर्ववेदपारिषदं हीदं शास्त्रम्। तत्र नैकः पन्थाः आस्थातुम्॥" महाभाष्यम्॥२।१।५८॥पृ.१४८॥युधिष्ठिरो मीमांसकः॥

आ3/7

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

संकलयिता—
युधिष्ठिर मीमांसकः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—ट्रस्ट के उद्देश्य—

प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण, रक्षा तथा प्रचार, एवं भारतीय संस्कृति, भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

॥ओ३म्॥
स्ना. महादेवसिंह सं. आर्य
लीलासदन। आनन्दबाग।
अहमदाबाद-३८०००६
4/11/76

ओ३म्

अष्टाध्यायी-सूत्रपाटस्य परिशिष्टानि

विविधपाठान्तर-पाणिनीयशिक्षा-सूत्रसूच्यादिरूपाणि

महादेवसिंह मं॰ आर्य
"लीलासदन"
नगरी हॉस्पिटल
अहमदाबाद-३८० ००६.

प्रकाशकः

रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़

सोनीपत (हरयाणा)

मुद्रकः

सुरेन्द्र कुमार कपूर

रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़

संवत् २०३१ सन् १९७४ मूल्य २-५०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र भवः ॥ अष्टा० ४।३।५३॥
१-राष्ट्रे भवः इति राष्ट्रियः॥
२ दिशि भवं मिति दिश्यम् ॥ ४।३।५४।

आम्नाय ... पुस्तकालय
... करौंदी
वाराणसी-5

परिशिष्ट-सूची

विषय	पृष्ठ
प्रथम परिशिष्ट—अष्टाध्यायी के लघु और वृद्ध पाठ	८९
द्वितीय परिशिष्ट—नागोजिभट्ट पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायी पाठ	९५
तृतीय परिशिष्ट—अनन्तराम पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायी पाठ	११०
चतुर्थ परिशिष्ट—अष्टाध्यायी के पाठान्तर	११४
पञ्चम परिशिष्ट—मूल पाणिनीय शिक्षा	१३८
सम्पादकीय	१३८
पाणिनीय शिक्षा के लघु वृद्ध पाठ	१४८
षष्ठ परिशिष्ट—अष्टाध्यायी-सूत्र सूची	१६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

१ - न लिङ्गादयो भवन्तीति ॥ महाभा० ॥ ३।१।६३॥ १८५
२ -

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी

महादेवसिंह संग्रामसिंहजी
"लीलासदन" ४. आनंदधाम
नगरी होस्पिटल के पास,
अहमदाबाद-३८० ००६.

प्रथम परिशिष्ट

अष्टाध्यायी के लघु और वृद्ध पाठ

हमने संस्कृत-व्याकरण-शास्त्र के इतिहास के प्रथम भाग (पृष्ठ २२०)अष्टाध्यायी के लघु और वृद्ध पाठों का उल्लेख किया है। दोनों ही पाठ पाणिनीय हैं। कालभेद से किये गये प्रवचन-भेद के कारण दो पाठ हैं। वहीं पर हमने लिखा है कि अष्टाध्यायी के जिस पाठ पर कात्यायन ने वार्तिक लिखे, तथा पतञ्जलि ने महाभाष्य लिखा, वह वह अष्टाध्यायी का लघुपाठ है, और जिस पाठ पर जयादित्य और वामन ने काशिकावृत्ति लिखी वह वृद्धपाठ है। काशिकाकार पर सूत्रपाठ में वार्तिक वा वार्तिकांश का प्रक्षेप करने का आरोप लगाया जाता है, वह भी अनुचित है। काशिकाकार तो उसी सूत्रपाठ पर वृत्ति लिख रहा है, जो उसे परम्परानुसार प्राप्त हुआ है। इस विषय की सप्रमाण मीमांसा भी हमने उसी प्रकरण में की है।

रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा) से अष्टाध्यायी का जो पाठ छपा है वह प्रायः महाभाष्यानुसारी लघुपाठ है। अन्यत्र की छपी अष्टाध्यायी का पाठ काशिकानुसारी वृद्धपाठ है। हम यहां लघुपाठ और वृद्धपाठ में जहां-जहां अन्तर है उसका निर्देश करते हैं—

विशेष— जहां योग-विभाग के कारण वृद्धपाठ में सूत्र संख्या बढ़ी है, वहां दोनों पाठों का अगला सूत्र देकर संख्या भेद दर्शाया है। जहां लघुपाठ के दो सूत्रों के मध्य वृद्धपाठ में सूत्र अधिक है, वहां दोनों पाठों कीं क्रम संख्या दर्शाने के लिये ऊपर नीचे के दोनों सूत्र दिये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प्रथम अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।१७[1] उञ ऊँ ।	१।१७ उञः ।
	१।१८ ऊँ
१।१८ इदूतौ च सप्तम्यर्थे ।	१।१९ इदूतौ च सप्तम्यथ ।
प्रथम पाद में पूर्ण संख्या ७४ ।	**प्रथम पाद में पूर्ण संख्या ७५ ।**
३।२९ समो गम्यृच्छिभ्याम् ।	३।२९ समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः ।

दोनों पाठों में सूत्रसंख्या समान है

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
४।५८ प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे ।	४।५८ प्रादयः ।
	४।५९ उपसर्गाः क्रियायोगे ।
४।५९ गतिश्च ।	४।६० गतिश्च ।
चतुर्थपाद में पूर्ण संख्या १०९ ।	**चतुर्थपाद में पूर्ण संख्या ११० ।**

द्वितीय अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।११ विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ।	१।११ विभाषा
	१।१२ अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या।
१।१२ आङ्मर्यादाभिविध्योः ।	१।१३ आङ्मर्यादाभिविध्योः ।
प्रथम पाद में पूर्ण संख्या ७१ ।	**प्रथम पाद में पूर्ण संख्या ७२ ।**

तृतीय अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।९५ कृत्याः ।	१।९५ कृत्याः प्राङ् ण्वुलः ।

---

१. दोनों पाठों में सूत्र के आरम्भ में दी गई प्रथम संख्या पाद की है और दूसरी सूत्र की ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।१२६ आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च ।[1]	१।१२६ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ।

प्रथम पाद में दोनों पाठों में सूत्र संख्या समान है ।

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
३।१२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च ।	३।१२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधारावायाश्च ।

तृतीय पाद में दोनों पाठों में सूत्र संख्या समान है ।

चतुर्थ अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।१५ टिड्ढाणञ्······कञ्क्वरपः ।	१।१५ टिड्ढाणञ् ·····कञ्क्वरप्ख्युनाम् ।
१।१६६ वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे···।	१।१६५ वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे···।
	१।१६६ वृद्धस्य च पूजायाम् ।
	१।१६७ यूनश्च कुत्सायाम् ।
१।१६६ जनपदशब्दात् ·· ।	१।१६८ जनपदशब्दात्··· ।
प्रथम पाद में पूर्ण संख्या १७६ ।	**प्रथम पाद में पूर्ण संख्या १७८ ।**
२।२ लाक्षारोचनाट्ठक् ।	२।२ लाक्षारोचनाशकलकर्दमाट्ठक् ।
२।७ दृष्टं साम ।	२।७ दृष्टं साम ।
	२।८ कलेर्ढक् ।
२।८ वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ।	२।९ वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ।
२।२० सास्मिन् पौर्णमासीति ।	२।२१ सास्मिन् पौर्णमासीति संज्ञायाम् ।
द्वितीय पाद में पूर्ण संख्या १४४ ।	**द्वितीय पाद में पूर्ण संख्या १४५ ।**

---

१. रामलाल कपूर ट्रस्ट मुद्रित अष्टाध्यायी में भूल से 'आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च' वृद्ध पाठ छपा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
३।१३१ रेवतिकादिभ्यश्छः।	३।१३१ रैवतिकादिभ्यश्छः।
	३।१३२ कौपिञ्जलहास्तिपदादण्।
	३।१३३ आथर्वणिकस्येकलोपश्च।
३।१३२ तस्य विकारः।	३।१३४ तस्य विकारः।
तृतीय पाद में पूर्ण संख्या १६६।	**तृतीय पाद में पूर्ण संख्या १६८।**
४।१७ विभाषा विवधात्।	४।१७ विभाषा विवधवीवधात्।

चतुर्थ पाद में दोनों पाठों में सूत्र संख्या समान है।

पञ्चम अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।३५ शाणाद्वा।	१।३५ शाणाद्वा।
	१।३६ द्वित्रिपूर्वादण् च।
१।३६ तेन क्रीतम्।	१।३७ तेन क्रीतम्।
१।६५ दण्डादिभ्यो यत्।	१।६६ दण्डादिभ्यो यः।
प्रथम पाद में पूर्ण संख्या १३५।	**प्रथम पाद में पूर्ण संख्या १३६।**

षष्ठ अध्याय

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
१।३२ ह्वः सम्प्रसारणमभ्यस्तस्य च।	१।३२ ह्वः सम्प्रसारणम्।
	१।३३ अभ्यस्तस्य च।
१।३३ बहुलं छन्दसि।	१।३४ बहुल छन्दसि।
१।६० ये च तद्धिते।	१।६१ ये च तद्धिते।
	१।१६२ अचि शीर्षः।
१।६१ पद्दन्नोमासहृन्निशसन्…।	१।६३ पद्दन्नोमासहृन्निशसन्…।
१।७३ दीर्घात् पदान्ताद्वा।	१।७५ दीर्घात्।
	१।७६ पदान्ताद्वा।
१।७४ इको यणचि।	१।७७ इको यणचि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१।९६ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा।	१।९९ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा।
	१।१०० नित्यमाम्रेडिते डाचि।
१।९७ अकः सवर्णे दीर्घः।	१।१११ अकः सवर्णे दीर्घः।
१।१११ नान्तः पादम्।[1]	१।११५ प्रकृत्याऽन्तः पादम्।
१।१२२ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि।[2]	१।१२६ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि।[2]
१।१३१ सुट् कात् पूर्वः।	१।१३५ सुट् कात् पूर्वः।
	१।१३६ अडभ्यासव्यवायेऽपि।
१।१३२ सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे।	१।१३७ सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे।
१।१४५ विष्किरः शकुनौ वा।	१।१५० विष्किरः शकुनौ विकिरो वा।
१।१५० कास्तीराजस्तुन्दे नगरे।	१।१५५ कास्तीराजस्तुन्दे नगरे।
	१।१५६ कारस्करो वृक्षः।
१।१५१ पारस्करप्रभृतीनि ।	१।१५७ पारस्करप्रभृतीनि…… ।
प्रथम पाद में पूर्ण संख्या २१७।	**प्रथम पाद में पूर्ण संख्या २२३।**
२।१०७ उदराश्वेषुषु क्षेपे।	२।१०७ उदराश्वेषुषु।
	२।१०८ क्षेपे।
२।१०८ नदी बन्धुनि।	२।१०९ नदी बन्धुनि।
द्वितीय पाद में पूर्ण संख्या १९८।	**द्वितीय पाद में पूर्ण संख्या १९९।**
३।६ आत्मनश्च।	३।६ आत्मनश्च पूरणे।
३।७ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः परस्य च।	३।७ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः।
	३।८ परस्य च।
३।९ हलदन्तात् …… ।	३।९ हलदन्तात्… ।
तृतीय पाद में पूर्ण संख्या १३८।	**तृतीय पाद में पूर्ण संख्या १३९।**

---

१. रामलाल कपूर ट्रस्ट मुद्रित सूत्रपाठ में भी 'प्रकृत्यान्तः पादम्' पाठ छपा है। महाभाष्यानुसारी लघुपाठ 'नान्तः पादम्' ही है।

२. यहां महाभाष्यानुसारी पाठ 'आङोऽनुनासिकश्छन्दसि बहुलम्' है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तम अध्याय

३।११८ औदच्च घेः ।	३।११८ औत् ।
	३।११९ अच्च घेः ।
३।११९ अङो नास्त्रियाम् ।	३।१२० आङो नास्त्रियाम् ।
तृतीय पाद में पूर्ण संख्या ११९ ।	**तृतीय पाद में पूर्ण संख्या १२० ।**

अष्टम अध्याय

१।७३ नामन्त्रिते समानाधिकरणे ।	१।७३ नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् ।
१।७४ सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने ।	१।७४ विभाषितं विशेषवचने बहुवचनम् ।

प्रथम पाद में दोनों पाठों में सूत्र संख्या समान है ।

नागेश आदि के मत में ८।३।९९–१०० सूत्र लघुपाठ में नहीं हैं । उसके मत में, लघुपाठ में ११७ सूत्र हैं । और वृद्धपाठ में ११९ सूत्र हैं ।

४।१९ अनितेरन्तः ।	४।१९ अनितेः ।
	४।२० अन्तः ।
४।२० उभौ साभ्यासस्य ।	४।२१ उभौ साभ्यासस्य ।
४।२७ उपसर्गादनोत्परः ।	४।२८ उपसर्गाद् बहुलम् ।

८।४।५१–६३ पर्यन्त सूत्रपाठ में क्रम भेद है ।[1]

चतुर्थ पाद में पूर्ण संख्या ६७ ।	**चतुर्थ पाद में पूर्ण संख्या ६८ ।**

इति लघुवृद्धपाठयोः सूत्रपाठविवेचनम् ।

---

१. यह क्रम भेद 'नागोजिभट्ट-पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायी पाठ के अन्त में देखें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय परिशिष्ट

नागोजिभट्ट-पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायीपाठ

'नागोजिभट्ट-पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायीपाठ' का एक हस्तलेख वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती-भवनस्थ संग्रहालय में विद्यमान हैं। मूलकोश सं० १८८५ वि० का लिखा हुआ हैं। इसकी हस्तलेख संख्या आ ६१५० है। हस्तलेख में दो पत्रे (=४ पृष्ठ) हैं। यह अत्यन्त जीर्णशीर्ण और अशुद्ध तथा अस्पष्ट लिखा हुआ है। इस हस्तलेख की प्रतिलिपि हमारे विद्यालय (वाराणसी) के भूतपूर्व छात्र श्री ओम्प्रकाश व्याकरणाचार्य एम०ए० ने श्रावण वि० सं० २०२३ इसकी प्रतिलिपि करके हमें भेजी थी।

नीचे सूत्र के साथ [ ] कोष्ठक में जो सूत्र संख्या दी जा रही है, वह रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अष्टाध्यायी (संस्क० ७, सं० २०२८) के अनुसार है और यह सूत्र संख्या हमने दो है।

हस्तलेख का पाठ

[अथ प्रथमोऽध्यायः]

[१।१।१७] उञः, ऊँ—योगविभागोऽत्र भाष्यकृतः।
[१।१।४६] स्थानेऽन्तरतमः, स्थानेऽन्तरतमे पाठान्तरम्[1]।
[१।३।२६] समो गम्यृच्छिभ्याम्—स्वरित्यादि प्रक्षिप्तम्[2]।

---

१. कुतः. पुनरियं विचारणा ? उभयथा हि तुल्या संहिता 'स्थानेऽन्तरतम उरण् रपरः' इति। द्र०—अत्रैव सूत्रे महाभाष्यम्।

२. वृत्तिकृतेति शेषः (नागेशमते)। महाभाष्येऽत्र तदर्थबोधकवार्तिकद्वय-दर्शनात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[१।४।१] आकडारात्—प्राक्कडरात् परं कार्यम् इति पाठान्तरम्[1]।

[१।४।४३] दिवः कर्म इति आकडारसूत्रभाष्यस्वरसः[2] [पाठः], 'च'सहितः पाठो वृत्तौ ।

[१।४।५५]तत्प्रयोजको हेतुः—अत्र चकारस्य सैव व्यवस्था ।[3]

[१।४।५८] प्रादयः, [उपसर्गाः] क्रियायोगे—योगविभागोऽत्र भाष्यकृतः ।

[१।४।५९] गतिः—चकारो दिवः कर्मेतिवत् ।[4]

[२।१।१२] विभाषा, अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या—योगविभागोऽत्र भाष्यकृतः ।

[इति प्रथमोऽध्यायः]

[अथ द्वितीयोऽध्यायः]

[२।१।२२] द्विगुः—चकारो गतिरितिवत् ।[5]

[२।१।४७] पात्रेसमितादयः—सम्मित इत्यपि पाठः ।[6]

---

१. उभयथाह्याचार्येण शिष्याः सूत्रं प्रतिपादिताः । केचिद् 'आकडारादेका संज्ञा' इति, केचित् 'प्राक्कडारात् परं कार्यम्' इति । अत्रैव सूत्रे भाष्यं द्रष्टव्यम् ।

२. 'दिवः कर्म—साधकतमं करणं दिवः कर्म च चकारः कर्तव्यः । द्र०—महा० १।४।१॥

३. अत्र 'स्वतन्त्रः कर्ता तत्प्रयोजको हेतुश्च—चकारः कर्तव्यः' इत्यादि १।४।१ सूत्रस्थं भाष्यमनुसन्धेयम् ।

४. अत्र 'उपसर्गाः क्रियायोगे गतिश्चेति चकारः कर्तव्यः' इत्यादि १।४।१ सूत्रस्थं भाष्यमनुसन्धेयम् ।

५. यथा 'गतिः' [१।४।५९] सूत्रे चकाररहितः पाठस्तथैवात्रापीति भावः । अत्र 'तत्पुरुषत्वे द्विगुश्चग्रहणं कर्तव्यम् । तत्पुरुषः, द्विगुश्च इति चकारः कर्तव्यः' इत्याद्याकडार [१।४।१] सूत्रभाष्यमनुसन्धेयम् ।

६. काशिकावृत्तौ पाठान्तरम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[२।१।६६] युवाखलति ~ 'जरद्भिः' अपपाठः ।[1]

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

[अथ तृतीयोऽध्यायः]

[३।१।६५] कृत्याः—'प्राङ्ण्वुलः' इति प्रक्षिप्तम् ।[2]

[३।२।७६,७७—अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते क्विप् च इति स्थाने] क्विप् च, अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते—इति ब्रह्मभ्रूण [३।२।८७] इति सूत्र-भाष्यस्वरसः ।

[३।३।७८] अन्तर्धनोदेशे—'घणः' इत्येके[3], 'अन्तर' इत्यन्ये ।[4]

[३।३।१२२] अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च—'धारावायाः' इति प्रक्षिप्तम् ।[5]

[३।४।२२] प्रमाणे—स च व्यवहितः पाठो वृत्तौ ।[6]

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

[अथ चतुर्थोऽध्याय]

[४।१।१५] टिड्ढाणञ्··· क्वरपः—[7]'ख्युनाम्' इति प्रक्षिप्तम्

[४।१।३७] वृषाकप्य ·······[8]कुसिदानामुदात्तः—'कुसीद' इत्यपपाठः ।

---

१. अत्रैव सूत्रभाष्यप्रदीपे कैयटः—'जरद्भिः इत्यपि पाठं शिष्या आचार्येण वोधिता इति युवजरन् इत्यपि भवति ।' अत्रैव प्रदीपोद्योते नागेशः—'अत्र मानं चिन्त्यम् । युवजरन् इति बहुलग्रहणेनापि सुसाधम् ।'

२. अत्रैव सूत्रभाष्ये वार्तिकदर्शनात् ।

३. द्रष्टव्याऽत्रस्था वृत्तिः । ४. अत्र प्रमाणमनुसन्धेयम् ।

५. हलश्च [३।३।१२१] सूत्रभाष्ये तादृग्वार्तिकदर्शनात् ।

६. 'वर्षप्रमाणे चोलोपोऽस्यान्यतरस्याम्' पाठ इति भावः । वृत्तौ सम्प्रति चकारोऽन्यत्रोपलभ्यते । ७. अत्रैव सूत्रभाष्ये तादृगुपसंख्यानस्य दर्शनात् ।

८. किमत्र प्रमाणमिति न व्यक्तीकृतं नागोजिभट्टेन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[४।१।८१] दैवयज्ञि ····काण्ठेविद्धि—'काण्डे' इति पाठान्तरम् ।[1]

[४।१।१३४] मातृष्वसुः—[2]चकारपाठोऽत्र वृत्तौ ।

[४।१।१५५,१६७,१७१] कौसल्यकार्मा ···· (१५५) तालव्यपाठः केषांचित् ।[3] एवं साल्वेय (१६७) साल्वावयव (१७१) इत्यादावपि ।

[४।१।१६५ इत्यनन्तरम्] वृद्धस्य च पूजायाम्, यूनश्च कुत्सायाम्—द्वे वार्तिके प्रक्षिप्ते ।[4]

[४।२।२] लाक्षारोचनाट् ठक्—'शकलकर्दमाभ्याम्' इति प्रक्षिप्तम् ।[5]

[४।२।४१] ब्राह्मणमाण ·· यन्—'यत्' इति त्वपपाठः ।[6]

[४।२।४२] ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्—'गजसहाय' इति प्रक्षिप्तम् ।[7]

[४।२।१२६] कच्छाग्निवक्त्रवर्तोत्तरपदात्—'गर्त' इत्यपपाठः ।[8] 'जनपदतदव०' [४।२।१२३] इति सूत्रभाष्ये स्पष्टम् ।

[४।३।११७,११८]संज्ञायां कुलालादिभ्यो वुन्—योगविभागोऽत्र भाष्यकृतः ।[9]

---

१. 'कण्ठविद्ध' इत्यपि पाठान्तरम् । द्र०—शब्दकौस्तुभः ४।१।८१।।

२. किमत्र प्रमाणमिति नोल्लेखि भट्टेन । उद्योतेऽप्यत्र सूत्र इत्थमेवाह नागेशः ।

३. नाम नात्र निर्दिष्टम् ।

४. 'जीवति तु वंश्ये युवा' [४।१।१६३] सूत्र भाष्ये 'वृद्धस्य च पूजायाम्' इति, 'अपत्यं पौत्रप्रभृति' ०[४।१।१६२] सूत्रभाष्ये 'जीवद्वंश्यं च कुत्सितम्' इति वार्तिकदर्शनादिति भावः ।

५. अत्रैव वार्तिकदर्शनादिति शेषः ।

६. काशिकावृत्तावप्ययमेव पाठः, केषुचिद् हस्तलेखेषु 'यत्' पाठो दृश्यते ।

७. अत्रैव सूत्रभाष्ये तादृग्वचनस्य दर्शनात् ।

८. द्रष्टव्योऽत्र लघुशब्देन्दुशेखरः (भाग २, पृष्ठ २६०) ।

९. अत्रैव सूत्रभाष्ये 'योगविभागः करिष्यते' इति वचनात् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[४।३।१३१ इत्यनन्तरम्] 'कौपिञ्जल' इति 'आथर्वणिक' इति द्वे वार्तिके प्रक्षिप्ते ।[1]

[४।३।१४०] शम्याः ष्ट्लञ् ।[2]

[४।३।१४९] नोत्त्वद्वर्ध्रबिल्वात्—'वर्ध' इति द्विः ।[3]

[४।४।१७] विभाषा विवधात्—'वीवध' इति प्रक्षिप्तम् ।[4]

[४।४।४२] प्रतिपथमेति [ठंश्च]—'ठञ् च' इति द्विः ।[5]

[४।४।५३] किशरादिभ्यः—दन्त्यमध्यपाठान्तरम् ।[6]

[४।४।६४] बह्वच्पूर्वपदाट् ठञ् च—'ठच्' इति वृत्तौ ।[7]

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

[अथ पञ्चमोऽध्यायः]

[५।१।२५] कंसाट्टिठन्[8]—'टिठन्' इति वृत्तौ ।

---

१. रैवतिकादिभ्यश्छः [४।३।१३१] सूत्रभाष्ये वार्तिकपाठात् ।

२. अत्र 'ञितश्च तत्प्रत्ययात्' [४।१।१५३] भाष्यप्रदीपोद्योते 'भाष्य-प्रामाण्यात् ष्लञः टित्त्वस्यैवाङ्गीकारान्न दोषः' इति नागेशवचनमनुसन्धेयम् । तुलनीयम्—'ष्लञ्' अत्र टित् प्रत्ययः । लघुशब्देन्दुशेखरः (भाग २, पृष्ठ २८०)

३. द्विःप्रकारकोऽपि पाठः प्रामाणिक इति भावः । अयं पाठः ४।२।१२४ सूत्रभाष्येण द्योत्यते ।

४. अत्रैव भाष्ये वार्तिकदर्शनात् ।

५. अत्र द्विः पदेन किमभिप्रेतमिति न ज्ञायते । अत्र 'वृत्तौ त्वेतद् विहित-प्रत्ययो नियुक्तः' इति लघुशब्देन्दुशेखरे (भाग २, पृष्ठ २८७) नागेशः । एतद्-व्याख्याने भैरवमिश्र आह—'तेनादिवृद्धिरहितमुदाहरणं युक्तम्' इति । सम्भवत उभयथाऽपि पाठोऽत्र नागेशाभिप्रेतः स्यात् ।

६. लघुशब्देन्दुशेखरे तु नागेशः 'किसरादि' दन्त्यमध्यप्रतीकमुपादाय 'तालव्यमध्यपाठो वृत्तौ' इत्युक्तवान् । भाग २, पृष्ठ २८८ ।

७. प्रत्ययस्य ञित्त्वे 'त्रायोदशायन्यिकः' इत्येवमादावादिवृद्धिः स्यात् । किमत्र तत्त्वमिति देवा ज्ञातुमर्हन्ति ।

८. अत्र ठकारवति पाठे प्रमाणं चिन्त्यम् । स्त्रियां 'कंसिकी' इति ङीबपि न प्राप्नोति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[५।१।३५ इत उत्तरम्] अध्यर्धपूर्वद्विगो[1] …'द्वित्रिपूर्वादण् च' इति प्रक्षिप्तम् ।[2]

[५।१।५७,५८]तदस्य परिमाणं संख्यायाः[संज्ञा]संघसूत्राध्ययनेषु योगविभागोऽत्र भाष्ये ।[3]

[५।१।६२] त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे ·· तोर्वति द्विः ।[4]

[५।१।६३,६४] तदर्हति छेदादिभ्यो नित्यम्—योगविभागोऽत्र भाष्ये कृतः ।[5]

[५।२।१०१] प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः—'वृत्ति' इति प्रक्षिप्तम् ।[6]

[५।३।५] एतदोऽन् —'अश्' इत्यपपाठः ।[7]

[५।३।७१,७२] अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः कस्य च दः—योगविभागो वृत्तौ ।[8]

[५।३।१०३] शाखादिभ्यो यः—'यत्' इति वृत्तौ, 'उगवा' [५।१।२] इति सूत्र भाष्ये च ।[9]

---

१. अत्रास्य पाठस्य प्रयोजनं चिन्त्यम् ।

२. शाणाद्वा [५।१।३५] सूत्रभाष्ये वार्तिकदर्शनात् ।

३. नात्र भाष्यकृता योगविभागो प्रदर्शितः । कैयटेन तु अत्रैव 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते खारशताद्यर्थम्' इति वार्तिकं विवृण्वता तदस्य परिमाणम्' इति योगविभागः कर्तव्यः' इत्युक्तम् । नागेशेनात्रोद्योते किमपि न लिखितम् । लघुशब्देन्दुशेखरे तु 'उत्तरेण योगविभागोऽत्र ध्वनितः' इत्युक्तम् ।

४. पाठोऽत्र भ्रष्ट इति कृत्वाऽभिप्रायो न ज्ञायते ।

५. आर्हादगोपुच्छपरिमाणाट्ठक्(५।१।१९) सूत्रभाष्ये योगविभाग उक्तः ।

६. अत्रैव भाष्ये वार्तिकदर्शनादिति भावः ।

७. 'अश्' पाठः काशिकावृत्तेः । अत्र शित्त्वादेव सर्वादेशः सुगमः ।

८. कथमिदमेकसूत्रमिति न व्यक्तीकृतं नागोजिभट्टेन । भाष्ये सहनिर्देश्य व्याख्यानादेवैकसूत्रत्वं तेनावगतं स्यात् ।

९. एतेन 'यः' पाठोऽसाधुरित्यभि.तं स्यात् । तथा च उगवादि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[५।३।११७] पर्श्वादियौधेयादिभ्यामणञौ—दिभ्योऽणञौ इति द्विः।[1]

[५।४।५०] कृभ्वस्तियोगे सम्पद्य कर्तरि च्विः—'अभूततद्भावे' प्रक्षिप्तम्।[2]

[५।४।१२०] सुप्रात ... सारिकुक्ष—'सारकुक्ष' इति द्विः।[3]

[५।४।१२१] नञ्सुदुर्भ्यो हलिसक्थ्योः—'शक्त्योः' इति पाठान्तरम्।[4]

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

[अथ षष्ठोऽध्यायः]

[६।१।३२] ह्वः सम्प्रसारणमभ्यस्तस्य च—योगविभागोऽत्र भाष्ये।[5]

[६।१।६१ सूत्रे] अपस्पृधेथा...राशीर्ताः—'अचि शीर्षः' इति पाठान्तरम्।[6]

[६।१।७३]दीर्घात् पदान्ताद्वा—इति योगविभागः प्रत्याहारा-ह्निके भाष्ये।[7]

[५।१।२] सूत्रभाष्यप्रदीपोद्योते 'शाखादिभ्यो यः पाठस्त्वसाम्प्रदायिकः' इत्युक्तं नागेशेन। १. द्विःप्रकारकोऽपि पाठः साध्विति भावः।

२. अत्रैव भाष्ये वार्तिकदर्शनात्। ३. उभावपि पाठौ साधू इति भावः।

४. 'नञ्सुदुर्भ्यो०' पाठोऽयं कुत्रत्य इति न व्यक्तीकृतम्। अत्र 'हलिशक्त्यो-रिति केचित् पठन्ति' इतिवृत्तिवचनमनुसन्धेयम्।

५. अत्रैव सूत्रभाष्ये योगविभाग उक्तः।

६. अत्र पाठो भ्रष्टः। अत्रैवं पाठः शोधनीयः—'राशीताः—राशीर्तः इति पाठान्तरम्। इतोऽग्रे 'अचिशीर्षः' इति प्रक्षिप्तम् इति पाठो द्रष्टव्यः। अपस्पृधेथा...सूत्रोपादानं किमर्थमिति न ज्ञायते। 'अचि शीर्षः' इति कस्य पाठान्तर-मिति न ज्ञायते। वस्तुतस्तु 'ये च तद्धिते[६।१।६०] सूत्रभाष्ये वार्तिकमिदम्।'

७. ऐऔच् सूत्रभाष्य इति शेषः। "यत्तर्हि योगविभागं करोति। इतरथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[६।१।९६ इत्यनन्तरम्] नित्यमाम्रेडिते डाचि – इति च ।[1]

[६।१।८६] एत्येधत्यूठ्सु ।[2]

[६।१।१११] नान्तःपादम्–'प्रकृत्यान्तःपादम्' इति पाठान्तरम् ।[3]

[६।१।१२०,१२१] इन्द्रे प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।[4]

[६।१।१३१ इत्यनन्तरम्] 'अडभ्यासव्यवायेऽपि' इति प्रक्षिप्तम् ।[5]

[६।१।१३२,१३३] सम्परिभ्यां भूषणसमवाययोः करोतौ—अयं पाठोऽत उत् सार्वधातुके [६।४।११०] सूत्रभाष्ये स्पष्टः ।[6] वृत्तौ तु सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे समवाये च' इति सूत्रपाठः । सम्पर्युपेभ्यः—इति त्वपपाठः ।

[६।१।१४२,१४३] विष्किरः शकुनौ वा —'शकुनिर्विकरो वा' इत्यपपाठः ।[7] इत उत्तरम्—'आश्चर्यमनित्ये' इति पाठ्यम् ।[8]

हि 'दीर्घात् पदान्ताद्वा' इत्येव ब्रूयात्" इति भाष्यवचनम् । 'करोति ब्रूयात्' क्रिययोः सूत्रकारएव कर्त्ता । अतोऽनेन भाष्येण सूत्रकारस्यैकं सूत्रमिति न वक्तुं शक्यते ।

१. कोऽत्राभिप्राय इति न ज्ञायते । चकारेण कस्य समुच्चय इत्यपि न व्यज्यते । नाम्रेडितस्य [६।१।९९] सूत्रभाष्ये वार्तिकदर्शनात् प्रक्षिप्तम् इति वक्तव्यम् ।

२. अत्र पाठव्यत्यासो जातः । अयं पूर्वं पठनीयः । अस्योपन्यासे किं प्रयोजनमिति न व्यक्तीकृतम् । छ्वोःशूडनुनासिके च [६।४।१९] सूत्रभाष्यानुसारमिह 'एत्येधत्यूट्सु' इत्येव पाठः ।

३. इकोऽसवर्णे० [६।१।१२३] सूत्रभाष्ये 'प्रकृत्येतदनुकृष्यते' इति वचनात् । ४. भाष्यानुसारम् 'इन्द्रे च नित्यम्' इत्यत्रापि नित्यपाठ इति व्यज्यते । उत्तरसूत्रे पुनर्नित्यग्रहणस्य च प्रयोजनान्तरमुक्तम् ।

५. अत्रैव भाष्ये वार्तिकदर्शनात् । ६. इह अर्थतोऽनुवादो भाष्यकारेण कृतः, न तु सूत्रपाठ उद्धृतः । ७. अत्रैव वार्तिकदर्शनात् ।

८. भाष्ये पूर्वापरव्याख्यानदर्शनादिति शेषः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[६।१।१५० इत्यनन्तरम्] कारस्करो वृक्षः—इति प्रक्षिप्तम् ।[1]

[६।१।१५८,१५९] तद्धितस्य कितः—योगविभागोऽत्र भाष्ये ।[2]

[६।२।५२] अनिगन्तोऽञ्चतावप्रत्यये—'तौ व' इति वृत्तौ ।[3]

[६।२।९२,९३] अन्तः सर्वं गुणकार्त्स्न्ये—योगविभागोऽत्र वृत्तौ ।[4]

[६।२।१०७] उदाराश्वेषुषु क्षेपे—योगविभागोऽत्र वृत्तौ ।[5]

[६।२।१०९] निष्ठोपसर्गपूर्वावन्यतरस्याम्—'पूर्वमन्य' इति-पाठान्तरम् ।[6]

[६।२।१४२,१४३] अन्तः थाथ—इत्यत्र योगविभागो वृत्तौ ।[7]

[६।३।६] आत्मनश्च—'पूरणे' इति वार्तिकम् ।[8] आत्मनश्च

---

१. पारस्करादिगणे (६।१।१५१) 'कारस्करो वृक्षः' इति गणसूत्रस्य दर्शनात् ।

२. अत्र 'गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ्' (४।१।९८) सूत्रस्य भाष्यं प्रमाणम् ।

३. नागेशेन 'तावप्रत्यये' इति भाष्यानुगुणः पाठ इति कुतो विज्ञायीति न ज्ञायते । अस्यैव सूत्रस्य भाष्ये 'चोरनिगन्तोऽञ्चतौ व प्रत्यये' इति वार्तिके तद्व्याख्याने चोभयविधः पाठ उपलभ्यते । अत्र कीलहार्नसंस्करणेऽन्ते पाठभेदौ द्रष्टव्यौ । ४. अनयोरेकसूत्रत्वे प्रमाणं नोपन्यस्तं नागेशेन । अत्रानयोः सह-निर्देशादेकसूत्रमिति भ्रान्तो नागेश इति सम्भाव्यते ।

५. अत्रैव सूत्रे 'उदराश्वेषुषु क्षेपे इत्येतस्मान्नञ्सुभ्यामित्येतद् विप्रतिषेधेन इति पाठदर्शनादेकसूत्रत्वमनुमितं स्यान्नागेशेन । अत्रस्थः प्रदीपोद्योतोऽपि द्रष्टव्यः । ६. '०पसर्गपूर्वावन्य०' इति भाष्यानुगुणः पाठ इति कुतो विज्ञायि नागेशेनेति नोक्तम् ।

७. भाष्येऽत्र 'अन्तः' इत्येव सूत्रं व्याख्यायते । कदाचिद् 'ग्रहवृदृनि-श्चिगमश्च' (३।३।५८) सूत्रभाष्ये उभयोः सहपाठाद् भ्रान्तोऽत्र नागोजिभट्टः ।

८. 'आज्ञायिनि च' (६।३।५)इति सूत्रभाष्यप्रदीपोद्योते कृत्स्नस्यैव वार्तिकत्वं ब्रूते नागेशः । तदेवं स्ववचोविरोधादेकतरं चिन्त्यम् । अयं भाष्यसम्मतः सूत्रपाठः कदाचिदुद्योतात् पूर्वं निर्मितः स्यात् । अपि च 'वैयाकरणाख्यायाम्'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरणे' सर्वमेव वार्त्तिकमिति हरदत्तः ।[१]

[६।३।३९] स्वाङ्गाच्चेतः—'अमानिनि' इति प्रक्षिप्तम् ।[२]

[६।३।९२.९१] समः समिरञ्चतावप्रत्यये[३] विष्वग्देवयोश्च टेरद्रिः[४]—'विष्वग्देवयोश्च टेरञ्चतावप्रत्यये,[५] समः समि' इति वृत्तौ पाठः ।

[६।४।१००][६] घसिभसोर्हलि—'हलि च' इत्यपपाठः ।[७]

[६।४।५६] ल्यपि लघुपूर्वात्—पूर्वस्य इति पाठान्तरम्[८]

[६।४।१३२] वाह ऊट् ।[९]

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥

(६।३।७) इत्यत्र 'परस्य च' इति चेन परशब्दप्रतिद्वन्द्वितया आत्मशब्दस्यैव ग्रहणम् । तदुभयं चैकसूत्रमित्याहुः' इत्युक्तम् ।

१. अस्य सूत्रस्यैव वृत्तिव्याख्यायां पदमञ्जर्यामाह हरदत्तः ।

२. अत्रैव सूत्रभाष्ये वार्तिकदर्शनात् ।

३. 'अञ्चतावप्रत्यये' इति भाष्यानुकूलः पाठ इति कुतो व्यज्ञायि भट्टेनेति न ज्ञायते । एतत्सूत्रभाष्यप्रदीपोद्योते तु नागेशेन 'अञ्चतौ वप्रत्यये' इत्येव पाठः स्वीकृतः । तदाह—"अतएव सूत्रे 'वप्रयत्ये' इति चरितार्थम्" इति । अन्यथा 'अप्रत्यये' इति ब्रूयात् । अत्र ६।२।५२ सूत्रपाठटिप्पण्यपि द्रष्टव्या ।

४. भाष्ये 'समः समि नहि वृति ······क्वौ' इत्युक्त्वा 'किमर्थमञ्चति नह्यादिषु क्विब्ग्रहणं क्रियते' इत्यादिपाठेनायं सूत्रपाठ ऊहितो भट्टेन ।

५. वृत्तौ 'अञ्चतौ वप्रत्यये' इत्येव पाठः, न तु नागेशभट्टनिर्दिष्टः ।

६. अत्र लेखकप्रमादात् पौर्वापरव्यत्यासः पाठस्याजनि ।

७. भाष्ये चकाररहित एव पाठः । अत्राह कैयटः प्रदीपे—'अन्यत्रापीति-वचनाद् वार्तिककारश्चकारं न पपाठेति लक्ष्यते ।'

८. अत्र नागेशेनोभौ पाठौ स्वीकृतौ । परन्तु एतत्सूत्रभाष्यात् 'ल्यपि लघुपूर्वस्य' इत्येव मूलसूत्रपाठ इति ज्ञायते । 'ल्यपि लघुपूर्वात्' पाठस्य तु मुक्त-कण्ठेन वक्तव्यत्वमुक्तम् ।

९. अत्रैव सूत्रभाष्ये 'ऊड् आदि कस्मान्न भवति ? आदितष्टिद् भवति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[अथ सप्तमोऽध्यायः]

[७।२।२३] घुषिरविशब्दने—घु[षे] रिति द्विः।[१]

[७।२।३४] ग्रसितस्कभित—इति सूत्रे 'क्षरिति' इत्युत्तरं 'क्षमिति' इति केचित् पठन्ति।[२]

[७।२।४८] तीषसहलुभ……'तीषु' इत्यपपाठः।[३]

[७।२।६०] तासि च क्लृपः—'क्लृपः' इति [अपपाठः]।[४]

[७।२।७०,७१] ईशस्से ईडजनो ध्वे च[५]—'ध्वें च' इति वृत्तौ पाठः।[५]

[७।२।८०] अतो येयः—'अतो या इयः' इति पाठो मुक् [७।२।८२] सूत्रभाष्ये।[६]

इत्यादिः प्राप्नोति इतिवचनात् टित्वमेव भाष्यसम्मतमिति स्पष्टम्। 'च्छ्वोः शूड०' [६।४।१९] सूत्रभाष्यमप्यत्रैवानुकूलम्।

१. द्विविधोऽपि पाठः प्रामाणिक इति भावः। 'घुषेर्विभाषा' इति अत्रैव सूत्रभाष्ये वचनात् तादृशोऽपि पाठः सम्भाव्यते।

२. अत्र 'क्षमितिरहितः' 'क्षरितिवमिति' इत्येव पाठो भाष्यानुगुण इति कथं निरधारि नागोजिनेति न ज्ञायते।

३. अत्रैतत्सूत्रस्य काशिकावृत्तिर्भाष्यप्रदीपं चावलोकनीयम्।

४. 'क्लृपः' इति पाठो भाष्यकाराभिमत इति कथं विज्ञायि नागेशेनेति नोक्तम्। अपि च 'क्लृप इति' इत्यस्य को भाव इति न ज्ञायते। अत्र कदाचित् 'अपपाठः' पद नष्टं स्यात्। द्रष्टव्यः—कृपो रो लः(८।२।१८)सूत्रविषयको लेखः।

५. कथमिमौ पाठौ भाष्यसम्मताविति नोक्तं नागेशेन। भाष्यप्रदीपोद्योते तु 'अत्र इडजनोः स्ध्वे च' इति पाठो भाष्य इत्युक्तम्।

६. आने मुक् (७।२।८२) इतिसूत्रभाष्ये 'अतो येय इत्यत्र अकारग्रहणं पञ्चमीनिर्दिष्टम्' इत्यस्य स्थाने 'अतो या इय इत्यत्र अकार……' इत्यपि पाठान्तरमुपलभ्यते। तदाश्रित्योक्तवचनं नागेशस्येति ज्ञेयम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[७।३।१०] उत्तरपदस्य—अत्र 'च' सहितः पाठो वृत्तौ ।[1]

[७।३।७५] ष्ठिवुक्लमुचमां शिति—'क्लम्याचमां शिति' इत्यपपाठः ।[2]

[७।३।७७] इषगमियमां छः —'इषुगमि' इत्यपपाठः ।[3]

[७।३।११७,११८,११९] इदुद्भ्यामौदच्च घेः—अत्र सूत्रत्रययोगविभागो भाष्ये ।[4]

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

[अथाष्टमोऽध्यायः]

[८।१।६७] पूजनात् पूजितमनुदात्तम्—अत्र 'काष्ठादिभ्यः' इति प्रक्षिप्तम् ।[5]

[८।१।७४] नामन्त्रिते समानाधिकरणे, सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने—वृत्तौ तु 'सामान्यवचनम्' इत्यविधाय[6] उत्तरसूत्रे 'बहुवचनम्' इति प्रक्षिप्तम् ।[7]

[८।२।१८] कृपो रो लः—'क्लप' इत्यपपाठः ।[8]

---

१. मुद्रितायां काशिकावृत्तौ चकाररहित एव पाठ उपलभ्यते ।

२. भाष्ये नागोजिना निर्दिष्ट एव पाठ उपलभ्यते । एतत्सूत्रभाष्यप्रदीपस्तदुद्योतश्च द्रष्टव्यः ।

३. अत्रैतत्सूत्रभाष्यप्रदीपस्तदुद्योतश्चावलोकनीयः ।

४. अयं भावः—'ङेराम्नद्याम्नीभ्य इदुद्भ्याम्' इत्येकयोग आसीत् । तस्य भाष्यकृता योगविभागः कृतः । तेन 'ङेराम्नद्यांनीभ्यः, इदुद्भ्याम्, औदच्च घेः' इति सूत्रत्रयं निष्पन्नम् । 'औदच्च घेः' इत्यत्र योगविभागो भाष्यकृता निराकृतः ।

५. इह भाष्ये वार्तिकदर्शनात् ।

६. अत्र 'सामान्यवचनमिति पूर्वसूत्रे विधाय' इति युक्तः पाठो द्रष्टव्यः ।

७. 'बहुवचनमिति वक्ष्यामि' इतिभाष्ये दर्शनात् ।

८. केनायमपपाठः स्वीकृत इति न ज्ञायते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[८।३।२७,२८,२९,३०,३१,३२] '[नपरे नः], ङस्सि धुट्, नश्च, शि तुक्, ङ्णोः कुक्टुक् शरि, ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्'[इति क्रमः]।[1]

[८।३।९८ इत्यनन्तरम्] 'एति संज्ञायामगात्' इति 'नक्षत्राद्वा' इति च गणसूत्रे प्रक्षिप्ते।[2]

[८।३।११८] सदेः परस्य लिटि—'स्वञ्ज्योः' इति प्रक्षिप्तम्।[3]

[८।४।१९] अनितेरन्तः—योगविभागो भाष्यकृतः।[4]

[८।४।२८] 'उपसर्गाद् बहुलम्' इति भाष्यकृता भङ्क्तः।[5]

[८।४।५१,५२,५३,५४,५५,५६,५७,५८,५९,६०,६१,६२, ६३ पाठक्रमः]—

[भाष्यपाठः]	[वृत्तिपाठः][6]
[५१] दीर्घादाचार्याणाम्।	५१. दीर्घादाचार्याणाम्।
[५२] अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।	५२. झलां जश् झशि।
[५३] वा पदान्तस्य।	५३. अभ्यासे चर्च।
[५४] तोर्लि।	५४. खरि च।
[५५] उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य।	५५. वाऽवमाने।
[५६] झयो होऽन्यतरस्याम्।	५६. अणोऽप्रगृह्यस्याननुनासिकः।

---

१. अत्र भाष्येऽनेनैव क्रमेण सूत्राणामुपादानात्।

२. सुषामादिगणे (८।३।९८) अनयोः सूत्रयोः पाठदर्शनात्।

३. अत्रैव भाष्ये वार्तिकदर्शनात्।

४. नैवात्र भाष्ये प्रत्यक्षं योगविभागो दर्शितः।

५. भाष्ये तु 'उपसर्गादनोत्परः' इति सूत्रपाठमुपादाय 'अनोत्परः' इत्यंशे तत्पुरुषे बहुव्रीहौ चोभयथाऽपि दोषं प्रदर्श्य उक्तम्—'एवं तर्हि उपसर्गाद् बहुलमिति वक्तव्यम्' इति। ८।४।२८।

६. अत्र वृत्तिपाठस्तु साक्षात्क्रमभेदपरिज्ञानायास्माभिरुद्धृतः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[५७] शश्छोऽटि ।	५७. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ।
[५८] झलां जश् झशि ।	५८. वा पदान्तस्य ।
[५९] अभ्यासे चर्च ।	५९. तोर्लि ।
[६०] खरि च ।	६०. उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य
[६१] वाऽवसाने ।	६१. झयो होऽन्यतरस्याम् ।
[६२] अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ।	६२. शश्छोऽटि ।
[६३] हलो यमां यमि लोपः ।	६३. हलो यमां यमि लोपः ।

दीर्घादाचार्याणामित्यारभ्यान्यथा पाठो वृत्तौ ।'

॥ इत्यष्टमोऽध्यायः ॥

॥ इति नागोजिभट्टपर्यालोचितभाष्यसम्मताष्टाध्यायीपाठः समाप्तः ॥

त्रीणि सूत्रसहस्राणि नव सूत्रशतानि च ।

चतुःषष्टि च (३९६४) सूत्राणि कृतवान् पाणिनिः स्वयम् ॥

इतोऽग्रे हस्तलेखेऽयं पाठ उपलभ्यते—

संवत् १८८५ चैत्रासिते अष्टम्यां तिथौ त्रिवि (?)

—०—

अष्टाध्यायी सम्बन्धी एक विशेष हस्तलेख

वाराणसेयविश्वविद्यालयस्य सरस्वतीभवने ३५७ संख्यायां निर्दिष्ट एकः सम्पूर्णाष्टाध्याय्या हस्तलेखो वर्तते । अस्मिन् हस्तलेखे ९३ पत्राणि सन्ति, बहुत्र नागोजिभट्टसम्मतः सूत्रपाठो

---

१. भाष्येऽस्मिन् प्रकरणे 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य, शश्छोऽटि, अभ्यासे चर्च, झरो झरि सवर्णे' इत्येवं क्रमेण व्याख्यानात् नागोजिभट्टेनायं भाष्यसूत्रक्रम ऊहितः । उक्तं च तेनैव प्रदीपोद्योते (८।४।६१) 'भाष्येऽभ्यासे चर्च इत्यस्य परत्र पाठेन चर्त्वस्यैव परत्वेन तं प्रत्यस्यासिद्धत्वाभावादित्याहुः । वृत्त्युक्तः पाठस्तु चिन्त्य एव ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्यते। आदौ च प्रत्याहारसूत्राणि 'माहेश्वराणि' इति पाठो न दृश्यते। ग्रन्थान्ते च सूत्रगणनैवं लिखिता उपलभ्यते—

भू१ पत्रि५ क्रिमि३, रष्ट८ दर्शन६ यमैः२,
क्ष्मा१ वह्नि३ षड्भिः६, शरानेह३ षड्भि ६ रिपुः५,
स्मरायुध५ शरै५ पत्रि५, त्रि३ गोत्रै७ रपि दिङ्नाथा६,
ग्नि३ युगै४ र्गजा८, ग ६ दहनैः३ रामैः३,
पदश्च क्रमादध्याया नव९ नीभ ७ नन्द९ दहनैः३,
सूत्राणि चाजीगणद् पुरुषोत्तमगिरिणा स्वपठनार्थं शुभम्।

अत्र अङ्कानां वामतो गतिरिति न्यायेन प्रत्यध्यायं त्रिभिस्त्रिभिः पदैः सूत्रसंख्या निर्दशिता। तथाहि—

प्रथमाध्याये ३५१	पञ्चमाध्याये ५५५
द्वितीयाध्याये २९८	षष्ठाध्याये ६७३
तृतीयाध्याये ६३१	सप्तमाध्याये ८४३
चतुर्थाध्याये ५६३	अष्टमाध्याये ३९७।

इयं सूत्रगणना काशिकावृत्त्यनुसारं वर्तते। तत्र १-२-३-५ अध्यायानां सूत्रगणना शुद्धा वर्तते। ४-६-७-८ अध्यायानां सूत्रगणनायां संख्यापदानां व्यत्यासात् सूत्रसंख्या अशुद्धा समपद्यत। अत्रैवं शुद्धा संख्या ज्ञेया—

अध्याय	अशुद्धा संख्या	शुद्धा संख्या	त्रयोऽप्यङ्का अस्थाने
४	५६३	६३५	,, ,,
६	६७३	७३६	,, ,,
७	८४३	४३८	,, ,,
८	३९७	३७९	द्वितीयतृतीयावस्थाने

अन्ते या कात्स्न्र्येन संख्या निर्दशिता, सा ३९७९ सम्पद्यते। प्रत्यध्यायं या संख्या निर्दशिता तत्राशुद्धी शोधयित्वा योगः ३५१+२९८+६३१+६३५+५५५+७३६+४३८+३७९=) ४०१० संजायते। तदेवं प्रत्यध्यायसंख्यायोगोऽन्ते लिखितश्च सर्वयोगः परस्परं विरुध्यतः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय परिशिष्ट

अनन्तराम-पर्यालोचित भाष्यसम्मत सूत्रपाठ

इस ग्रन्थ के हस्तलेख की प्रतिलिपि भी श्री ओम्प्रकाशजी द्वारा ही हमें प्राप्त हुई थी। यह ग्रन्थ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती-भवन में है। इसकी संख्या २०३६।८६ है। यह हस्तलेख एकपत्रात्मक अर्थात दो पृष्ठों का है। इसमें कहीं-कहीं पर चिह्न देकर लेखक ने टिप्पणियां दी हैं। इस ग्रन्थ का लेखनकाल अज्ञात है।

इस लघु संकेतात्मक संग्रह में नागोजिभट्ट पर्यालोचित पाठ से कुछ भिन्नता वा वैशिष्ट्य है। यह दोनों पाठों की तुलना से व्यक्त होता है।

अनन्तराम-पर्यालोचित-भाष्यसम्मतः सूत्रपाठः

श्रीपाणिनिकात्यायनपतञ्जलिभ्यो नमः। ओम्।

उञः ऊँ [1][१।१।१७]। समो गम्यृच्छिभ्याम् [१।३।२९]। प्रादय उपसर्गा॒ क्रियायोगे [१।४।५८] ॥१॥

विभाषापपरि० [२।१।११] ॥२॥

कृत्याः [३।१।९५]। आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च [३।१।१२६]।[2] प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः [३।१।११८]। अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च [३।३।१२२] ॥३॥

टिड्ढाण—क्वरपः [४।१।१५]। ०कुसिदाना० [४।१।३७]।

---

१. कोष्ठान्तर्गतः पाठोऽस्मदीयः। २. अत्र सूत्रनिर्देशे पौर्वापर्यमभूत्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'वृद्धस्य च पूजायाम्, यूनश्च कुत्सायाम्' इति द्वे वार्तिके [४।१।१६५ सूत्रानन्तरम्]। लक्षारोचनाट्ठक् [४।२।२]। कलेर्ढक् इति वार्तिकम् [४।२।७ सूत्रानन्तरम्]। सास्मिन् पौर्णमासीति [४।२।२०]। ब्राह्मण—माद्यन् [४।२।४१]। ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् [४।२।४२]। संज्ञायां कुलाला० [४।३।११७,११८ एकं सूत्रम्]। कौपिञ्जलहस्तिपदादण्, इति वार्तिकम्+[४।३।१३१ सूत्रानन्तरम्]। +आथर्वणिकस्येकलोपश्च। विभाषा विवधात् [४।४।१७]। सगर्भ—द्यन् [४।४।११४]। वेशोयशआदेर्भगाद्यल्खौ [४।४।१३१,१३२ एकं सूत्रम्]॥४॥

द्वित्रिपूर्वादण् च इति वार्तिकम् [५।१।३५ सूत्रानन्तरम्]। तदस्मिन् वृ—पदा दीयते[1] [५।१।४६]। ⚘ तदस्य परिमाणं संख्यायाः संज्ञासघसू० [५।१।५६,५७ एकं सूत्रम्]। × तदर्हति छेदादि० [५।१।६२ ६३ एकं सूत्रम्]। दण्डादिभ्यः [५।१।६४]। तस्य[2] दक्षि० [५।१। ६४]। प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्यो[3] णः [५।२।१०१]। कृभ्वस्तियोगे संप० [५।४।५०]॥५॥

ग्रन्थकारकृताष्टिप्पण्यः—

+इदमपि वार्तिकमित्याहुः।[4] तन्न कैयटविरोधात्। तेन हि कौपिञ्जलेत्यस्यापाणिनीयत्वादत्र सूत्रेऽण उपसंख्यानमित्युक्तम्।

⚘ योगविभागस्तु अन्येभ्योऽपि[5] इति वार्तिकसंग्रहायार्वाचीनैः कृतः, न तु भाष्यारूढः। × अत्र योगविभागः 'आर्हादगोपुच्छ' [५।१।१९] इति सूत्रभाष्ये स्पष्टः।

---

१. किमत्र प्रतिपाद्यमिष्यत इति न ज्ञायते।

२. तस्य च इति काशिकीयः पाठः, चकारोऽत्र नेष्यते।

३. अत्रैव 'वृत्तेश्च' इति वार्तिकदर्शनात् पाठोऽयं न भाष्यारूढः। द्र०—नागोजिपर्यालोचितः पाठः। यद्वात्र 'वृत्ति' पदं लेखकप्रमादात् पठितं स्यात्।

४. नागेशादयः। यद्यत्र नागेशस्यैव संकेतः स्यात् तर्ह्ययं ततोऽर्वाक्कालिक इति सुतरां सिद्धः।

५. एतत्सूत्रभाष्ये पठितस्यास्य संग्रहायेति भावः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ह्वः सम्प्रसारणमभ्य० [६।१।३२]। अपस्पृ—शीर्तः [६।१।३५]। अचि शीर्षः इति वार्तिकम् [६।१।६० सूत्रानन्तरम्]। दीर्घात् पदान्ताद्वा [६।१।७३]। नान्तःपादम्, प्रकृत्यान्तःपादम् इति पाठान्तरम् [६।१।१११]। इन्द्रे [६।१।१२०]। प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् [६।१।१२१]। अडभ्यासव्यवायेऽपि इति वार्तिकम् [६।१।१३१ सूत्रानन्तरम्]। संपरिभ्यां करो० [६।१।१३२]। विष्किरः शकुनौ वा [६।१।१४५]। आश्चर्यमनित्ये [1][६।१।१४२]। कारस्करो वक्षः इति पारस्करादिस्थम् [2][६।१।१५० सूत्रानन्तरम्]। तद्धितस्य कितः[६।१।१५८,१५९ एकं सूत्रम्]। उदराश्वेषुषु क्षेपे [६।२।१०७]। आत्मनश्च [६।३।६]। स्वाङ्गाच्चेतः [६।३।३९]। प्रकृत्याशिषि [६।३।८२]। ग्रन्थान्तेऽधिके[3] च [६।३।७९]। : घसिभसोर्हलि [६।४।१००]। ल्यपि लघुपूर्वात्, पूर्वस्य इति पाठान्तरम् [६।४ ५६ ॥६॥

ष्ठिवुक्लमुचमां शिति]७।३।७५]। इदुद्भ्यामौदच्च घेः [७।३। ११७,११८ एकं सूत्रम्] ॥७॥

पूजनात् पूजितमनुदात्तम् [८।१।६७]। नामन्त्रिते समानाधिकरणे, सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने [८।१।७३,७४]। कृपो रो लः[८।२।१८]। एति संज्ञायामगात्, नक्षत्राद्वा इति द्वे गणसूत्रे[4] [८।३।९९।१००]। सदेः परस्य लिटि [८।३।११८]। प्रनि-

---

ग्रन्थकारकृताष्टिप्पण्यः—

: 'हलि च' इति पाणिनीयः पाठ इत्यत्रैव सूत्रे कैयटः।

---

१. अत्र क्रमभेदनिदर्शने तात्पर्यम्। द्र०—नागोजिभट्टपर्यालोचितः सूत्रपाठः। २. पारस्करप्रभृतीनि [६।१।१५१] गणान्तर्गते एते सूत्रे।

३. अन्यत्र 'ग्रन्थान्ताधिके च' पाठः।

४. सुषामादि [८।३।९८] गणे पठिते सूत्रे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रन्तः—[1]'कार्ष्यख०' [८।४।५]। अनितेरन्तः [८।४।१९]। उपसर्गादनोत्परः [८।४।२७]। दीर्घादा०, अनुस्वा०, वा पदान्तस्य, तोर्लि, उदस्था०, झयो०, शश्छो०, झलां जश्झ०, अभ्यासे, वावसाने, अणोऽप्रगृह्यस्यानु०, हलो यमां यमि लोपः [८।४।५१–६३ सूत्राणां क्रमभेदः]। अ अ [८।४।६७] ॥८॥

॥ इत्यष्टाध्यायीसूत्राणि भाष्यसम्मतानि
अनन्तरामपर्यालोचितानि ॥

महादेवसिंह आर्य
"लीलासदन" ४.
नगरी हॉस्पिटल के पास,
अहमदाबाद-३८०००६.

---

१. किमस्य प्रयोजनमिति न ज्ञायते। कदाचित् 'कार्श्यं' पाठं निराकर्तुमयं प्रयत्नः स्यात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थ परिशिष्ट

अष्टाध्यायी के पाठान्तर

अष्टाध्यायी के सूत्रपाठ में भी प्रवचनभेद, व्याख्याकारभेद, देशकालभेद, तथा उच्चारण-दोष से दो सौ सोलह सूत्रों में पाठभेद उपलब्ध होता है। हमने अपने 'संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास' ग्रंथ के लिये आवश्यक सामग्री के संकलनार्थ व्याकरण तथा अन्य विषयों के शतशः ग्रन्थों का जो पारायण किया था, उस समय हमने पाणिनीय सूत्रपाठ के पाठान्तर भी संगृहीत किये थे। कालान्तर में यही कार्य श्री पं० रामशङ्करभट्टाचार्य विद्यावारिधि (काशी) ने भी किया। जब वे अपने संकलन को प्रकाशित करने लगे, तब मैंने अपना सम्पूर्ण संग्रह उन्हें दे दिया। पं० रामशंकरभट्टाचार्य ने 'काशी राजकीय संस्कृत महाविद्यालय' (अब वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय) की **'सारस्वती सुषमा'** नाम्नी त्रैमासिक पत्रिका वर्ष ७ अङ्क १ (चैत्र सं० २००९) में **'पाणिनीय-सूत्रपाठान्तर-संकलनम्'** के नाम से इन्हें छपवाया था। वि०सं० २०२३ में उन्होंने **'अष्टाध्यायी के पाठान्तरों का विवेचन'** शीर्षक से 'पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ ३६०—३९६ तक छपवाया। लेख के आदि में उन्होंने पाठान्तर सम्बन्धी विस्तृत विवेचन भी प्रस्तुत किया है। हमारा पाठान्तर-संग्रह कार्य बराबर चलता रहा। अतः हम पूर्व-सामग्री के साथ नये पाठान्तरों को संकलित करके नीचे प्रकाशित कर रहे हैं—

जिन ग्रन्थों से पाठान्तरों का संकलन किया गया है, उनके नामों का संक्षेप इस प्रकार है—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्त० पर्या० भा० पाठ—(अनन्तराम पर्यालोचित भाष्य-सम्मत सूत्रपाठ)।

अष्टा० भाष्य–अष्टाध्यायी भाष्य (स्वामी दयानन्द सरस्वती)।

उद्योत—महाभाष्य प्रदीपोद्योत (नागेश भट्ट)।

का०—काशिका (बालशास्त्री संस्क० काशी)।

क्षीरत०–क्षीरतरङ्गिणी (क्षीरस्वामी, रा० ला० क० ट्रस्ट सं०)

गण० म०—गणरत्नमहोदधि (वर्धमान, इटावा संस्करण)

टीकासर्वस्व—अमरटीका सर्वस्व (सर्वानन्द)।

तत्त्व०—तत्त्वबोधिनी (शिवरामेन्द्र सरस्वती, सि०कौ० टीका)

दीपिका—व्याकरण-दीपिका (अष्टाध्यायीवृत्ति—ओरम्भट्ट)।

धातुवृ०—धातुवृत्ति (सायण, प्राच्यभारती प्रकाशन काशी)।

ना० पर्या० भा० पाठ—(नागोजिभट्ट-पर्यालोचित भाष्यसम्मत अष्टाध्यायीपाठ)।

न्यास—काशिका-विवरण न्यासपञ्जिका (जिनेन्द्रबुद्धि, काशिका-व्याख्या, राजशाही बंगाल संस्क०)।

पद०—पदमञ्जरी (हरदत्त, काशिका-टीका)।

परि०—परिभाषा।

प्र० कौ—प्रक्रियाकौमुदी (रामचन्द्राचार्य)

प्रत्या०—प्रत्याख्यानसंग्रह (नागोजिभट्ट)।

प्र० स०—प्रक्रियासर्वस्व (नारायणभट्ट)।

प्रदीप—महाभाष्य प्रदीप (कैयट)।

प्रसाद—प्रक्रियाकौमुदी प्रसाद टीका (विठ्ठल)।

प्रौढ०—प्रौढमनोरमा (भट्टोजि दीक्षित)।

बाल०—बालमनोरमा।

भाष्य—महाभाष्य (पतञ्जलि)।

वामनीय—वामनीय लिङ्गानुशासन (प्राच्य विद्याप्रतिष्ठान, अजमेर सं०) व्याख्यासुधा।

आम्नाय—ग्रन्थालय
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शब्दकौ०—शब्दकौस्तुभ (भट्टोजि दीक्षित)।
शब्देन्दु—शब्देन्दुशेखर 'लघु' तथा 'बृहत्' (नागेशभट्ट)।
सि० कौ०—सिद्धान्तकौमुदी(भट्टोजि दीक्षित—मोतीलाल बनारसी दास संस्क०)।
सीर०—सीरदेव परिभाषावृत्ति ।
सुबोधिनी—सि० कौ० टीका (स्वरवैदिक प्रक्रिया)।
स्वरसि०—स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका (श्रीनिवास यज्वा)।

विशेष—(१) क्षीरतरङ्गिणी के नाम से अष्टाध्यायीसूत्रपाठ के जो पाठान्तर यहां उद्धृत किये हैं, उनके सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमें से कुछ अष्टाध्यायीसूत्रपाठ के पाठान्तर न होवें, और वे कातन्त्र चान्द्र एवं सरस्वतीकण्ठाभरण के पाठ हों। हमने इनका यहां निर्देश इसलिए किया है कि क्षीरस्वामी ने पाणिनीय धातुपाठ की व्याख्या की है, और उसी के सूत्र प्रायः उद्धृत किये हैं।

(२) यहां प्रतिसूत्र जो सूत्रसंख्या दो है, वह रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अष्टाध्यायो (संस्क० ७, संवत् २०२६) के अनुसार है। अन्य संस्करणों में काशिकानुसारी पाठ होने से सूत्रसंख्या में कहीं-कहीं अन्तर मिलेगा।

(३) उद्ध्रियमाण पाठान्तर अंश का स्पष्ट ज्ञान कराने के लिए उसे मोटे अक्षरों में छापा है।

(४) योगविभागकृत समस्त पाठभेद **'अष्टाध्यायी के लघु और वृद्धपाठ'** संज्ञक परिशिष्ट में देखें।

प्रथमाध्याय

१।१।४९—स्थानेऽन्तरतमः ।
स्थानेऽन्तरतमे (भाष्य)।
१।२।८—रुदविदमुषग्रहि ····।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुदविदमुषगृहि (बाल०) ।

१।२।५२—विशेषणानां चाजातेः ।
च+अजातेः, च+आजातेः (भाष्य) ।

१।३।२६—समो गम्यृच्छिभ्याम् ।
समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः[1] (का० क्षीरत० १।७१०; ६।१६, ११७) ।

१।३।५१—अवाद् ग्रः ।
अवाद् गिरः (न्यास) ।

१।३।७६—अनुपसर्गाज्ज्ञः ।
अनुपसर्गाद् ज्ञः (शब्दकौ० १।१।८) ।

१।४।१,२—आकडारादेका संज्ञा; विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।
प्राक्कडारात् परं कार्यम् (भाष्य) ।

१।४।४३—दिवः कर्म च ।
दिवः कर्म (ना० पर्या० भा०पाठ) ।

१।४।५५—तत्प्रयोजको हेतुश्च ।
तत्प्रयोजको हेतुः (ना० पर्या० भा०पाठ) ।

१।४।५६—गतिश्च ।
गतिः (ना० पर्या० भा०पाठ) ।

१।४।११०—विरामोऽवसानम् ।
अभावोऽवसानम् (प्रदीप) ।

द्वितीयाध्याय

२।१।२२—द्विगुश्च ।
द्विगुः (ना० पर्या० भा०पाठ) ।

---

१. काशिका में दृष्ट वृद्धपाठ काशिकाकार ने वार्तिकों का प्रक्षेप करके ऊहित किया है, ऐसा कैयट आदि वैयाकरणों का आक्षेप है। इसका हमने सप्रमाण खण्डन किया है। द्र०—सं० व्याकरण-शास्त्र का इतिहास' भाग १, पृष्ठ २१६-२२० (तृ० सं०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२।१।४७—पात्रेसम्मितादयश्च ।
पात्रेसमितादयः (ना० पर्या० भा०पाठ) ।
२।१।६६—युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ।
युवा खलतिपलितवलिनजरद्भिः (प्रदीप, न्यास, पद०, सीर०, परि० २८)।
युवा खलतिपलितवलिनजरद्भिः (प्रदीप, न्यास, पदमञ्जरी, सीर० परि० २८)।

तृतीयाध्याय

३।१।६—मान्वधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ।
दीर्घश्च + अभ्यासस्य, दीर्घश्च + आभ्यासस्य (भाष्य) ।
३।१।६—काम्यच्च ।
चकाम्यच्च (भाष्य) ।
३।१।२८—गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ।
गुपूधूपविछ····· (क्षीरत० १।२८०, २९६)
३।१।३६,३७ - इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः; दयायासश्च ।
इजादेर्गुरुमतोऽनृच्छः (क्षीरत० ६।१९)।
····· अनृच्छ + उ = अनृच्छो दयायासश्च (भाष्य) ।
३।१।३८—उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ।
उषविदजागुरन्यतरस्याम् (क्षीरत० २।५९)।
३।१।५८—जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचु ···।
जॄस्तन्भुम्रुचुम्लुच (क्षीरत० १।७४१;४।२०)।
३।१।८२—स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ।
स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च (क्षीरत० ९।६)।
३।१।९४—वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ।
वा स्वरूप आस्त्रियाम् (उद्योत)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३।१।६५—कृत्याः ।
कृत्याः प्राङ्ण्वुलः(का०) ।
३।१।११८—प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ।
प्रत्यपिभ्यां ग्रहेश्छन्दसि (का०) ।
३।१।१२२—अमावस्यदन्यतरस्याम् ।
अमावास्यदन्यतरस्याम् (क्षीरत० १।७३३) ।
३।१।१२६—[1]आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च ।
आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च (का०) ।
३।१।१३७—पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ।
पाघ्राध्माधेड्दृशः शः (क्षीरत० १।७१५) ।
३।१।१४१—श्याद्व्यधास्रुसंस्रुवतीण ।
श्याद्व्यधाश्रुसंस्रुवतीण ··· (सि० कौ०, तत्त्व०, प्र० कौ०) ।
३।१।१४६—प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् ।
प्रुस्रुल्वः ·····(का० बालशास्त्री संस्क०) ।
३।२।५४—शक्तौ हस्तिकपाटयोः ।
शक्तौ हस्तिकवाटयोः (पद०, तत्त्व०) ।
३।२।६५—काव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ।
हव्यपुरीष ·······(क्षीरस्वामी अमरकोषटीका १।१।५५) ।
३।२।६३—कर्मणीनि विक्रियः ।
कर्मणीनिर्विक्रियः (क्षीरत० ६।१) ।
३।२।१००—अनौ कर्मणि ।
अनौ कर्मणः ? (क्षीरत० ४।४०, टि०द्र०) ।

---

१. रा० ला० क० ट्र० मुद्रित अष्टाध्यायी में भी 'रपिलपि' पाठ प्रमाद से छपा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३।२।१३३—अर्हः प्रशंसायाम् ।
अर्हः **पूजायाम्** (क्षीरत० १।४८८) ।

३।२।१३४—आक्वेस्तच्छील ·····।
प्राक्क्वेस्तच्छील······(भाष्य ३।२।१७८) ।

३।२।१३६—अलंकृञ्······पतोन्मद······।
अलंकृञ्····· **पदोन्मद** ·····(पद०) ।

३।२।१४१—शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ।
शमित्यष्टाभ्यो **घिनिण्** (क्षीरत०४।९४) ।

३।२।१४६—निन्द···विनाश···।
निन्द···**विनाशि**···(पद०, तत्त्व, बाल०) ।

३।२।१५३—सूददीपदीक्षश्च ।
सूददीप**दीक्षां** च (क्षीरत० १।२१) ।

३।२।१५५—जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ।
जल्प···**लुण्ठ** ·· (क्षीरत० १०।२५) ।

३।२।१६८—सनाशंसभिक्ष उः ।
सनाशंस**भिक्षामुः** (क्षीरत० १।४१७) ।

३।२।१६९—विन्दुरिच्छुः ।
बिन्दुरिच्छुः (धातुवृ० १।५४) ।

३।३।१३—लृट् शेषे च ।
लृट् शेषे (उद्योत, शब्देन्दु०) ।

३।३।५६—एरच् ।
एरजण्यन्तानाम् (का० ६।१।१६०, प्रदीप ३।३।५६) ।

३।३।७८—अन्तर्घनो देशे ।
अन्तर्घणो देशे (का०, सि०कौ०) ।
अन्तरघणो देशे (ना० पर्या० भा०पाठ) ।

३।३।९८—व्रजयजोर्भावे क्यप् ।
वृजयजो···(बाल०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३।३।१०५—चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ।
.... कुम्पि ...(क्षीरत० १०।१०३ 'कुम्पा') ।

३।३।११०—विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ।
प्रश्नाख्यानयोरिञ्च (क्षीरत० ८।११) ।

३।३।१२२—अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च ।
अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधारावायाश्च (का०) ।

३।४।१९—उदीचां माङो व्यतीहारे ।
. .. व्यतिहारे (क्षीरत० १।६८५) ।

३।४।६१—स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ।
......कृभुवोः (क्षीरत० ८।११) ।

३।४।७९—टित आत्मनेपदानां टेरे ।
टिदात्मने ...... (प्रदीप, उद्योत) ।

चतुर्थाध्याय

४।१।१५—टिड्ढाणञ् ..कञ्क्वरपः ।
..... कञ्क्वरप्ख्युनाम् (का०) ।

४।१।१७—प्राचां ष्फ[1] तद्धितः (का०, सि०कौ० आदि) ।
प्राचां ष्फस्तद्धितः (न्यास सम्पादकीय टि० बंगाल सं०) ।

४।१।३०—केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्य ..।
.. पापावर ... (द्र०—शब्दकौ०) ।

४।१।३७—वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ।
.. कुसितकुसिदानामुदात्तः (पद०, शब्दकौ०, अनन्त पर्या० भा०पाठः) ।

---

१. वस्तुतो नेदं पाणिनीयसूत्रस्य पाठान्तरमपि तु कातन्त्रसूत्रम् (कृदन्त ६०७) अत्रोद्धृतं क्षीरेण ।

२. रामशंकरभट्टाचार्यसंग्रहे उभयत्र दन्त्यसकारादि 'स्फ' 'स्फस्' निर्दिश्यते, तदसाधु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४।१।८१—दैवयज्ञिशौचि काण्ठेविद्धिभ्योऽ···।
··काण्डेविद्धिभ्योऽ···(शब्दकौ०, शब्देन्दु०)।

४।१।११७—विकर्णशुङ्गच्छगलाद् ।
विकर्णशुङ्गाच्छगलाद् ·······(द्र०—का० पाठा०, शब्दकौ०)।

४।१।१२६—कल्याण्यादीनामिनङ् ।
कल्याण्यादीनामिनङ् **च** (सि० कौ०, मोती० बना० सं०)।

४।१।१२८—चटकाया ऐरक् ।
चटकाद् ऐरक् (न्यास, शब्दकौ, तत्त्व०)।

४।१।१५५—कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ।
कौशल्य ······(ना० पर्या० भा०पाठ)।

४।१।१६७—साल्वेयगान्धारिभ्यां च ।
शाल्वेय ·····(ना० पर्या० भा०पाठ)।

४।१।१७१—साल्वावयवप्रत्यग्र ····।
शाल्वाव······(ना० पर्या० भा०पाठ)।

४।१।१७३—कम्बोजाल्लुक् ।
काम्बोजाल्लुक् (शब्दकौ०)।

४।२।२—लाक्षारोचनाट्ठक् ।
लाक्षारोचना**शकलकर्दमा**ट्ठक् (का०)।

४।२।२०—सास्मिन् पौर्णमासीति ।
सास्मिन् पौर्णमासीति **संज्ञायाम्** (का०)।

४।२।४१—ब्राह्मणमाणव···यत् ।
······**यन्** (ना० पर्या० भा०पाठ, अनन्त० पर्या० भा०पाठ)।

४।२।४२—ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ।
ग्रामजनबन्धु**सहाये**भ्यस्तल् (का०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४।२।८७—नडशादाड् ड्वलच् ।
नडशाडाड् ड्वलच् (बाल०, शब्देन्दु०) ।

४।२।१००—द्युप्रागपागुदक्प्रदीचो यत् ।
द्युप्रागवागु······(प्र०स०, प्रौढ०, शब्दकौ०) ।

४।२।१०६—प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् ।
पलद्यादि=पलदिन् आदि, पलदी आदि (तत्त्व०) ।

४।२।१२५—कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् ।
कच्छाग्निवक्त्रवर्त्तोत्तरपदात् (प्र० स०) ।

४।२।१४१—कन्थापलदनगरग्राम ·· ।
कन्थाफलद···(प्र०स०) ।

४।३।३०—अमावास्याया वा ।
अमावस्याया वा(पद०, न्यास०, तत्त्व०)

४।३।३२—सिन्धवपकराभ्यां कन् ।
सिन्धववकराभ्यां कन् (प्र० कौ०) ।

४।३।३४—श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्य···।
······स्वातीतिष्य···(प्र० स०, धातुवृ० १।३३, तत्त्व०, प्रौढ०) ।

४।३।७६—शुण्डिकादिभ्योऽण् ।
शण्डिकादिभ्योऽण् (गण० म०, पृ० २०४) ।

४।३।८४—विदूराञ्ञ्यः ।
विडूराञ्ञ्यः (प्र० स०) ।

४।३।९१—आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ।
··· पर्वतात् (प्र० कौ०, शब्देन्दु०) ।

४।३।९४—तूदीशलातुरवर्मती···।
तूदीसलातुरवर्मती······(सि० कौ०, शब्दकौ०, प्र० स०) ।

४।३।११७,११८—संज्ञायाम् । कुलालादिभ्यो वुञ् ।
संज्ञायां कुलालादिभ्यो वुञ् (प्रत्याख्यान०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४।३।११९—क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ।
—पदपादञ् (पद०, शब्दकौ०, शब्देन्दु०) ।

४।३।१२८—[1]शाकलाद् वा (सर्वे व्याख्यातारः) ।
[1]शकलाद् वा (अष्टा० भाष्य[2]) ।

४।३।१४०—शम्याष्ट्लञ् ।
शम्याः ष्लञ् (शब्दकौ०, बाल , शब्देन्दु०) ।

४।३।१४१—मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ।
.. मभक्षाच्छादनयोः (शब्देन्दु०) ।

४।३।१४९—नोत्त्वद्वर्ध्रबिल्वात् ।
नोत्त्वद्वध्रविल्वात् (शब्द कौ०) ।

४।४।४—कुलत्थकोपधादण् ।
कुलस्थ...(पद०) ।

४।४।९—[3]आकर्षात् ष्ठल् ।
[3]आकषात् ष्ठल् (धातुवृ० १।४४७, शब्दकौ०, तत्त्व०, प्र० स०)।

४।४।१७—विभाषा विवधात् ।
विभाषा विवधवीवधात् (का०) ।

४।४।४२—प्रतिपथमेति ठंश्च ।
प्रतिपथमेति ठञ् च (शब्देन्दु०) ।

४।४।५३- [4]किशरादिभ्यः ष्ठन् ।
[4]किसरादिभ्यः ष्ठन् (सि०कौ०, शब्देन्दु०) ।

---

१. रामलाल कपूर ट्रस्ट संस्करण में 'शकलाद्वा' ही छपा है ।

२. चतुर्थ अध्याय अभी तक अप्रकाशित है । द्र०—परोपकारिणी सभा अजमेर, संग्रह ।

३. तुलना करो—५।२।६४ का पाठ वा पाठान्तर के साथ ।

४. रा० ला० क० ट्र० संस्करण में 'किसरादिभ्यः ष्ठन्' पाठ छपा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४।४।६४—बह्वच्पूर्वपदाट् ठच् ।
बह्वच्पूर्वपदाट् ठञ् (अमरटीकासर्वस्व, सि०कौ० मोती० बना० सं०)।

४।४।७७—धुरो यड्ढकौ ।
धुरो यड्ढञौ (प्र० स० ८।२।७६, शब्देन्दु०) ।
धुरो यड्ढकञौ (प्र० स०, शब्देन्दु०) ।

४।४।८२—[1]संज्ञायां जन्या ।
संज्ञायां जन्याः (सि० कौ० मोती० बना० सं०) ।

४।४।१०१—[2]परिषदो ण्यः ।
[2]पर्षदो ण्यः (व्याख्यासुधा १।१।३५) ।

४।४।१२९—मधोर्ञ च ।
मधोरञ् च (ऋ० भाष्य १।९०।६ सायण) ।

४।४।१३१,१३२–वेशोयशआदेर्भगाद् यल् । ख च ।
......यल्खौ (सि० कौ०, शब्दकौ०, अनन्त पर्या० भा० पाठ) ।

४।४।१३५—सहस्रेण संमितौ घः ।
सहस्रेण समितौ घः (का०, शब्द कौ०) ।

पञ्चमाध्याय

५।१।२५—कंसाट् टिठन् ।
कंसाट् टिठ्ठन् (उद्योत) ।

५।१।४३—लोकसर्वलोकाट् ठञ् ।
लोकसर्वलोकाभ्यां ठञ् (प्र० स०) ।

५।१।६५- दण्डादिभ्यो यत् ।
दण्डादिभ्यो यः (का०) ।

---

१. रामलाल कपूर ट्रस्ट संस्करण में 'संज्ञायां जन्याः' पाठ छपा है ।
२. तुलना करो—५।२।११२ पाठ वा पाठान्तर के साथ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दण्डादिभ्यः (बाल०, तत्त्व० द्र०—सि० कौ० मोती० बना० संस्क०, अनन्त पर्या० भा०पाठ)।

५।१।६८—कडङ्करदक्षिणाच्छ च।
कडङ्गरदक्षिणाच्छ च (तत्त्व०)।

५।१।७५—पन्थो ण नित्यम्।
पन्थोऽण् नित्यम् (शब्देन्दु०)।

५।१।६४—तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः।
तस्य दक्षिणा (अनन्त० पर्या० भा० पाठ)।

५।१।६६—कर्मवेषाद् यत्।
कर्मवेशाद् यत् (भाषावृत्ति, अमरटीका—क्षीर० पृ० १०७, रामाश्रमी, पृ० २०६, सर्वानन्द भाग २, पृ० ३६० ट्रि० सं०)।

५।१।११२—ऐकागारिकट् चौरे।
ऐकागारिकट् चोरे (प्र० स०)।

५।१।१२०—न नञ्पूर्वात्…[1]लवणवटबुधकत …।
…. [1]लवणवटयुधकत ..(प्र० स०)।

५।२।६४—[2]आकर्षादिभ्यः कन्।
[2]आकषादिभ्यः कन् (सि० कौ०, प्र० स०)।

५।२।६८—सस्येन परिजातः।
शस्येन परिजातः (पद०, प्र० स०)।

५।२।७६—शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे।
शृङ्गलमस्य……(उद्योत)।

५।२।८३—कुल्माषादञ्।
कुल्मासादञ् (प्र० स०)।

---

१. रा० ला० क० ट्र० सं० में 'वटयुघ' पाठ छपा है।

२. तुलना करो—४।४।६ के पाठ वा पाठान्तर के साथ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५।२।१०१—प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ।
प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्यो णः (का०, अमरटीका, रायमुकुट 'वर्ता' शब्द) ।

५।२।१०७—[1]ऊषसुषिमुष्कमधो रः ।
[1]ऊषशुषिमुष्कमधो रः (प्र० स०) ।

५।२।११०—गाण्डचजगात्[2] संज्ञायाम् ।
गाण्डचजकात्[3] संज्ञायाम् (गणरत्न महोदधि, अमरटीकासर्वस्व भाग १ पृष्ठ २३, अमरटीका क्षीर० पृष्ठ८, कर्क-कात्या० श्रौत ६।२।६) ।
गाण्डी+अजग, गाण्डि+अजग (उभयथा—काशिका, प्र० स०) ।

५।२।१११—काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ।
काण्ड+अण्ड, काण्ड+आण्ड (प्र० स०) ।

५।२।११२—रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् ।
……पर्षदो[4]वलच् (पद०, गणरत्नमहोदधि, सि० कौ० दुर्घटवृत्ति, भागवृत्ति संकलन पृ० २८ टि०४) ।

५।३।५—एतदोऽन् ।
एतदोऽश् (का०, पद०, प्रदीप, सि० कौ०, उद्योत) ।

५।३।१८—दानीं च ।
इदानीं च (प्रदीप, उद्योत) ।

५।३।१९—तदो दा च ।
तदोऽदा च (प्रदीप) ।

---

१. रा० ला० क० ट्र० संस्करण में 'शुषि' पाठ छपा है ।
२. आजगव (=अजगव) आद्य धनुष था । द्र०—वायु पुराण २।५।५२; ४।४६ ।
३. अजकावं मैत्रावरुणम् । कात्यायन श्रौत ६।२।६ ।
४. तुलना करो—४।४।१०१ पाठ वा पाठान्तर के साथ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५।३।१०३—शाखादिभ्यो यत् ।
······यः (उद्योत ५।१।२१; प्र० स०, बाल०, शब्देन्दु० ६।३।४६) ।

५।३।११७—पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ।
पर्श्वादियौधेयादिभ्यामणञौ । (का०) ।

५।४।५०—कृभ्वस्तियोगे सम्पद्य कर्त्तरि च्वि ।
अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे ·····(का०) ।

५।४।५४—तदधीनवचने ।
तदधीनवचने च (प्र० स०) ।

५।४।५७—अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् ।
· द्व्यजवराध्यार्दनि···(का० पाठा०) ।

५।४।६१—सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने ।
– तिव्यधने (बाल०) ।

५।४।१२०—सुप्रात···श्रेणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ।
· ···प्रोष्ठपदभद्रपदाः (अमरकोश १।३।२२ रामाश्रमी टीका, रायमुकुट टीका) ।
– श्रेणीपदाजपदाः (धातुवृ० ४।६४) ।
सुप्रात·· शारिकुक्ष—।
···सारिकुक्ष···(ना० पर्या०भा०पाठः) ।

५।४।१२१—नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ।
—·······हलिशक्त्यो·········(का० पाठा०, पद०, प्र० कौ० प्रसाद०, सि० कौ०, बाल०, तत्त्व० पाठा०) ।

षष्ठाध्याय

६।१।४७—स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ।
स्फुरिस्फुल्योर्घञि (क्षीरत० ६।९२) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६।१।५१—विभाषा लीयतेः ।
लियो वा[1] (क्षीरत० १०।२०६) ।

६।१।१११—प्रकृत्याऽन्तःपादम् ।
[2]प्रकृत्याऽन्तःपादमव्यपरे (का०) ।
नान्तःपादम् (भाष्य) ।
नान्तःपादमव्यपरे (का० पाठा०, पद०, शब्दकौ० १।१।३; सि०कौ०, दीपिका) ।

६।१।११२—अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रता .....।
.. ..दवचक्रमुरव्रता......(पद० सुबोधिनी) ।

६।१।११३—यजुष्युरः ।
यजुष्युरो (का० पाठा०) ।

६।१।११९—अवङ् स्फोटायनस्य ।
अवङ् स्फौटायनस्य (पद०, शब्देन्दु०) ।

६।१।१२०—इन्द्रे च ।
इन्द्रे च नित्यम् (का०) ।
इन्द्रे (ना०पर्या० भा०पाठ, अनन्त पर्या० भा० पाठ०) ।

६।१।१२१—प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।
..... अचि (का०—'नित्यम्' नास्ति) ।

६।१।१२२—आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ।
.........छन्दसि बहुलम् (भाष्य, का० पाठा०) ।

६।१।१३२—सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे ।
सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे (का०, क्षीरत० ८।११) ।

६।१।१३५—किरतौ लवने ।
किरतेर्लवने (क्षीरत० ६।१११) ।

---

१. व्याकरणान्तरसूत्रं स्यात् ।

२. रा० ला० क० ट्र० संस्करण में यही पाठ छपा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६।१।१४५ विष्किरः शकुनौ वा ।
विष्किरः **शकुनिर्विकरो** वा (का०) ।

६।१।२१३—मतोः पूर्वमात् संज्ञायामस्त्रियाम् ।
मतोः **पूर्व** आत्…… (स्वरसि०, सुबोधिनी) ।

६।२।४२—कुरुगार्हपत……तैतिलकद्रूःपण्य……।
……**कद्रूपण्य**…… (क्वचित्काशिकादिषु निर्विसर्गं इति प्रत्याख्यानसंग्रहः) ।

६।२।५२—अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ।
…**ऽञ्चतावप्रत्यये** (ना० पर्या० भाष्य० पा०) ।

६।२।१०९—निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ।
निष्ठोपसर्ग**पूर्वा**वन्यतरस्याम् (ना० पर्या० भा० पाठः) ।

६।२।१३३—चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ।
चूर्णादीन्यप्राण्युपग्रहात् (का० पाठा०) ।

६।३।३—ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः ।
…… **स्तपस**स्तृतीयायाः (भाषावृत्ति) ।

६।३।३९—स्वाङ्गाच्चेतः ।
स्वाङ्गाच्चेतो**ऽमानिनि** (का०) ।

६।३।५१—पादस्य पदाज्यातिगोप……।
पादस्य **पदाज्यति**गोप…… (क्षीरत० १।३३) ।

६।३।६४—इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु ।
……तूल**हारिषु** (धातुवृ० १।३२३) ।

६।३।७८—ग्रन्थान्ताधिके च ।
ग्रन्थान्ते**ऽधिके** च (अनन्त० पर्या० भा० पाठः) ।

६।३।८२—प्रकृत्याशिषि ।
प्रकृत्या**शिष्यगोवत्सहलेषु** (का०) ।

६।३।९१—विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये ।
विश्वग्देवयोश्च **टेरद्रिः** (उद्योत ६।३।९५) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६।३।९२—समः समि ।
समः सम्यन्तावप्रत्यये (उद्योत ६।३।९५) ।

६।३।१०३—का पथ्यक्षयोः ।
का पथ्यक्षयोश्च (वामनीय० पृ०१०, पं० ४) ।

६।३।११५—नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ।
… रुजि … (क्षीरत० ६।१२१) ।

६।४।२५—दशसञ्जस्वञ्जां शपि ।
दन्शसन्जस्वन्जां शपि (क्षीरत० १।७०२) ।

६।४।४२—जनसनखनां सञ्झलोः ।
जनखनसनां सञ्झलोः (क्षीरत० ४।४०) ।

६।४।५६ ल्यपि लघुपूर्वात् ।
ल्यपि लघुपूर्वस्य (कैयट उभयथा पाठ, पद०) ।

६।४।९७—इस्मन्त्रन्क्विषु च ।
इस्मन्त्रन्क्विप्सु च (क्षीरत० १०।३६) ।

६।४।१०० घसिभसोर्हलि च ।
घसिभसोर्हलि (प्रदीप, पद०, अनन्त० पर्या० भा० पाठः) ।

६।४।१२६—न शसददवादिगुणानाम् ।
… … गुणिनाम् (क्षीरत० ११९७) ।
न शश… (प्र०कौ० भाग २ पृ०७५, तत्त्व०) ।

६।४।१३२—वाह ऊठ् ।
वाह ऊट् (ना० पर्या० भा०पाठः) ।

सप्तमाध्याय

७।१।२०—जश्शसोः शिः ।
जश्शिशसोः शिः (न्यास०) ।

७।१।३०—भ्यसो भ्यम् ।
भ्यसोऽभ्यम् (का० पाठा०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७।१।४३—यजध्वैनमिति च ।
यजध्यैनमिति च (का०) ।

७।१।६०—गोतो णित् ।
ओतो णित् (का०पाठा०, प्रसाद०, धातुवृ० १।७०२, पृ० २८१, व्याख्यासुधा १।१।६) ।

७।२।२—अतो ल्रान्तस्य ।
अतो र्लान्तस्य (उद्योत, शब्देन्दु०) ।

७।२।५—ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृ ·····।
······'शसजागृ (क्षीरत० १।४८०) ।

७।२।११—श्र्युकः किति ।
श्र्युकः क्किति (का०पाठा०, भा० ३।२।१३९) ।

७।२।१९—धृषिशसी वैयात्ये ।
धृषशसी · (क्षीरत० १।४८०) ।

७।२।२१—प्रभौ परिवृढः ।
प्रभौ परिबृढः (क्षीरत० ६।५६, १।४८५) ।

७।२।२३—घुषिरविशब्दने ।
घुषेरविशब्दने (ना० पर्या० भा०पाठः) ।

७।२।३१—ह्रु ह्वरेश्छन्दसि ।
('ह्रु' इत्युकारविशिष्टोऽत्र पाठः केषाञ्चित्, 'ह्वृ' इति ऋकारवान् पाठोऽन्येषाम् । वृ० शब्देन्दु० भाग ३. पृ० २१९१) ।

७।२।३४—ग्रसित— क्षरितिक्षमितित्रमित्यमितीति च ।
······क्षरितिवमित्यमितीति च (सि०कौ०) ।

७।२।४०—सिचि च परस्मैपदेषु ।
सिचि परस्मैपदेषु (क्षीरत० १।६९४;५।१९) ।

---

१. क्षीरस्वामी 'शस्' पाठ मानकर 'श्वस् धातु के लुङ् में ७।२।७ सूत्र से वृद्धि का विकल्प कहता है । द्र०—क्षीरत० २।६६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७।२।४८—तीषसहलुभरुषरिषः।
'तीषुसह······(क्षीरत०[2] ४।१२३, ६।२६, प्रदीप ७।२।४६, का० पाठ०)।

७।२।४९—सनीवन्तर्ध ज्ञपिसनाम्।
···ज्ञपिसनिततनिपतिदरिद्राणाम् (का० पाठा०)।

७।२।५७—सेऽसिचि कृतचृत······।
सेऽसिचि कृतिचृत···(क्षीरत० ७।६)।

७।२।६०—तासि च क्लृपः।
······कृपः (ना० पर्या० भा०पाठः)।

७।२।७३—यमरमनमातां सक् च।
···—सुक् च (क्षीरत० १।७०६,७११; २।४२)।

७।२।७४—स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि।
स्मिङ्पूङ्रञ्ज्वशां सनि (क्षीरत० ७।२६)।

७।२।७८—ईडजनोर्ध्वे च।
ईडजोः स्ध्वे[3] च (का पाठा०, उद्योत)।

७।२।८०—अतो येयः।
अतो यासियः (का० पाठा०, प्रदीप)।
अतो या इयः (उद्योत १।४।१, ना० पर्या० भा० पाठः)।

७।२।१०३—किमः कः।
इमः कः (न्यास)।

७।३।१०—उत्तरपदस्य।
उत्तरपदस्य च[1] (ना० पर्या० भा०पाठ)।

---

१. द्र०—७।३।७७ सूत्र का पाठ वा पाठान्तर।

२. क्षीरत० १।४५८ के व्याख्यान में 'तीषसह' पाठ है। सम्भव है, वह अपपाठ हो।

३. तुलना करो—ईजजनोः सध्वे च। कातन्त्र ३।६।५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0: In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७।३।१७— परिमाणान्तस्याऽसंज्ञाशाणयोः ।
परिमाणान्तस्याऽसंज्ञाशाणकुलिजानाम् (का० पाठा०) ।

७।३।३१— यथातथयथापुरयोः पर्यायेण ।
यथातथायथा ····(सि०कौ०, उद्योत) ।

७।३।३९— लीलो···स्नेहविपातने ।
···· स्नेहविपाटने (क्षीरत० २।५१) ।

७।३।७५ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ।
ष्ठिवुक्लम्वाचमां शिति (का०, तत्त्व०, क्षीरत० १।३१५,३७३; ४।१००) ।
ष्ठिवुक्लम्याचमां शिति (ना० पर्या० भा० पाठः) ।

७।३।७७— [२]इषुगमियमां छः ।
[२]इषगमियमां छः (प्रदीप, शब्देन्दु० तिङन्ते, चन्द्रकला) ।

७।४।३— भ्राजभासभाषदीप ।
[३]भ्राजभासदीप · (क्षीरत० १।३४५) ।

७।४।४— लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य ।
···री चाभ्यासस्य (क्षीरत० १।६५७) ।

७।४।५५— आप्ज्ञप्यृधामीत् ।
आप्ज्ञप्ऋधामीत् । (क्षीरत[४]० ४।१७) ।

---

१. 'उत्तरपदस्य च' इति वृत्तौ । वृत्ति में चकार सम्प्रति नहीं मिलता है ।

२. द्रष्टव्य ७।२।४८ का पाठ वा पाठान्तर ।

३. यह पाठान्तर रामशंकर भट्टाचार्य ने उद्धृत किया है। परन्तु हमारा विचार है कि यहां लेखक-प्रमाद से 'भाष' धातु का पाठ भ्रष्ट हो गया है । अन्यत्र क्षीरत० १।१११, ३७५ आदि में सूत्रनिर्देश में 'भाष' धातु पठित है । 'भाष' धातु(१।४०५)में भी 'भ्राजभास'(दन्त्यसकारवान्)निर्देश करके णिजन्त में ह्रस्वविकल्प दर्शाया है ।

४. क्षीरत ५।१३५; ६।३८ में 'आपज्ञप्यधामीत्' पाठ ही मिलता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७।४।८४—नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् ।
नीग्वन्चुस्रन्सुध्वन्सुभ्रन्शुकस··· (क्षीरत० १।५०१, ६०१; धातुवृ० ४।१२३) ।

७।४।८६—जपजभदहदशभञ्जपशां च ।
भन्ज (क्षीरत० ७।२१, तथा धातुनिर्देशात्) ।

७।४।९५—अत्स्मृदृत्वर ··।
अत्स्मृदृत्वर······ (सि०कौ० मोती० बना० सं० पृ० २८८) ।

अष्टमाध्याय

८।१।६७—पूजनात् पूजितमनुदात्तम् ।
···मनुदात्तं **काष्ठादिभ्यः** (का०) ।

८।१।७३—नाऽमन्त्रिते समानाधिकरणे ।
······करणे **सामान्यवचनम्** (का०) ।

८।१।७४—सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने ।
विभाषितं विशेषवचने बहुवचनम् (का०) ।
विभाषितं विशेषवचने (स्वरसि०) ।

८।२।१२—आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ।
·· **चक्रीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती** (उद्योत) ।

८।२।१८—कृपो रो लः ।
कृपे रो लः[1] (क्षीरत० १।५०८, तत्त्व०, प्रौढ०)
क्लृपो[2] रो लः (ना० पर्या० भा०पाठः) ।

८।२।३२—दादेर्धातोर्घः ।
दादेर्घः[3] (क्षीरत० १।७१८) ।

---

१. अयं न्यासः कातन्त्रे (३।८।६७) अपि दृश्यते ।

२. अस्मिन् पाठे 'रः' प्रथमैकवचनम्, 'लः' षष्ठ्येकवचनं ज्ञेयम् ।

३. अयं न्यासः कातन्त्रे (३।८।५७) अपि दृश्यते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८।२।४४—ल्वादिभ्यः।
ल्वादिभ्यश्च (क्षीरत० ६।१२)।

८।२।५१—शुषः कः।
शुषेः कः (क्षीरत० ४।७४)।

८।२।७२—वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः।
......नडुहो दः (क्षीरत० १ ५०१)।

८।२।७९—न भकुर्छुराम्।
न [1]भकुरुछुराम् (क्षीरत० ६।७७)।

८।३।२७—नपरे नः।
नपरे न (न्यासः)।

८।३।६६—सदिरप्रतेः।
सदेरप्रतेः (क्षीरत० १।५६४)।

८।३।६८—अवाच्चाऽलम्बनाविदूर्ययोः।
अवादौर्जित्यालम्बनाविदूर्येषु[2] (क्षीरत० १।२७२)।

८।३।९२—प्रष्ठोऽग्रगामिनि।
प्रष्ठोऽग्रगामिणि (न्यास ४।१।४८ संपादकीया टि० बंगालसंस्करणे)।

८।३।९७—अम्बाम्बगोभूमिसव्याप ।
......सव्येऽप...(सि०कौ० मोती० बना० संस्क०)।

८।३।११८—सदेः परस्य लिटि।
सदिष्वञ्जोः परस्य लिटि (का०)।

८।४।५—प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्य—....।
......कार्श्यं... (तत्त्व०)।

---

१. कुधातौ क्षीरतरङ्गिण्यां (८।११) 'न भकुर्छुराम्' इत्येव पाठो दृश्यते।
२. अयं पाठश्चान्द्रे (६।४।५३) अपि दृश्यते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८।४।२३—वमोर्वा ।

वमोर्वा (क्षीरत० २।२) ।

८।४।२७—उपसर्गादनोत्परः ।

उपसर्गाद् बहुलम् (का०, अन्यत्र भी) ।

८।४।३२—वा निंसनिक्षनिन्दाम् ।

वा निक्षंनिसनिन्दाम् (क्षीरत० १।४३६) ।

वा निंश · (धातुवृ० मैसूर सं० भाग ३, पृ० ६४) ।

॥ इत्यष्टाध्यायी-सूत्रपाठान्तर-संकलनं समाप्तम् ॥

महादेवसिंह संग्रामसिंहजी आनं
"लीलासदन" ४. आनंदधाम.
नगरी होस्पिटल के पास,
अहमदाबाद-३८० ००६.

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चम परिशिष्ट

मूल पाणिनीय शिक्षा

हम इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के पृष्ठ २३६–२३७ पर लिख चुके हैं कि पाणिनि ने एक '**सूत्रात्मिका शिक्षा**' का प्रवचन किया था। यहां उसी के विषय में संक्षेप से वर्णन करके उसका मूलपाठ प्रकाशित करते हैं।

पाणिनीय शिक्षा के सम्प्रति दो प्रकार के पाठ मिलते हैं—एक सूत्रात्मक, और दूसरा श्लोकात्मक। सूत्रात्मक और श्लोकात्मक पाठ के भी लघु और वृद्ध दो-दो प्रकार के पाठ हैं।

आधुनिक पाणिनीय वैयाकरणों में पाणिनीय शिक्षा का श्लोकात्मक पाठ ही प्रसिद्ध है, और वैदिक भी वेदाङ्ग अन्तर्गत श्लोकात्मक पाणिनीय शिक्षा का ही पाठ करते हैं। श्लोकात्मक पाणिनीय शिक्षा के लघुपाठ में ३५ श्लोक, और वृद्धपाठ में ६० श्लोक हैं। लघुपाठ याजुष पाठ कहाता है, और वृद्धपाठ ऋक्पाठ।

सूत्रात्मक शिक्षा के भी लघु और वृद्ध दो पाठ हैं। श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वि० सं० १९३६ के मध्य में प्रयाग से पाणिनीय शिक्षा-सूत्रों का जो हस्तलेख प्राप्त किया था, वह पाठ लघुपाठ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त शिक्षासूत्र का हस्तलेख अन्त में त्रुटित था। अतः उसमें अष्टम प्रकरण का प्रथम सूत्र भी अपूर्ण ही है। मध्य में भी कहीं-कहीं पर लेखकप्रमाद से कुछ सूत्र छूटे हुए प्रतीत होते हैं। पाणिनीय शिक्षासूत्रों का जो पूर्ण पाठ हम छाप रहे हैं, वह वृद्धपाठ है। यह बात दोनों पाठों की तुलना से स्पष्ट हो जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल-पाठ—पाणिनीय शिक्षा के श्लोकात्मक और सूत्रात्मक जो दो प्रकार के पाठ मिलते हैं, उनमें पाणिनि-प्रोक्त मूलपाठ कौनसा है, इसका अति संक्षिप्त विवेचन किया जाता है—

श्लोकात्मिका पाणिनीय शिक्षा का प्रथम श्लोक है—

'अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा ।'

इस वचन से स्पष्ट है कि श्लोकात्मिका शिक्षा मूलतः पाणिनि-प्रोक्त नहीं है। वह तो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पाणिनीय मत के अनुसार बनाई गई है। श्लोकात्मिका पाणिनीय शिक्षा के प्रकाश-नाम्नी टीका के रचयिता के मत में इसका प्रवक्ता पाणिनि का अनुज आचार्य पिङ्गल है।[1] इस प्रकार ग्रन्थ के अन्तःसाक्ष्य और टीकाकार के साक्ष्य से सर्वथा स्पष्ट है कि श्लोकात्मिका पाणिनीय शिक्षा चाहे, उसका लघु याजुष पाठ हो, चाहे वृद्ध आर्च पाठ, दोनों ही मूलतः पाणिनि-प्रोक्त नहीं हैं। श्लोकात्मिका पाणिनीय शिक्षा का पाणिनि-प्रोक्त मूल ग्रन्थ इनसे भिन्न है। हमारा मत है कि पाणिनीय श्लोका-त्मिका शिक्षा का आधार पाणिनीय सूत्रात्मिका शिक्षा है।[2]

श्लोकात्मिका पाणिनीय शिक्षा के पठन-पाठन में अधिक प्रयुक्त होने के कारण सूत्रात्मक पाठ लुप्त हो गया, हस्तलेख भी अप्राप्य हो गए। श्लोकात्मिका शिक्षा मूलतः पाणिनि-प्रोक्त नहीं है, इस तथ्य की ओर सबसे पूर्व इस युग में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती का ध्यान गया। उन्होंने मूलभूत पाणिनीय शिक्षा की प्राप्ति के लिए महान्

---

१. ज्येष्ठभ्रातृभिर्विहितो व्याकरणेऽनुजस्तत्र भवान् पिङ्गलाचार्यः तन्मतमनुभाव्य शिक्षां वक्तुं प्रतिजानीते—अथ शिक्षामिति ।

२. आपिशल शिक्षा का भी एक श्लोकात्मक पाठ है। उसका आरम्भ का वचन है—अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि मतमापिशलेर्मुनेः ।

इस श्लोकात्मिका शिक्षा के १९ सूत्र उपलब्ध हुए थे। इन्हें भी डा० रघुवीर जी ने आपिशल शिक्षासूत्रों के पश्चात् छापा था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रयत्न किया। अन्ततः वि० सं० १९३६ के मध्य में प्रयाग के एक ब्राह्मण के गृह से पाणिनीय शिक्षा-सूत्र का एक हस्तलेख प्राप्त किया। यद्यपि वह हस्तलेख भी अधूरा था, अन्त के एक या दो पत्र नष्ट हो चुके थे, पुनरपि स्वामी दयानन्द की यह उपलब्धि शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने उपलब्ध शिक्षासूत्रों को आर्यभाषा व्याख्या सहित वि०सं० १९३६ के अन्त में **वर्णोच्चारणशिक्षा** के नाम से प्रकाशित किया।[1]

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त हुए शिक्षासूत्रों का दूसरा हस्तलेख चिरकाल तक विद्वानों को उपलब्ध नहीं हुआ। इस कारण श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्रों के पाणिनीयत्व में विद्वानों को शङ्का बनी ही रही। दैवयोग से श्री डा० रघुवीरजी को अडियार (मद्रास) के पुस्तकालय से आपिशल शिक्षासूत्रों के दो हस्तलेख उपलब्ध हो गए। उन्होंने उनके साथ स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्रों की तुलना करके स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्रों के पाणिनीयत्व की स्थापना की। इस विषय में उन्होंने कुछ लेख भी लिखे।

इसके पश्चात् सन् १९३८ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से मनोमोहन घोष एम० ए० सम्पादित **'पाणिनीय शिक्षा'** नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इसकी बृहद् भूमिका में मनोमोहन घोष ने सारा प्रयत्न इस बात की सिद्धि के लिए लगाया कि पाणिनीय शिक्षा का श्लोकात्मक पाठ ही पाणिनि द्वारा प्रोक्त है, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित सूत्रपाठ पाणिनीय नहीं है। इस प्रसंग में आपने डा० रघुवीर के लेख की आलोचना के साथ-साथ सूत्रात्मक पाठ को दयानन्द द्वारा कल्पित पाठ सिद्ध करने की भरपूर चेष्टा की।

मनोमोहन घोष के उक्त भूमिकास्थ लेख की विस्तृत आलोचना

---

१. इस विषय में जो अधिक जानना चाहें, वे हमारे 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' ग्रन्थ में देखें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमने **मूल पाणिनीय शिक्षा** इस शीर्षक से पटना की 'साहित्य' नाम्नी पत्रिका के सन् १९५९ अङ्क १ में प्रकाशित की। उसमें मनोमोहन घोष के सभी हेत्वाभासों का सप्रमाण निराकरण किया, और श्लोकात्मिका शिक्षा को पाणिनीय मानने पर अष्टाध्यायी से जो विरोध आते हैं, उनका उल्लेख करके सूत्रात्मक पाठ का पाणिनीयत्व सिद्ध किया। जो पाठक इस विषय में विशेष रुचि रखते हैं, वे हमारा उक्त लेख अवश्य पढ़ें।

आपिशल[1] और पाणिनीय शिक्षा

पाणिनीय शिक्षा के सूत्र आपिशल शिक्षा के सूत्रों के साथ बहुत साम्य रखते हैं। अतः आपिशल शिक्षासूत्रों की उपलब्धि पर यह विचार करना अत्यन्त आवश्यक हो गया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्र पाणिनीय हैं, अथवा आपिशल। दोनों के सूत्रपाठों की तुलना से इतना तो स्पष्ट है कि दोनों का पाठ प्रायः समान है। परन्तु जहां परस्पर में वैषम्य है, वह प्रवक्तृ-भेद के कारण है, अथवा पाठान्तरमूलक है। यद्यपि कुछ वैषम्य पाठान्तरमूलक कहे जा सकते हैं, पुनरपि कुछ पाठ ऐसे अवश्य हैं, जो प्रवक्तृभेद के कारण ही हैं। यथा—

आपिशल पाठ	पाणिनीय पाठ
ईषद्विवृतकरणा ऊष्माणः।	ईषद्विवृतकरणा ऊष्माणः।
	विवृतकरणा वा।
विवृतकरणाः स्वराः।	विवृतकरणाः स्वराः।

पाणिनीय पाठ में ऊष्म वर्णों का पक्षान्तर में विवृतकरण प्रयत्न कहा है, वह आपिशल पाठ में नहीं है। पाणिनीय अष्टाध्यायी में एक सूत्र है—**नाज्झलौ** (१।१।१०)। इस सूत्र द्वारा पूर्व **तुल्यास्यप्रयत्नं**

१. आपिशल शिक्षा के लिए देखिए हमारे द्वारा सम्पादित 'शिक्षा-सूत्राणि' संग्रह। इसमें चान्द्रशिक्षा का पाठ भी छापा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सवर्णम् (१।१।६) सूत्र से प्राप्त अचों और हलों की (अ इ ऋ लृ की क्रमशः ह् श ष स के साथ) सवर्ण संज्ञा का निषेध किया है। उक्त हलों और अचों की सवर्ण संज्ञा तभी हो सकती है, यदि स्वरों और ऊष्मों के आभ्यन्तर प्रयत्न समान हों। दोनों के आभ्यन्तर प्रयत्न की समानता **विवृतकरणा वा** इस पाणिनीय सूत्र से ही सिद्ध है। आपिशल शिक्षा में उक्त सूत्र न होने से अज्झलों की सवर्ण संज्ञा ही प्राप्त नहीं होती।

इसके अतिरिक्त दोनों शिक्षासूत्रों के निम्न पाठ भी द्रष्टव्य हैं—

आपिशल पाठ	**पाणिनीय पाठ**
ञमङणनाः स्वस्थाना नासिकास्थानाः(१।१६)।	**ङञणनमाः स्वस्थान-नासिकास्थानाः**(१।२१)।
स्पर्शयमवर्णकारो ····· (५।१)।	**स्पर्शवर्णकरो** ··—।
अन्तस्थवर्णकारो ····· (५।२)।	**अन्तस्थवर्णकरो**······।
ऊष्मस्वरवर्णकारो ··· (५।३)।	**ऊष्मस्वरवर्णकरो**······।

इनमें से प्रथम उद्धरण में 'ञमङणनाः' निर्देश उणादि ञमन्ताड्डः (१।११४) सूत्र में प्रयुक्त ञम् प्रत्याहार के अनुरूप ञमङणनम् प्रत्याहारसूत्रानुसारी है। हमने अपने 'संस्कृत व्याकरण के इतिहास' में सप्रमाण दर्शाया है कि पञ्चपादी उणादि आपिशलि-प्रोक्त है, और उसमें प्रयुक्त 'ञम्' प्रत्याहार की दृष्टि से प्रत्याहारसूत्र में निर्दिष्ट **ञमङणन** क्रम आपिशलि द्वारा उपज्ञात है, और यही क्रम उसके शिक्षासूत्र में भी है। पाणिनीय सूत्र में वर्गक्रम से पाठ है।

अगले उद्धरणों में **कार** और **कर** का भेद है।[1] पाणिनीय **कर** पाठ पाणिनि के **कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु** (३।२।२०) सूत्र के अनुसार है। **कार** पाठ में औत्सर्गिक **अण्** की कल्पना करनी पड़ती है।

---

१. पाणिनि के शिक्षासूत्र के वृद्ध पाठ में 'कार' पाठ मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन भेदों के अतिरिक्त पाणिनीय शिक्षा में आपिशल शिक्षा की अपेक्षा निम्न सूत्र अधिक हैं -

कण्ठ्यान् आस्यमात्रान् इत्येके ।१।७।।
दन्तमूलस्तु तवर्गः।१।११।।
विवृतकरणा वा ।३।८।।

तीन सूत्रों का आधिक्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित लघुपाठ से दर्शाया है। हम पूर्व कह चुके हैं कि उक्त हस्त-लेख में मध्य-मध्य में लेखकप्रमाद से कुछ सूत्र नष्ट हुए हैं। इनके अतिरिक्त सप्तम प्रकरण में चार सूत्र ऐसे हैं, जो आपिशलीय शिक्षा में नहीं हैं (हमारे द्वारा प्रकाशित वृद्ध पाठ में भी नहीं हैं)। वृद्धपाठ में तो उक्त तीन सूत्रों के अतिरिक्त ७-८ सूत्र और ऐसे हैं, जो आपि-शल शिक्षा में नहीं हैं।

इस संक्षिप्त विवेचना से स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्र पाणिनीय ही हैं।

अब हम एक ऐसा प्रमाण भी उपस्थित करते हैं, जिससे स्पष्ट हो जाएगा कि ये सूत्र प्राचीन ग्रन्थकारों द्वारा पाणिनि के नाम से स्मृत भी हैं। तैत्तिरीय प्रातिशाख्य की **'त्रिरत्न-भाष्य'** नामक व्याख्या का रचयिता **सोमयार्य** लिखता है—

'सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वा न सन्ति इति पाणिनीयेऽपि' । मैसूर संस्क०, पृष्ठ ४५० ।

इस प्रमाण की उपस्थिति में पाणिनीय शिक्षा-सूत्रों के सम्बन्ध में कोई विवाद उठ ही नहीं सकता। अब हम उसके वृद्धपाठ के विषय में लिखते हैं—

पाणिनीय शिक्षासूत्र का वृद्धपाठ—पाणिनीय शिक्षासूत्रों का जो वृद्धपाठ हम इस संस्करण में प्रकाशित कर रहे हैं, उसकी उपलब्धि की कथा भी विचित्र है। वह इस प्रकार है—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन् १९३९ में 'दि इण्डियन रिसर्च इन्स्टीट्यूट' कलकत्ता से 'आपिशली शिक्षा' नाम से एक शिक्षा प्रकाशित हुई। पुस्तक के मुख पृष्ठ पर 'अध्यापक अमूल्यचरण विद्याभूषण कर्तृक सम्पादित और अनूदित' शब्द छपे हुए हैं। इसमें बंगला अनुवाद तो अवश्य है, परन्तु सम्पादन के नाम पर किया जानेवाला कोई भी प्रयत्न इसमें नहीं है। हां, तीन स्थानों पर कोष्ठक में प्रश्नचिह्न (?) अवश्य उपलब्ध होते हैं। अस्तु, हमारे लिए तो यह प्रयत्नाभाव भी वरदान-रूप सिद्ध हुआ। उक्त ग्रन्थ को देखने से विदित होता है कि मुद्रित ग्रन्थ उपलब्ध हस्तलेख की अक्षरशः प्रतिलिपिमात्र है, और वह लेखकप्रमाद से वहुत भ्रष्ट हो गया है। पाठ स्थान-स्थान पर खण्डित और आगे-पीछे हो रहा है।

हमारी दृष्टि में यह ग्रन्थ सन् १९५३ में आया था। इस पर **'आपिशली शिक्षा'** नाम छपा होने से चिरकाल तक हमने इस पर ध्यान नहीं दिया। एक दिन विचार उत्पन्न हुआ कि इसको आपिशल शिक्षा-सूत्र से मिलाया जाय। तब हमने सन् १९४९ में स्वयं मुद्रापित आपिशल शिक्षासूत्रों से मिलान करना आरम्भ किया। उस तुलना में **ङञणनमा नासिकास्थानाः** पाठ ने हमारा ध्यान विशेषरूप से आकृष्ट किया, क्योंकि यह वर्णानुक्रम पाणिनीय शिक्षा-सूत्र में है। आपिशल शिक्षा में **ञमङणनाः** पाठ है। इसके पश्चात् तृतीय प्रकरण के **विवृतकरणा वा** सूत्र ने यह बोध कराया कि सम्भव है यह शिक्षा पाणिनीय ही हो, आपिशल शिक्षा न हो। इस दृष्टि से सम्पूर्ण सूत्रों की तुलना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्रों के साथ की, तब यह निश्चय हो गया कि जहां-जहां भी अमूल्यचरण विद्याभूषण द्वारा प्रकाशित शिक्षा का पाठ आपिशल शिक्षा से भिन्न है, वहां-वहां वह सर्वत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित शिक्षासूत्रों से मिलता है। इस तुलना से इतना निश्चय हो गया कि यह पाठ पाणिनीय शिक्षा का ही है, आपिशल शिक्षा का नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पर विचार उत्पन्न हुआ कि श्री अमूल्यचरणजी ने इस ग्रन्थ के ऊपर **आपिशली शिक्षा** शीर्षक किस आधार पर छापा ? इसके लिए हमने उनकी भूमिका पढ़ी। उसमें उन्होंने इस हस्तलेख के सम्बन्ध में कहीं पर भी नहीं लिखा कि कोश के आदि वा अन्त में 'आपिशली शिक्षा' नाम का उल्लेख है। प्रतीत होता है कि श्री अमूल्यचरणजी ने अष्टम प्रकरण के—

स एवमापिशलेः पञ्चदशभेदाख्या वर्णधर्मा भवन्ति ॥८॥

सूत्र में आपिशलि नाम देखकर ग्रन्थ के आद्यन्त में 'आपिशली शिक्षा' का नाम जोड़ दिया।

अमूल्यचरणजी द्वारा प्रकाशित पाठ अत्यन्त भ्रष्ट है। केवल उसी के आधार पर उस ग्रन्थ का सम्पादन कठिन है। सम्भवतः इसी कारण अमूल्यचरणजी ने हस्तलेख के अनुरूप ही उसे यथातथरूप में छाप दिया। इससे यह भी प्रतीत होता है कि उन्हें डा० रघुवीरजी द्वारा प्रकाशित 'आपिशलशिक्षा,' और स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित 'पाणिनीयशिक्षा' का ज्ञान नहीं था, अन्यथा वे उनकी सहायता से ग्रन्थ का अच्छा सम्पादन कर सकते थे।

हमने उक्त दोनों शिक्षासूत्रों के आधार पर, तथा विविध ग्रन्थों में उद्धृत सूत्रों के साहाय्य से इस अमूल्य निधि का सम्पादन किया है। जब हमने इस ग्रन्थ के पाठ का सम्पादन कर लिया, तब इस पाठ और स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित पाठ की तुलना से विदित हुआ कि हमारे द्वारा सम्पादित शिक्षा-पाठ वृद्धपाठ है, और स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित पाठ लघुपाठ है। अनेक प्राचीन ग्रन्थों के वृद्ध और लघुपाठ उपलब्ध होते हैं। पाणिनि के सूत्रपाठ धातुपाठ गणपाठ उणादिपाठ सभी के लघु पाठ और वृद्ध पाठ हैं।[1] इसी प्रकार उनकी सूत्रात्मिका शिक्षा के भी वृद्ध और लघु

---

१. इन पाठों के विषय में हमारे 'संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास' के तत्तत् प्रकरण देखिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाठ हों, तो आश्चर्य ही क्या है। प्राचीन परम्परा के अनुसार वृद्ध और लघु दोनों प्रकार के पाठ एक ही आचार्य द्वारा विभिन्न प्रकार से प्रवचन[1] के कारण उत्पन्न हुए हैं।

अब हम पाणिनीय शिक्षा के दोनों पाठों की कुछ तुलना उपस्थित करते हैं—

लघु-पाठ	वृद्ध-पाठ
[वर्णास्] त्रिषष्टिः	स्थानकरणप्रयत्नेभ्यो वर्णास्त्रिषष्टिः ।४। चतुःषष्टिरित्येके । ५ । [इति] संयुक्ता वर्णाः ।१।२४।।
आभ्यन्तरस्तावत्	स्वस्थान आभ्यन्तरस्तावत् ।३।४।। तेभ्य ए ओ विवृततरौ ।३।९।। ताभ्यामै औ । ३।१० ।। ताभ्यामाकारः । ३।११।। कादयो मावसानाः स्पर्शाः । ४।८।। यादयोऽन्तस्थाः । ४।९ ।।
अवर्णो ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन चानुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः ।	एवं व्याख्याने वृत्तिकाराः पठन्ति—अष्टादश-प्रभेदमवर्णकुलमिति । तत्कथमुक्तम्— ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन च । आनुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः । ६।१२ ।। उत्साहः प्रयत्नः । ७।६ ।। स्पृष्टतादिर्वर्णगुणः । ७।७ ।।

---

१. प्राचीन आचार्य शास्त्रीय ग्रन्थ लिखा नहीं करते थे, अपितु पढ़ाया करते थे, अतः वे प्रोक्त कहाते थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन उद्धरणों के विपरीत लघुपाठ में कुछ ऐसे पाठ भी हैं, जो वृद्धपाठ में लघुरूप में हैं, अथवा नहीं हैं। यथा—

लघुपाठ	वृद्धपाठ
द्वे द्वे वर्णे सन्ध्यक्षराणामारम्भके भवत इति।	द्विवर्णानि सन्ध्यक्षराणि।

सप्तम प्रकरण के निम्न २-५ सूत्र वृद्धपाठ में नहीं हैं—

तत्रैते कौशिकीयाः श्लोकाः—

सर्वान्तेऽयोगवाहत्वाद् विसर्गादिरिहाष्टकः।
अकार उच्चारणार्थो व्यञ्जनेष्वनुवध्यते॥
⌣क⌣ पयोः कपकारौ च तद्वर्गीयाश्रयत्वतः।
पलक्क्नी चख्खनतुर्जग्गिमर्जग्घ्नुरित्यत्र यद् वपुः॥
नासिक्येनोक्तं कादीनां त इमेऽयमाः।
तपामुकारः संस्थानवर्गीयलक्षकः॥

लघु पाठ में सर्वत्र आवश्यक नहीं कि उस पाठ में वृद्धपाठ की अपेक्षा लघुत्व ही हो। समूहावलम्बन से लघुत्व और वृद्धत्व देखा जाता है। लघुपाठ के सप्तम प्रकरण के जो सूत्र उद्धृत किए हैं, उन के विषय में यह भी सम्भावना हो सकती है कि लघुपाठ के किसी हस्तलेख में ये श्लोक किसी पाठक ने ग्रन्थान्तर से ग्रन्थ के प्रान्त (हाशिये) पर लिखे हों, और उत्तरकाल के प्रतिलिपिकर्त्ता ने उन्हें छूटा हुआ पाठ मानकर मूल में सन्निविष्ट कर दिया हो।

यतः जब तक लघुपाठ का अन्य हस्तलेख उपलब्ध न हो जाए, कुछ समस्याएं बनी ही रहेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पाणिनीयशिक्षा

वृद्ध-पाठः

१. आकाशवायुप्रभवः शरीरात्
समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः।
स्थानान्तरेषु प्रविभज्यमानो
वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः॥

२. तमक्षरं ब्रह्म परं पवित्रं
गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्राः।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव
सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति॥

३. स्थानमिदं करणमिदं
प्रयत्न एष द्विधाऽनिलः।
स्थानं पीडयति, वृत्तिकारः
प्रक्रम एषोऽथ नाभिततलात्॥

४. स्थानकरणप्रयत्नपरेभ्यो
वर्णास्त्रिषष्टिः।[1]

५. चतुःषष्टिरित्येके।

६. तत्र वर्णानां केषां किं स्थानं
किं करणं प्रयत्नश्च ते, द्विधा
विजभते (?)।

लघु-पाठः

१. आकाशवायुप्रभवः शरीरात्
समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः।
स्थानान्तरेषु प्रविभज्यमानो
वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः।

२. तमक्षरं ब्रह्म परं पवित्र
गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्राः।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव
सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति॥

३. [वर्णास्] त्रिषष्टिः।

४. स्थानमिदं करणमिदं
प्रयत्न एष द्विधाऽनिलः।
स्थानं पीडयति, वृत्तिकारः
प्रक्रम एषोऽथ नाभितलात्॥

१—स्थान-प्रकरणम्

१. तत्र स्थानं तावत्।

---

१. तुलना कार्या—त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते स्थिताः (मताः) इत्यर्वाचीनायां पाणिनीयशिक्षानाम्ना प्रसिद्धायां शिक्षायाम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्ध-पाठः	लघु-पाठः
२. अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः।[1]	१. अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः।
३. हविसर्जनीयावुरस्यावेकेषाम्।	२. हविसर्जनीयावुरस्यावेकेषाम्।
४. जिह्वामूलीयो जिह्व्यः।	३. जिह्वामूलीयो जिह्व्यः।
५. कवर्गावर्णानुस्वारजिह्वामूलीया जिह्व्या एकेषाम्।	४. कवर्ग ऋवर्णश्च जिह्व्यः।
६. सर्वमुखस्थानमवर्णमित्येके।[2]	५. सर्वमुखस्थानमवर्णमित्येके।
७. कण्ठ्यानास्यमात्रानित्येके।	६. कण्ठ्यानास्यमात्रानित्येके।
८. इचुयशास्तालव्याः।[3]	७. इचुयशास्तालव्याः।
९. ऋटुरषा मूर्धन्याः।[4]	८. ऋटुरषा मूर्धन्याः।
१०. रेफो दन्तमूलीय एकेषाम्।	९. रेफो दन्तमूलीय एकेषाम्।
११. दन्तमूलस्तु तवर्गः।	१०. दन्तमूलस्तु तवर्गः।
१२. लृतुलसा दन्त्याः।[5]	११. लृतुलसा दन्त्याः।
१३. वकारो दन्त्योष्ठ्यः।	१२. वकारो दन्त्योष्ठ्यः।
१४. सृक्किणीस्थानमेकेषाम्।	१३. सृक्किणीस्थानमेकेषाम्।
१५. उपूपध्मानीया ओष्ठ्याः।[6]	१४. उपूपध्मानीया ओष्ठ्याः।

---

१. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० सूत्र ५, पृष्ठ २२; १।१।९, पृष्ठ ५८), पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च।

२. तुलना कार्या—सर्वमुखस्थानमवर्णमेके इच्छन्ति। महाभाष्य १।१।९॥

३. उद्धृत न्यासे (प्रत्या० सूत्र ५, पृष्ठ २२; १।१।९, पृष्ठ ५८); पदमञ्जर्यां (१।१।९ पृष्ठ ५८); न्यायमञ्जर्यां (पृष्ठ २०५) च।

४. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० सू० ५ पृष्ठ २०, २२; १।१।९, पृष्ठ ५८) पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च।

५. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० ५, पृष्ठ २२; १।१।९, पृष्ठ ५८); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च।

६. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० ५, पृष्ठ २२; १।१।९, पृष्ठ ५८); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
१६. अनुस्वारयमा नासिक्याः ।[1]	१५. अनुस्वारयमा नासिक्याः ।
१७. कण्ठ्यनासिक्यमनुस्वारमेके ।	१६. कण्ठ्यनासिक्यमनुस्वारमेके ।
१८. यमाश्च नासिक्यजिह्वामूलीया एकेषाम् ।	१७. यमाश्च नासिक्यजिह्वामूलीया एकेषाम् ।
१९. ए ऐ कण्ठतालव्यौ ।[2]	१८. एदैतौ कण्ठ्यतालव्यौ ।
२०. ओ औ कण्ठोष्ठ्यौ ।[3]	१९. ओदौतौ कण्ठ्योष्ठ्यौ ।
२१. ङञणनमाः स्वस्थाननासिकास्थानाः ।	२०. ङञणनमाः स्वस्थाननासिकास्थानाः ।
२२. द्विवर्णानि सन्ध्यक्षराणि ।	२१. द्वे द्वे वर्णे सन्ध्यक्षराणामारम्भके भवत इति ।
२३. सरेफ ऋवर्णः ।[4]	२२. सरेफ ऋवर्णः ।
२४. [इति] संयुक्ताः वर्णाः ।	
२५. एवमेतानि स्थानानि ।	

२—करण-प्रकरणम्

वृद्धपाठः	लघुपाठः
१. करणमपि ।	
२. जिह्व्यतालव्यमूर्धन्यदन्त्यानां जिह्वा करणम् ।	१. जिह्व्यतालव्यमूर्धन्यदन्त्यानां जिह्वा करणम् ।

---

१. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० ५, पृष्ठ २५; १।१।९, पृष्ठ ५९) ।

२. उद्धृतं न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५८; १।१।४८, पृष्ठ ९२); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च ।

३. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० ५, पृष्ठ २०; १।१।९, पृष्ठ ५८; १।१।४८, पृष्ठ ९२); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च ।

४. द्र०—येषां दर्शनमर्धमात्रा कालो रेफ ऋकारेऽस्तीति तन्मतेन······। येषामपि दर्शनं मात्राचतुर्थभागो रेफ ऋकार इति ···· । महाभाष्यप्रदीपे ८।४।१ कैयटः । अत्रापिशलशिक्षायामस्मिन् सूत्रे निर्दिष्टा टिप्पण्यपि द्रष्टव्या ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
३. जिह्वामूलेन जिह्व्यानाम् ।	२. जिह्वामूलेन जिह्व्यानाम् ।
४. जिह्वामध्येन तालव्यानाम् ।	३. जिह्वामध्येन तालव्यानाम् ।
५. जिह्वोपाग्रेण मूर्धन्यानाम् ।	४. जिह्वोपाग्रेण मूर्धन्यानाम् ।
६. जिह्वाग्राधः करणं वा ।	५. जिह्वाग्राधः करणं वा ।
७. जिह्वाग्रेण दन्त्यानाम् ।	६. जिह्वाग्रेण दन्त्यानाम् ।
८. शेषाः स्वस्थानकरणाः ।	
९. इत्येतत् करणम् ।	७. इत्येतदन्तःकरणम् ।

३—अन्तःप्रयत्न-प्रकरणम्

१. प्रयत्नोऽपि द्विविधः ।	१. प्रयत्नोऽपि द्विविधः ।
२. आभ्यन्तरो बाह्यश्च ।	२. आभ्यन्तरो बाह्यश्च ।
३. स्वस्थाने आभ्यन्तरस्तावत् ।	३. आभ्यन्तरस्तावत् ।
४. स्पृष्टकरणाः स्पर्शाः ।[1]	४. स्पृष्टकरणाः स्पर्शाः ।
५. ईषत्स्पृष्टकरणा अन्तस्थाः ।[2]	५. ईषत्स्पृष्टकरणा अन्तस्थाः ।
६. ईषद्विवृतकरणा ऊष्माणः ।	६. ईषद्विवृतकरणा ऊष्माणः ।
७. विवृतकरणा वा ।	७. विवृतकरणा वा ।
८. विवृतकरणाः स्वराः ।[3]	८. विवृतकरणाः स्वराः ।
९. तेभ्य ए ओ विवृततरौ ।[4]	
१०. ताभ्यामै औ ।[5]	

---

१. उद्धृतं न्यासे(१।१।९, पृष्ठ ५९); पदमञ्जर्यां(१।१।९, पृष्ठ ५७)च ।

२. उद्धृत न्यासे(१।१।९, पृष्ठ ५९)पदमञ्जर्यां; (१।१।९, पृष्ठ ५७)च ।

३. उद्धृतं न्यासे(प्रत्या० सूत्र १, पृष्ठ ८); पदमञ्जर्यां (प्रत्या० १, पृष्ठ १८) च ।

४. उद्धृतं न्यासे(प्रत्या० १, पृष्ठ ८)पदमञ्जर्यां(प्रत्या० १, पृष्ठ १८)च ।

५. उद्धृतं पदमञ्जर्याम् (प्रत्या० १, पृष्ठ १८); न्यासे तु 'ताभ्यामपि ऐ औ' इत्येवं पाठः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
११. ताभ्यामकारः ।[1]	
१२. संवृतस्त्वकारः ।[2]	९. संवृतस्त्वकारः ।
१३. इत्येषोऽन्तःप्रयत्नः ।	१०. इत्येषोऽन्तःप्रयत्नः ।

४—बाह्यप्रयत्न-प्रकरणम्

१. अथ बाह्याः प्रयत्नाः ।	१. अथ बाह्याः प्रयत्नाः ।
२. वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसविसर्जनीयजिह्वामूलीयोपध्मानीया यमौ च प्रथमद्वितीयौ विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदाना अघोषाः ।[3]	२. वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसविसर्जनीयजिह्वामूलीयोपध्मानीया यमौ च प्रथमद्वितीयौ विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदानाश्चाघोषाः ।
३. वर्गयमानां प्रथमा अल्पप्राणा इतरे सर्वे महाप्राणाः ।[4]	३. एके अल्पप्राणा इतरे महाप्राणाः ।
४. वर्गाणां तृतीयचतुर्था अन्तस्था हकारानुस्वारौ यमौ च तृतीयचतुर्थौ नासिक्याश्च संवृतकण्ठा नादानुप्रदाना घोषवन्तश्च ।[5]	४. वर्गाणां तृतीयचतुर्था अन्तस्था हकारानुस्वारौ यमौ च तृतीयचतुर्थौ नासिक्याश्च संवृतकण्ठा नादानुप्रदाना घोषवन्तश्च ।

---

१. 'ताभ्यामप्याकारः' इत्येवं न्यासे (प्रत्या० १; पृष्ठ ८); पदमञ्जर्यां (प्रत्या० १, पृष्ठ १८) च पाठः ।

२. 'संवृतोऽकारः, इत्येवं न्यासे (प्रत्या० १, पृष्ठ ८); पदमञ्जर्यां (प्रत्या० १, पृष्ठ १८) च पाठः ।

३. उद्धृतं न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५७; १।१।५०, पृष्ठ ८५); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७) च ।

४. 'वर्गयमानां प्रथमे प्रथमेऽल्पप्राणा इतरे महाप्राणाः' इत्येवं पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७); न्यासे (वर्ग्यंयमानां' पाठा० १।१।९, पृष्ठ ५७) च पठ्यते ।

५. उद्धृतं न्यासे (प्रत्या० ५, पृष्ठ २५, १।१।९, पृष्ठ ५७; १।१।५०,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
५. वर्गयमानां तृतीया अन्तस्थाश्चाल्पप्राणा इतरे सर्वे महाप्राणाः ।[1]	५. [एकेऽन्तस्थाश्चाल्पप्राणा इतरे सर्वे महाप्राणाः] ।
६. यथा तृतीयास्तथा पञ्चमाः ।[2]	६. यथा तृतीयास्तथा पञ्चमाः ।
७. आनुनासिक्यमेषामधिको गुणः ।[3]	७. आनुनासिक्यमेषामधिको गुणः ।
८. कादयो मावसानाः स्पर्शाः ।[4]	
९. यादयोऽन्तस्थाः ।[5]	
१०. शादय उष्माणः ।[6]	८. शादय उष्माणः ।
११. सस्थानेन द्वितीयाः ।[7]	९. [स]स्थानेन द्वितीयाः ।

पृष्ठ ८५) पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७) च । पदमञ्जर्यां न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५७); उद्धरणे 'नासिक्याश्च' पदं नास्ति) ।

१. उद्धृतं न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५७; १।१।५०, पृष्ठ ९५—पूर्वोद्धरणे 'वर्ग्य' पाठः); पदमञ्जर्यां (१।९, पृष्ठ ५८—'सर्वे' पदं नास्ति) च ।

२. उद्धृतं न्यासे(प्रत्या० ५, पृष्ठ २५; १।१।९, पृष्ठ ५७), पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८) च ।

३. उद्धृतं न्यासे (१।१।९ पृष्ठ ५७); पदकञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५८)च ।

४. उद्धृतं न्यासे(१।१।९, पृष्ठ ५७); पदञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७) च ।

५. न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५७); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७) च 'यरलवा अन्तस्थाः' इत्येवं पठ्यते, सोऽर्थतोऽनुवादो द्रष्टव्यः ।

६. उद्धृतं न्यासे (१।१।५० पृष्ठ ९६); पदमञ्जर्यां(१।१।५०, पृष्ठ ९७) च । यतु न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५७); पदमञ्जर्यां (१।१।९, पृष्ठ ५७) च 'शषसहा उष्माणः' इत्येवं पाठ उपलभ्यते, सोऽर्थतोऽनुवादो द्रष्टव्यः ।

७. उद्धृतं न्यासे (१।१।५०, पृष्ठ ९६, ९७); पदमञ्जर्यां (१।१।५० पृष्ठ ९७) च ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
१२. हकारेण चतुर्थाः ।[1]	१०. हकारेण चतुर्थाः ।
१३. इत्येष बाह्यः प्रयत्नः ।	

५—स्थानपीडन-प्रकरणम्

१. तत्र स्पर्शयमवर्णकरो वायुरयःपिण्डवत् स्थानमभिपीडयति ।	१. तत्र स्पर्शयमवर्णकरो वायुरयःपिण्डवत् स्थानमभिपीडयति ।
२. अन्तस्थवर्णकरो वायुर्दारुपिण्डवत् ।	२. अन्तस्थवर्णकरो वायुर्दारुपिण्डवत् ।
३. ऊष्मस्वरवर्णकारो वायुरूर्णापिण्डवत् ।	३. ऊष्मस्वरवर्णकारो वायुरूर्णापिण्डवत् ।
	४. उक्ताः स्थानकरणप्रयत्नाः ।

६—वृत्तिकार-प्रकरणम्

१. एवं व्याख्याने वृत्तिकाराः पठन्ति--अष्टादशप्रभेदमवनकुलमिति । तत्कथमुक्तम् ?	
२. ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन च । आनुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः ।।इति।	१. अवर्णो ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन चानुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः ।
३. एवमिवर्णादयः ।	२. एवमिवर्णादयः ।
४. लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति ।[2]	३. लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति ।

---

१. उद्धृतं न्यासे(१।१।५०, पृष्ठ ९६, ९७); पदमञ्जर्यां (१।१।५०, पृष्ठ ९७) च।

२. उद्धृतं काशिकायाम्(१।१।९) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः

५. तं द्वादशप्रभेदमाचक्षते ।[1]

६. यदृच्छाशब्देऽशक्तिजानुकरणे वा यदा दीर्घाः स्युस्तदाऽष्टादशप्रभेदं ब्रुवते क्लृपक इति ।

७. सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वा न सन्ति ।[2]

८. तान्यपि द्वादशप्रभेदानि ।[3]

९. छन्दोगानां सात्यमुग्रिराणायनीया अर्धमेकारमर्धमोकारं [च] पठन्ति ।[4]

१०. तेषामष्टादश प्रभेदानि ।

११. अन्तस्था द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ।[5]

१२. रेफोष्मणां सवर्णा न सन्ति ।[6]

लघुपाठः

४. तं द्वादशभेदमाचक्षते ।

५. यदृच्छाशब्देऽशक्तिजानुकरणे वा यदा दीर्घाः स्युस्तदाऽष्टादशभेदं ब्रुवते क्लृपक इति ।

६. सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वा न सन्ति ।

७. तान्यपि द्वादशप्रभेदानि ।

८. अन्तस्था द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ।

९. रेफोष्मणां सवर्णा न सन्ति ।

---

१. उद्धृतं काशिकायाम्(१।१।९) ।

२. उद्धृतं काशिकायाम्(१।१।९) । 'पाणिनीयेऽपि' इत्येवं कृत्वोद्धृतः । तैत्तिरीयप्रतिशाख्यस्य त्रिरत्नभाष्ये (मैसूर सं० पृ० ४५०) ।

३. उद्धृतं काशिकायाम् (१।१।९) ।

४. तुलना कार्या—ननु च भोश्छन्दोगानां सात्यमुग्रिराणायनीया अर्धमेकारमर्धमोकारं चाधीयते इति । महाभाष्ये प्रत्या० ३; १।१।४७ सूत्रे च ।

५. स्वल्पपाठान्तरेणोद्धृतं काशिकायाम्(१।१।९); पदमञ्जर्यां(प्रत्या० ६, पृष्ठ ३३) च ।

६. उद्धृतं महाभाष्ये(प्रत्या० ५) ; काशिकायां (१।१।९); पदमञ्जर्यां (प्रत्या० ५); न्यासे(प्रत्या० ५) च ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः	लघुपाठः
१३. वर्ग्यो वर्ग्येण सवर्णः ।[1]	१०. वर्ग्यो वर्ग्येण सवर्णः ।

७—प्रक्रम-प्रकरणम्

वृद्धपाठः	लघुपाठः
१. एष क्रमो वर्णानाम् ।	१. एष क्रमो वर्णानाम् ।
२. तत्रैषां स्थानकरणप्रयत्नानां कथं प्रसिद्धिरित्युच्यते ।	२. तत्रैते कौशिकीयाः श्लोकाः ।
	३. सर्वान्तेऽयोगवाहत्वाद् विसर्गादिरिहाष्टकः । अकार उच्चारणार्थो व्यञ्जनेष्वनुबध्यते ॥
	४. ≍क≍पयोः कपकारौ च तद्वर्गीयाश्रयत्वतः । पालिक्क्नी चख्ख्नतुर्जग्मिर्जघ्घ्नुरित्यत्र यद्वपुः ॥
	५. नासिक्येनोक्तं कादीनां त इमेऽयमाः । तेषामुकारः संस्थान वर्गीय लक्षकः ॥
	६. उक्ताः स्थानकरणप्रयत्नाः ।
३. इह यत्र स्थाने वर्णा उपलभ्यन्ते तत् स्थानम् ।	७. इह यत्र स्थाने वर्णा उपलभ्यन्ते तत् स्थानम् ।
४. येन निर्वृत्यन्ते तत् करणम् ।	८. येन निर्वृत्यन्ते तत् करणम् ।
५. प्रयतनं प्रयत्नः ।[2]	९. प्रयतनं प्रयत्नः ।

१. उद्धृतं महाभाष्यदीपिकायां(पृष्ठ १८४ हस्त०)काशिकायां(१।१।९)च
२. उद्धृतं महाभाष्ये (१।१।९) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः **लघुपाठः**

६. उत्साह प्रयत्नः ।

७. स्पृष्टतादि वर्णगुणः ।

८—नाभितल-प्रकरणम्

१. [1]तत्र नाभिप्रदेशात् प्रयत्न-प्रेरितः प्राणो[2] नाभिवायु-रूर्ध्वमाक्रामन्नुरआदीनां स्थानानामन्यतमस्मिन् स्थाने प्रयत्नेन विधार्यते । विधार्यमाणः सोऽपि तत्स्थानानि विहन्ति[3] । तस्मात् स्थानाभिघाताद् ध्वनिरुत्पद्यत आकाशे, सा वर्णश्रुतिः । स वर्णस्यात्मलाभः ।

१. तत्र नाभिप्रदेशात् प्रयत्न-प्रेरितः प्राणो नाम वायु-रूर्ध्वमाक्रामन्नुरआदीनां स्थानानामन्यतमस्मिन् स्थाने प्रयत्नेन विधार्यते । [इति ऽग्रे ग्रन्थपातः]

[इति पाणिनीयशिक्षा-सूत्राणां लघुपाठः ।।]

२. तत्र वर्णानामुत्पद्यमाने[4] यदा स्थानकरणप्रयत्नपर्यन्तं परस्परं स्पृशति[5] सा स्पृष्टता ।

३. यदेषत् स्पृशति[6] सा ईषत्स्पृष्टता ।

---

१. न्यासे (१।१।९, पृष्ठ ५६, ५७) अस्य प्रकरणस्य १-२३ सूत्राण्युद्धृतानि ।

२. प्राणो नाम ऊर्ध्वमाक्रमन्नुरःप्रभृतीनामन्यतमस्मिन् —न्यासे । द्रष्टव्यमत्रास्यैव प्रकरणस्याष्टमे चतुर्दशे च सूत्रे नाभिपदम् । लघुपाठे तु 'प्राणो नाम' इत्येव पठ्यते ।

३. स विधार्यमाणः स्थानमभिहन्ति । ततः—न्यासे ।

४. वर्णध्वनावुत्पद्यमाने—न्यासे ।

५. ० प्रयत्नाः परस्परं स्पृशन्ति - न्यासे ।

६. ईषद् यदा स्पृशन्ति —न्यासे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः

४. यदा दूरेण स्पृशति[१] सा विवृता[२] ॥

५. यदा सामीप्येन स्पृशति[३] सा संवृता ।[४]

६. एषोऽन्तः प्रयत्नः ।[५]

७. अथ बाह्यः प्रयत्नः ।[५]

८. स एवेदानीं प्राणो नाभिवायुरू[६]र्ध्वमाक्रम्य मूर्ध्नि प्रतिहते[७] निवृत्तः तदा कोष्ठे संहन्यमाने[८] गलबिलस्य संवृतत्वात् संवारो नाम वर्णधर्मो जायते[९], विवृतत्वाद् विवारः ।

९. तौ संवारविवारौ ।[१०]

१०. तत्र यदा कण्ठबिलं संवृतत्वं तदा नादो जायते ।[११]

११. विवृते तु कण्ठबिले श्वासोऽनुजायते ।[१२]

१२. तौ श्वासनादावनुप्रदानावित्याचक्षते ।[१३]

१३. अन्ये श्वासनादानुप्रदानं व्यञ्जने नादवत् ।[१४]

---

१. दूरेण यदा स्पृशन्ति—न्यासे । न्यासे तु चतुर्थपञ्चमसूत्रयोः पौर्वापर्यं विद्यते । २. द्रष्टव्यमत्रास्यैव प्रकरणम् २६ षड्विंशं सूत्रम् ।

३. सामीप्येन यदा स्पृशन्ति—न्यासे ।

४. द्रष्टव्यमत्रास्यैव प्रकरणम् २६ षड्विंशं सूत्रम् ।

५. नास्ति सूत्रम्— न्यासे ।

६. स एव प्राणो नाम वायुरूर्ध्वमाक्रापन्—न्यासे ।

७ प्रतिहतो०—न्यासे ।

८. निवृत्तो यदा कोष्ठमभिहन्ति तदा कोष्ठेऽभिहन्यमाने—न्यासे ।

९. वर्णधर्मं उपजायते—न्यासे । १०. नास्ति सूत्रं - न्यासे ।

११. संवृते गलबिलेऽव्यक्तः शब्दो नादः—न्यासे । न्यासेऽर्थतोऽनुवादः स्यात् ।

१२. विवृते श्वासः—न्यासे । न्यासेऽर्थतोऽनुवादः स्यात् ।

१३. तौ श्वासनादानुप्रदानाविति केचिदाचक्षते—न्यासे ।

१४. अन्ये तु ब्रुवते—अनुप्रदानमनुस्वानो घण्टानिर्ह्रादवत्—न्यासे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः

१४. तत्र यदा नाभिस्थलजध्वनौ[1] नादोऽनुप्रदीयते, तदा नादध्वनि-संसर्गाद्[2] घोषो जायते।

१५. यदा श्वासोऽनुप्रदीयते तदा श्वास[ध्वनि]संसर्गाद्[3] अघोषो जायते।[4]

१६. सा घोषवदघोषता।[5]

१७. महति वायौ महाप्राणः।

१८. अल्पे वायावल्पप्राणः।

१९. साल्पप्राणमहाप्राणता।[6]

२०. [यत्र]महाप्राणत्वम् ऊष्माणस्ते।[7]

२१. तत्र[8] यदानुसारिप्रयत्नस्तीव्रो भवति, तदा गात्राणां[9] निग्रहः, कण्ठविलस्य चाल्पत्व[10] स्वरस्य च वायोस्तीव्रगतित्वाद् रौक्ष्यं भवति तमुदात्तमाचक्षते।

२२. यदा मन्दः प्रयत्नो भवति, तदा गात्राणां[11] प्रसन्नत्वं कण्ठबिलस्य च बहुत्वं[12] स्वरस्य च वायोर्मन्दगतित्वात् स्निग्धता भवति। तमनुदात्तमाचक्षते।

२३. उदात्तानुदात्त[13]सन्निकर्षात् स्वरित इति।

२४. स एवं प्रयत्नोऽभिनिवृत्तः कृत्स्नः प्रयत्नो भवति।

२५. स एवमापिशलेः पञ्चदशभेदाख्या वर्णधर्मा भवन्ति।

---

१. यदा स्थानाभिघातजे ध्वनौ—न्यासे।
२. ० ध्वनिसंगाद्—न्यासे।
३. ० ध्वनिसंगाद्—न्यासे।
४. जायते—नास्ति न्यासे।
५. सूत्रं नास्ति—न्यासे।
६. सूत्रं नास्ति—न्यासे।
७. सूत्रं नास्ति—न्यासे।
८. तत्र—नास्ति। यदा सर्वाङ्गानुसारी—न्यासे।
९. गात्रस्य—न्यासे।
१०. कण्ठविवरस्य चाणुत्वं—न्यासे।
११. गात्रस्य स्रंसवं—न्यासे।
१२. महत्त्वं—न्यासे।
१३. उदात्तानुदात्तस्वरसन्निकर्षात्—न्यासे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृद्धपाठः

२६. तद्यथा—स्पृष्टता ईषत्स्पृष्टता विवृता संविवृता च ।
संवारविवारौ श्वासनादौ घोषवदघोषता ।
अल्पप्राणमहाप्राणता उदात्तानुदात्तस्वरिता इति ।

२७. इदानीं शिक्षाग्रन्थः श्लोकैरुपसंह्रियते—

२८. अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा ।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥

२९. स्पृष्टत्वमीषत्स्पृष्टत्वं संवृतत्वं तथैव च ।
विवृतत्वं च वर्णानामन्तःकरणमुच्यते ॥

३०. कालो विवारसंवारौ श्वासनादावघोषता ।
घोषोऽल्पप्राणता चैव महाप्राणः स्वरास्त्रयः ॥

३१. बाह्यं करणमाहुस्तान् वर्णानां वर्णवेदिनः ॥

—: इति पाणिनीयशिक्षासूत्राणां वृद्धपाठः समाप्तः :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठ परिशिष्ट

अष्टाध्यायीसूत्राणां सूची

अ अ ८।४।६७
अंशं हारी ५।२।६९
अकः सवर्णे दीर्घः ६।१।९७
अकथितं च १।४।५१
अकर्तरि च कारके० ३।३।१९
अकर्तर्य्रृणे पञ्चमी २।३।२४
अकर्मकाच्च १।३।२६
अकर्मकाच्च १।३।३५
अकर्मकाच्च १।३।४५
अकर्मधारये राज्यम् ६।२।१२९
अकृच्छ्रे प्रियसुख० ८।१।१३
अकृत्सार्वधातुकयो० ७।४।२५
अके जीविकार्थे ६।२।७३
अकेनोर्भविष्यदाधम० २।३।७०
अक्षशलाकासंख्याः० २।१।१०
अक्षेषु ग्लहः ३।३।७०
अक्षोऽन्यतरस्याम् ३।१।७५
अक्ष्णोऽदर्शनात् ५।४।७६
अगारान्ताट्ठन् ४।४।७०
अगारैकदेशे प्रघणः० ३।३।७९
अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ८।२।९२
अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ८।३।८२
अग्नेर्ढक् ४।२।३२
अग्नौ चेः ३।२।९१
अग्नौ परिचाय्यो० ३।१।१३१
अग्राख्यायामुरसः ५।४।९३
अग्राद्यत् ४।४।११६
अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृष० ५।४।१४५
अङितश्च ६।४।१०३
अङ्ग इत्यादौ च ६।१।११५
अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ८।२।९६
अङ्गस्य ६।४।१
अङ्गानि मैरेये ६।२।७०
अङ्गाऽप्रातिलोम्ये ८।१।३३
अङ्गुलेर्दारुणि ५।४।११४
अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ५।३।१०८
अ च ४।३।३१
अच उपसर्गात्तः ७।४।४७
अचः ६।४।१३८
अचः कर्तृयकि ६।१।१९५
अचः कर्मकर्तरि ३।१।६२
अचः परस्मिन् पूर्ववि० १।१।५६
अचतुरविचतुरसुच० ५।४।७७
अचश्च १।२।२८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अचस्तास्वत्थल्य० ७।२।६१
अचित्तहस्तिधेनो० ४।२।४६
अचित्താददेशका० ४।३।९६
अचि र ऋतः ७।२।१००
अचि विभाषा ८।२।२१
अचि श्नुधातुभ्रुवां० ६।४।७७
अचो ञ्णिति ७।२।११५
अचोऽन्त्यादि टि १।१।६३
अचो यत् ३।१।९७
अचो रहाभ्यां द्वे ८।४।४५
अच्कावशक्तौ ६।२।१५६
अच्च घेः ७।३।११९
अच्छगत्यर्थवदेषु १।४।६८
अच्प्रत्यन्ववपूर्वा० ५।४।७५
अजर्यं संगतम् ३।१।१०५
अजादी गुणवचना० ५।३।५८
अजादेर्द्वितीयस्य ६।१।२
अजाद्यतष्टाप् ४।१।४
अजाद्यदन्तम् २।२।३३
अजाविभ्यां थ्यन् ५।१।८
अजिनान्तस्योत्तरप० ५।३।८२
अजिव्रज्योश्च ७।३।६०
अजेर्व्यघञपोः २।४।५६
अज्झनगमां सनि ६।४।१६
अज्ञाते ५।३।७३
अञ्चेः पूजायाम् ७।२।५३
अञ्चेर्लुक् ५।३।३०
अञ्चेश्छन्दस्यसर्व०. ६।१।१६४
अञ्त्रोऽनपादाने ८।२।४८
अञ्जेः सिचि ७।२।७१
अञ्नासिकायाः सं० ५।४।११८
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये० ८।४।२
अड् गार्ग्यगालवयोः ७।३।९९
अणञौ च ४।३।३३
अणावकर्मकाच्चित्त० १।३।८८
अणि नियुक्ते ६।२।७५
अणो द्व्यचः ४।१।१५६
अणोऽप्रगृह्यस्यानुना० ८।४।५६
अण्कर्मणि च ३।३।१२
अण्कुटिलिकायाः ४।४।१८
अण्च ५।२।१०३
अणिञोरनार्षयोर्गु रू० ४।१।७८
अणिनुणः ५।४।१५
अणुदित्सवर्णस्य चा० १।१।६८
अणृगयनादिभ्यः ४।३।७३
अण्महिष्यादिभ्यः ४।४।४८
अत आदेः ७।४।७०
अत इञ् ४।१।९५
अत इनिठनौ ५।२।११५
अत उत्सार्वधातुके ६।४।११०
अत उपधायाः ७।२।११६
अत एकहल्मध्ये० ६।४।१२०
अतः कृकमिकंसकुंभ० ८।३।४६
अतश्च ४।१।१७५
अति ग्रहाव्यथनक्ष० ५।४।४६
अतिथेर्न्यः ५।४।२६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतिरतिक्रमणे च १।४।९४
अतिशायने तमबिष्ठनौ ५।३।५५
अतेः शुनः ५।४।९६
अतेरकृत्पदे ६।२।१९०
अतो गुणे ६।१।९४
अतो दीर्घो यञि ७।३।१०१
अतो भिस ऐस् ७।१।९
अतोऽम् ७।१।२४
अतो येयः ७।२।८०
अतो रोरप्लुतादप्लुते ६।१।१०९
अतो लोपः ६।४।४८
अतो ल्रान्तस्य ७।२।२
अतो हलादेर्लघोः ७।२।७
अतो हेः ६।४।१०५
अत्यन्तसंयोगे च २।१।२८
अत्र लोपोऽभ्यासस्य ७।४।५८
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य० ८।३।२
अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठ० २।४।६५
अत्वसन्तस्य चाधातोः ६।४।१४
अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रद० ७।४।९५
अदः सर्वेषाम् ७।३।१००
अदभ्यस्तात् ७।१।४
अदर्शनं लोपः १।१।५९
अदस औ सुलोपश्च ७।२।१०७
अदसो मात् १।१।१२
अदसोऽसेर्दादु दो मः ८।२।८०
अदिप्रभृतिभ्यः शपः २।४।७२
अदूरभवश्च ४।२।६९
अदेङ् गुणः १।१।२
अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति २।४।३६
अदोऽनन्ने ३।२।६८
अदोऽनुपदेशे १।४।६९
अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्च० ७।१।२५
अद्भिः संस्कृतम् ४।४।१३४
अद्यश्वीनावष्टब्धे ५।२।१३
अधः शिरसी पदे ८।३।४७
अधिकम् ५।२।७३
अधिकरणवाचिनश्च २।३।६८
अधिकरणवाचिना च २।२।१३
अधिकरणविचाले च ५।३।४३
अधिकरणे बन्धः ३।४।४१
अधिकरणे शेतेः ३।२।१५
अधिकरणैतावत्त्वे च २।४।१५
अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ४।३।८७
अधिपरी अनर्थकौ १।४।९२
अधिरीश्वरे १।४।९६
अधिशीङ्स्थासां कर्म १।४।४६
अधिगर्थदयेशां कर्मणि २।३।५२
अधीष्टे च ३।३।१६६
अधुना ५।३।१७
अधेः प्रसहने १।३।३३
अधेरुपरिस्थम् ६।२।१८७
अध्ययनतो विप्रकृष्टा० २।४।५
अध्यर्धपूर्वाद् द्विगोर्लु० ५।१।२८
अध्यायन्यायोद्याव० ३।३।१२२
अध्यायानुवाकयोर्लुक् ५।२।६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्यायिन्यदेशका० ४।४।७१
अध्यायेष्वेवर्षेः ४।३।६९
अध्वनो यत्खौ ५।२।१६
अध्वर्युकषाययोर्जातौ ६।२।१०
अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् २।४।४
अन् ६।४।१६७
अन उपधालोपिनो० ४।१।२८
अनङ् सौ ७।१।९३
अनचि च ८।४।४६
अनत्यन्तगतौ क्तात् ५।४।४
अनत्याधान उरसि० १।४।७४
अनद्यतने लङ् ३।२।१११
अनद्यतने लुट् ३।३।१५
अनद्यतने र्हिलन्यत० ५।३।२१
अनन्तावसथेतिह० ५।४।२३
अनन्त्यस्यापि प्रश्ना० ८।२।१०५
अनभिहिते २।३।१
अनवक्लृप्त्यमर्षयो० ३।३।१४५
अनश्च ५।४।१०८
अनसन्तान्नपुंसका० ५।४।१०३
अनाप्यकः ७।२।११२
अनिगन्तोऽञ्चतौ वं० ६।२।५२
अनितेरन्तः ८।४।१९
अनिदितां हल उप० ६।४।२४
अनुकम्पायाम् ५।३।७६
अनुकरणं चानितिप० १।४।६१
अनुकाभिकाभीकः० ५।२।७४
अनुगवमायामे ५।४।८३
अनुगादिनष्ठक् ८।४।१३
अनुग्वलंगामी ५।२।१५
अनुदात्तं सर्वमपादादौ ८।१।१८
अनुदात्तङित आत्म० १।३।१२
अनुदात्तं च ८।१।३
अनुदात्तं पदमेक० ६।१।१५२
अनुदात्तं प्रश्नान्ता० ८।२।१००
अनुदात्तस्य च य० ६।१।१५५
अनुदात्तस्य चर्दुपध० ६।१।५८
अनुदात्तादेरञ् ४।२।४३
अनुदात्तादेश्च ४।३।१३८
अनुदात्ते च ६।१।१८४
अनुदात्ते च कुधपरे ६।१।११६
अनुदात्तेतश्च हलादेः ३।२।१४९
अनुदात्तोपदेशवन० ६।४।३७
अनुदात्तौ सुप्पितौ ३।१।४
अनुनासिकस्य क्वि० ६।४।१५
अनुनासिकात्परोऽनु० ८।३।४
अनुपदसर्वान्नायानयं० ५।२।९
अनुपद्यन्वेष्टा ५।२।९०
अनुपराभ्यां कृञः १।३।७९
अनुपसर्गाज्ज्ञः १।३।७६
अनुपसर्गात्फुल्लक्षीब० ८।२।५५
अनुपसर्गाद्वा १।३।४३
अनुपसर्गाल्लिम्प० ३।१।१३८
अनुपसर्जनात् ४।१।१४
अनुप्रतिगृणश्च १।४।४१
अनुप्रवचनादिभ्य० ५।१।१११०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुब्राह्मणादिनिः ४।२।६१
अनुर्यत्समया २।४।१४
अनुर्लक्षणे १।४।८३
अनुवादे चरणानाम् २।४।३
अनुविपर्यभिनिभ्यः० ८।३।७२
अनुशतिकादीनां च ७।३।२०
अनुस्वारस्य ययि० ८।४।५७
अनृष्यानन्तर्ये वि० ४।१।१०४
अनेकमन्यपदार्थे २।२।२४
अनेकाल्शित्सर्वस्य १।१।५४
अनो नुट् ८।२।१६
अनो बहुव्रीहेः ४।१।१२
अनो भावकर्मवचनः ६।२।१४९
अनोरकर्मकात् १।३।४९
अनोरप्रधानकनी० ६।२।२८८
अनोश्मायःसरसां० ५।४।९४
अनौ कर्मणि ३।२।१००
अन्तः ६।२।९२
अन्तः ६।२।१४२
अन्तः ६।२।१७८
अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् ४।३।६०
अन्तरं बहिर्योगोप० १।१।३५
अन्तरदेशे ८।४।२३
अन्तरपरिग्रहे १।४।६४
अन्तरान्तरेण युक्ते २।३।४
अन्तर्घनो देशे ३।३।७८
अन्तर्धौ येनादर्शन० १।४।२८
अन्तर्बहिर्भ्यां च० ५।४।११७
अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ४।१।३२
अन्तश्च ६।२।१७९
अन्तश्च तवै युगपत् ६।१।१९४
अन्तात्यन्ताध्वदूर० ३।२।४८
अन्तादिवच्च ६।१।८२
अन्तिकबाढयोर्नेद० ५।३।६३
अन्तोदात्तादुत्तर० ६।१।१६३
अन्तोऽवत्याः ६।१।२१४
अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ६।२।८३
अन्नाण्णः ४।४।८५
अन्नेन व्यञ्जनम् २।१।३३
अन्यतो ङीष् ४।१।४०
अन्यथैवंकथमित्थंसु० ३।४।२७
अन्यपदार्थे च संज्ञा० २।१।२०
अन्यारादितरर्ते दि० २।३।२९
अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३।२।१७८
अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३।३।१३०
अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ३।२।७५
अन्येषामपि दृश्यते ६।३।१३६
अन्येष्वपि दृश्यते ३।२।१०१
अन्वच्यानुलोम्ये ३।४।६४
अन्ववतप्ताद्रहसः ५।४।८१
अपगुरो णमुलि ६।१।५२
अपघनोऽङ्गम् ३।३।८१
अपचितश्च ७।२।३०
अपत्यं पौत्रप्रभृति० ४।१।१६२
अपथं नपुंसकम् २।४।३०
अपदातौ साल्वात् ४।२।१३४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अपदान्तस्य मूर्धन्यः ८।३।५५
अपपरी वर्जने १।४।८७
अपमित्ययाचिता० ४।४।२१
अपरस्पराः क्रिया० ६।१।१३९
अपरिमाणबिस्ताचि० ४।१।२२
अपरिह्वृताश्च ७।२।३२
अपरोक्षे च ३।२।११९
अपवर्गे तृतीया २।३।६
अपस्करो रथाङ्गम् ६।१।१४४
अपस्पृधेथामानृचुरा० ६।१।३५
अपह्नवे ज्ञः १।३।४४
अपाच्च ६।२।१८५
अपाच्चतुष्पाच्छकु० ६।१।१३७
अपादाने चाहीयरुहोः ५।४।४५
अपादाने पञ्चमी २।३।२८
अपादाने परीप्सायाम् ३।३।५२
अपाद्वदः १।३।७३
अपिः पदार्थसंभाव० १।४।९५
अपूर्वपदादन्यतर० ४।१।१४०
अपृक्त एकाल्प्रत्ययः १।२।४१
अपे क्लेशतमसोः ३।२।५०
अपे च लषः ३।२।१४४
अपेतापोढमुक्तप०त० २।१।३७
अपोनप्त्रपान्नप्तृभ्यां घः ४।२।२६
अपो भि ७।४।४८
अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृने० ६।४।११
अप्पूरणीप्रमाण्योः ५।४.११६
अ प्रत्ययात् ३ ३.१०२
अप्लुतवदुपस्थिते ६।१।१२५
अभाषितपुंस्काच्च ७।३।४८
अभिजनश्च ४।३।९०
अभिजिद्विदभृ० ५।३।११८
अभिज्ञावचने लृट् ३।२।११२
अभिनिविशश्च १।४।४७
अभिनिष्क्रामतिद्वा० ४।३।८६
अभिनिसः स्तनः ८।३।८६
अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः १।३।८०
अभिरभागे १।४।९०
अभिविधौ भाव इनुण् ३।३।४४
अभिविधौ संपदा च ५।४।५३
अभेर्मुखम् ६।२।१८४
अभेश्चाविदूर्ये ७।२।२५
अभ्यमित्राच्छ च ५।२।१७
अभ्यस्तानामादिः ६।१।१८३
अभ्यासस्यासवर्णे ६।४।७८
अभ्यासाच्च ७।३।५५
अभ्यासे चर्च ८।४.५३
अभ्युत्सादयांप्रजन० ३।१।४२
अमनुष्यकर्तृके च ३।२।५३
अमहन्नवं नगरेऽनु० ६।२।८९
अमावस्यदन्यतर० ३।१।१२२
अमावास्याया वा ४।३।३०
अमि पूर्वः ६।१।१०३
अमु च च्छन्दसि ५।४।१२
अमूर्धमस्तकात्स्वा० ६।३।११
अमैवाव्ययेन २।२।२०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमो मश् ७।१।४०
अम्नरूधरवरित्युभय० ८।२।७०
अम्बाम्बगोभूमिस० ८।३।९७
अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ७।३।१०७
अम् संबुद्धौ ७।१।९९
अयःशूलदण्डाजिना० ५।२।७६
अयङ् यि क्ङिति ७।४।२२
अयनं च ८।४।२४
अस्मयादीनि च्छ० १।४।२०
अयामन्ताल्वाय्येत्न्वि० ६।४।५५
अरण्यान्मनुष्ये ४।२।१२८
अरिष्टगौडपूर्वे च ६।२।१००
अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ६।३।६६
अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोर० ५।४।५१
अर्तिपिपर्त्योश्च ७।४।७७
अर्तिलूधूसूखनस० ३।२।१८४
अर्तिह्रीव्लीरीक्नू० ७।३।३६
अर्थवदधातुरप्रत्ययः० १।२।४५
अर्थे ६।२।४४
अर्थे विभाषा ६।३।९९
अर्दः संनिविभ्यः ७।२।२४
अर्धं नपुंसकम् २।२।२
अर्धर्चाः पुंसि च २।४।३१
अर्धाच्च ५।४।१००
अर्धात्परिमाणस्य पू० ७।३।२६
अर्धाद्यत् ४।३।४
अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् ६।२।९०
अर्यः स्वामिवैश्ययोः ३।१।१०३
अर्वणस्त्रसावनञः ६।४।१२७
अर्श आदिभ्योऽच् ५।२।१२७
अर्हः ३।२।१२
अर्हः प्रशंसायाम् ३।२।१३३
अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९
अलंकृञ्निराकृ० ३।२।१३६
अलंखल्वोः प्रतिषे० ३।४।१८
अलुगुत्तरपदे ६।३।१
अलोऽन्त्यस्य १।१।५२
अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा १।१।६५
अल्पाख्यायाम् ५।४।१३६
अल्पाच्तरम् २।२।३४
अल्पे ५।३।८५
अल्लोपोऽनः ६।४।१३४
अवक्रयः ४।४।५०
अवक्षेपणे कन् ५।३।९५
अवङ् स्फोटायनस्य ६।१।१२३
अवचक्षे च ३।४।१५
अवद्यपण्यवर्यागर्ह्य० ३।१।१०१
अवपथासि च ६।१।१२१
अवयवादृतोः ७।३।११
अवयवे च प्राण्यो० ४।३।१३५
अवयसि ठंश्च ५।१।८४
अवयाः श्वेतवाः पुरो० ८।२।६७
अवसमन्धेभ्यस्तमसः ५।४।७९
अवाच्चालम्बनाविदू० ८।३।६८
अवात् कुटारच्च ५।२।३०
अवाद् ग्रः १।३।५१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवारपारात्यन्तानु० ५।२।११
अवृद्धादपि बहु० ४।२ १२४
अवृद्धाभ्यो नदी० ४।१।११३
अवेः कः ५।४।२८
अवे ग्रहो वर्षप्रतिब० ३।३।५१
अवे तृस्त्रोर्घञ् ३।३।१२०
अवे यजः ३।२।७२
अवोदैधौद्मप्रश्रथहि० ६।४।२९
अवोदोनियः ३।३।२६
अव्यक्तानुकरणस्या० ६।१।९५
अव्यक्तानुकरणाद्० ५।४ ५७
अव्ययं विभक्तिसमीप० २।१।६
अव्ययसर्वनाम्नामक० ५।३।७१
अव्ययात्त्यप् ४।२।१०३
अव्ययादाप्सुपः २।४।८२
अव्ययीभावः २।१।५
अव्ययीभावश्च १।१।४०
अव्ययीभावश्च २।४।१८
अव्ययीभावाच्च ४।३।५९
अव्ययीभावे चाकाले ६।३।८०
अव्ययीभावे शर ५।४।१०७
अव्यये यथाभिप्रेता० ३।४।५९
अव्यादवद्यादवक्र० ६।१।११२
अशनायोदन्यध० ७।४।३४
अशब्दे यत्खावन्यत० ४।३।६४
अशाला च २।४।२४
अश्नोतेश्च ७।४।७२
अश्वक्षीरवृषलवणा० ७।१।५१
अश्वपत्यादिभ्यश्च ४।१।८४
अश्वस्यैकाहगमः ५।२।१९
अश्वाघस्यात् ७।४।३७
अश्वादिभ्यः फञ् ४।१।११०
अश्विमानण् ४।४।१२६
अषडक्षाशितंग्वलं० ५।४।७
अषष्ठचतृतीयास्थ० ६।३।९८
अष्टन आ विभक्तौ ७।२।८४
अष्टनः संज्ञायाम् ६।३।१२४
अष्टनो दीर्घात् ६।१।१६६
अष्टाभ्य औश् ७।१।२१
असंयोगाल्लिट् कित् १।२।५
असंज्ञायां तिल० ४।३।१४७
असमासे निष्का० ५।१।२०
अ सांप्रतिके ४।३।९
असिद्धवदत्राभात् ६।४।२२
असुरस्य स्वम् ४।४।१२३
असूर्यललाटयोर्दृ० ३।२।३६
अस्तं च १।४।६७
अस्ताति च ५।३।४०
अस्तिनास्तिदिष्टं० ४।४।६०
अस्तिसिचोऽपृक्ते ७।३।९६
अस्तेर्भूः २।४।५२
अस्थिदधिसक्थ्य० ७।१।७५
अस्मदो द्वयोश्च १।२।५९
अस्मद्युत्तमः १।४।१०६
अस्मायामेधास्र० ५।२।१२१
अस्य च्वौ ७।४।३२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अस्यतितृषोः क्रिया० ३।४।५७
अस्यतिवक्तिख्याति० ३।१।५२
अस्यतेस्थुक् ७।४।१७
अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ४।१।५३
अहः सर्वैकदेशसंख्या० ५।४।८७
अहंशुभमोर्युस् ५।२।१४०
अहन् ८।२।६८
अहीने द्वितीया ६।२।४७
अर्हेति विनियोगे च ८।१।६१
अहो च ८।१।४०
अह्नष्टखोरेव ६।४।१४५
अह्नोऽदन्तात् ८।४।७
अह्नोऽह्न एतेभ्यः ५।४।८८
आकडारादेका संज्ञा १।४।१
आकर्षात् ष्ठल् ४।४।९
आकर्षादिभ्यः कन् ५।२।६४
आकालिकडाद्यन्त० ५।१।११३
आक्रन्दाट्ठञ्च ४।४।३८
आक्रोशे च ६।२।१५७
आक्रोशे नञ्यनिः ३।३।११२
आक्रोशे वन्योर्ग्रहः ३।३।४५
आ क्वेस्तच्छील० ३।२।१३४
आख्यातोपयोगे १।४।२९
आगवीनः ५।२।१४
आगस्त्यकौण्डिन्य० २।४।७०
आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ४।२।२१
आङ उद्गमने १।३।४०
आङि चापः ७।३।१०५
आङि ताच्छील्ये ३।२।११
आङि युद्धे ३।३।७३
आङो दोऽनास्यविहः० १।३।२०
आङो नाऽस्त्रियाम् ७।३।११९
आङोऽनुनासिक० ६।१।१२५
आङो यमहनः १।३।२८
आङो यि ७।१।६५
आङ् मर्यादाभिविध्योः २।१।१२
आङ् मर्यादावचने १।४।८८
आङ्माङोश्च ६।१।७२
आ च त्वात् ५।१।११९
आ च हौ ६।४।११७
आचार्योपसर्जन० ६।२।१०४
आचार्योपसर्जनश्चा० ६।२।३६
आच्छीनद्योर्नुम् ७।१।८०
आज्जसेरसुक् ७।१।५० जसेरसुक्
आज्ञायिनि च ६।३।५
आटश्च ६।१।८७
आडजादीनाम् ६।४।७२
आडुत्तमस्य पिच्च ३।४।९२
आढकाचितपात्रा० ५।१।५२
आढ्यसुभगस्थूल० ३।२।५६
आण् नद्याः ७।३।११२
आत ऐ ३।४।९५
आत औ णलः ७।१।३४
आतः ३।४।११०
आतश्चोपसर्गे ३।१।१३६
आतश्चोपसर्गे ३।३।१०६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आतो ङितः ७।२।८१
आतोऽटि नित्यम् ८।३।३
आतो धातोः ६।४।१४०
आतोऽनुपसर्गे कः ३।२।३
आतो मनिन्क्वनि० ३।२।७४
आतो युक् चिण्० ७।३।३३
आतो युच् ३।३।१२८
आतो लोप इटि च ६।४।६४
आत्मनश्च ६।३।६
आत्मनेपदेष्वनतः ७।१।५
आत्मनेपदेष्वन्यत० २।४।४४
आत्मनेपदेष्वन्यतर० ३।२।५४
आत्मन्विश्वजन० ५।१।९
आत्ममाने खश्च ३।२।८३
आत्माध्वानौ खे ६।४।१६९
आदरानादरयोः स० १।४।६२
आदाचार्याणाम् ७।३।४९
आदिः प्रत्येनसि ६।२।२७
आदिः सिचोऽन्य० ६।१।१८१
आदिकर्मणि क्तः क० ३।४।७०
आदितश्च ७।२।१६
आदिरन्त्येन सहेता १।१।७१
आदिरुदात्तः ६।२।६४
आदिर्ञिटुडवः १।३।५
आदिर्णमुल्यन्यत० ६।१।१८८
आदिश्चिहणादीनाम् ६।२।१२४
आदृगमहनजनः० ३।२।१७१
आदेः परस्य १।१।५३
आदेच उपदेशेऽशिति ६।१।४४
आदेशप्रत्यययोः ८।३।५९
आद्गुणः ६।१।८४
आद्यन्तवदेकस्मिन् १।१।२०
आद्यन्तौ टकितौ १।१।४५
आद्युदात्तं द्व्यच्छन्द० ६।२।११९
आद्युदात्तश्च ३।१।३
आधारोऽधिकरणम् १।४।४५
आनङृतो द्वन्द्वे ६।३।२४
आनाय्योऽनित्ये ३।१।१२७
आनि लोट् ८।४।१६
आने मुक् ७।२।८२
आन्महतः समाना० ६।३।४५
आपत्यस्य च तद्धि० ६।४।१५१
आपो जुषाणो वृ० ६।१।११८
आपोऽन्यतरस्याम् ७।४।१५
आप्ज्ञप्यृधामीत् ७।४।५५
आप्रपदं प्राप्नोति ५।२।८
आबाधे च ८।१।१०
आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ३।४।२२
आम एकान्तरमाम० ८।१।५५
आमः २।४।८१
आमन्त्रितं पूर्वमवि० ८।१।७२
आमन्त्रितस्य च ६।१।१९८
आमन्त्रितस्य च ८।१।१९
आमि सर्वनाम्नः सुट् ७।१।५२
आमेतः ३।४।९०
आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनु० १।३।६३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्रेडितं भर्त्सने ८।२।९५
आयनेयीनीयियः फढ० ७।१।२
आयादय आर्धधातु० ३।१।३१
आयुक्तकुशलाभ्यां० २।३।४०
आयुधजीविभ्यश्छः० ४।३।९१
आयुधजीविसंघा० ५।३।११४
आयुधाच्छ च ४।४।१४
आरगुदीचाम् ४।१।१३०
आर्धधातुकं शेषः ३।४।११४
आर्धधातुकस्येड् वला० ७।२।३५
आर्धधातुके ६।४।४६
आर्धधातुके २।४।३५
आर्यो ब्राह्मणकुमा० ६।२।५८
आर्हादगोपुच्छसंख्या० ५।१।१९
आलजाटचौ बहु० ५।२।१२५
आवट्याच्च ४।१।७५
आवश्यकाधमर्ण्ये० ३।३।१७०
आवसथात्ष्ठल् ४।४।७४
आशंसायां भूतवच्च ३।३।१३२
आशंसावचने लिङ् ३।३।१३४
आशङ्काबाधने दीय० ६।२।२१
आशितः कर्ता ६।१।२०१
आशिते भुवः करण० ३।२।४५
आशिषि च ३।१।१५०
आशिषि नाथः २।३।५५
आशिषि लिङ्लोटौ ३।३।१७३
आशिषि हनः ३।२।४९
आश्चर्यमनित्ये ६।१।१४५
आश्वयु वुञ् ४।३।४५
आसन्दीवदष्ठीवच्च० ८।२।१२
आ सर्वनाम्नः ६।३।९०
आसुयुवपिरपि० ३।१।१२६
आस्पदं प्रतिष्ठा० ६।१।१४१
आहस्थः ८।३।३५
आहि च दूरे ५।३।३७
आहो उताहो चानन्त० ८।१।४९
इकः काशे ६।३।१२२
इकः सुञि ६।३।१३३
इको गुणवृद्धी १।१।३
इकोऽचि विभक्तौ ७।१।७३
इको झल् १।२।९
इको यणचि ६।१।७४
इको वहेऽपीलोः ६।३।१२०
इकोऽसवर्णे शाक० ६।१।१२३
इकोऽह्रस्वोऽङ्यो गा० ६।३।६०
इगन्तकालकपालभ० ६।२।२९
इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ५।१।१३०
इगुपधज्ञाप्रीकिरः० ३।१।१३५
इग्यणः संप्रसारणम् १।१।४४ संप्रसारण संज्ञा
इङश्च २।४।४८
इङश्च ३।३।२१
इङ्धार्योः शत्रकृ० ३।२।१३०
इच एकाचोऽम्प्रत्यय० ६।३।६७
इच्कर्मव्यतिहारे ५।४।१२७
इच्छा ३।३।१०१
इच्छार्थेभ्यो विभा० ३।३।१६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इच्छार्थेषु लिङ्लो० ३।३।१५७
इजादेः सनुमः ८।४।३१
इजादेश्च गुरुमतोऽनृ० ३।१।३६
इञः प्राचाम् २।४।६०
इञश्च ४।२।१११
इट ईटि ८।२।२८
इटोऽत् ३।४।१०६
इट् सनि वा ७।२।४१
इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् ७।२।६६
इडाया वा ८।३।५४
इणः षः ८।३।३९
इणः षीध्वंलुङ्लिटां० ८।३।७८
इणो गा लुङि २।४।४५
इणो यण् ६।४।८१
इण्कोः ८।३।५७
इण्नशजिसर्तिभ्यः ३।२।१६३
इण्निष्ठायाम् ७।२।४७
इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ५।३।१४
इतरेतरान्योऽन्योपप० १।३।१६
इतश्च ३।४।१००
इतश्च लोपः परस्मैप० ३।४।९७
इतश्चानिञः ४।१।१२२
इतोऽत्सर्वनामस्थाने ७।१।८६
इतो मनुष्यजातेः ४।१।६५
इत्थंभूतलक्षणे २।३।२१
इत्थंभूतेन कृतमि० ६।२।१४८
इदंकिमोरीश्की ६।३।८९
इदन्तो मसि ७।१।४६
इदम इश् ५।३।३
इदमस्थमुः ५।३।२४
इदमोऽन्वादेशेऽशनु० २।४।३२
इदमो मः ७।२।१०८
इदमो हिल् ५।३।१६
इदमो हः ५।३।११
इदितो नुम्धातोः ७।१।५८
इदुदुपधस्य चाप्रत्यय० ८।३।४१
इदुद्भ्याम् ७।३।११७
इदोऽय् पुंसि ७।२।१११
इद् गोण्याः १।२।५०
इद्दरिद्रस्य ६।४।११४
इद् वृद्धौ ६।३।२७
इनः स्त्रियाम् ५।४।१५२
इनच्पिटच्चिकचि च ५।२।३३
इनण्यनपत्ये ६।४।१६४
इनित्रकटचचश्च ४।२।५०
इन्द्रवरुणभवशर्वरु० ४।१।४९
इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमि० ५।२।९३
इन्द्रे च ६।१।१२०
इन्धिभवतिभ्यां च १।२।६
इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ६।४।१२
इरयोरे ६।४।७६
इरितो वा ३।१।५७
इवे प्रतिकृतौ ५।३।९६
इषुगमियमां छः ७।३।७७
इष्टकेषीकामा० ६।३।६४
इष्टादिभ्यश्च ५।२।८८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इष्ट्वीनमिति च ७।१।४८
इष्ठस्य यिट् च ६।४।१५९
इसुसुक्तान्तात्कः ७।३।५१
इसुसोः सामर्थ्ये ८।३।४४
इस्मन्त्रन्क्विषु च ६।४।९७
ई घ्राध्मोः ७।४।३१
ई च खनः ३।१।१११
ई च गणः ७।४।९७
ई च द्विवचने ७।१।७७
ईडजनोर्ध्वे च ७।२।७८
ईडवन्दवृशंसदुहां० ६।१।२०८
ईदग्नेः सोमवरुणयोः ६।३।२६
ईदासः ७।२।८३
ईदूतौ च सप्तम्यर्थे १।१।१८
ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् १।१।११
ईद्यति ६।४।६५
ईयसश्च ५।४।१५६
ईवत्याः ६।१।२१५
ईशः से ७।२।७७
ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ३।४।१३
ईषदकृता २।२।७
ईषदन्यतरस्याम् ६।२।५४
ईषदर्थे ६।३।१०४
ईषदसमाप्तौ कल्पब्दे० ५।३।६७
ईषद्दुःसुषु कृच्छ्रा० ३।३।१२६
ई हल्यघोः ६।४।११३
ई ३ चाक्रवर्मणस्य ६।१।१२६
उगवादिभ्यो यत् ५।१।२
उगितश्च ४।१।६
उगितश्च ६।३।४४
उगिदचां सर्वनाम० ७।१।७०
उग्रंपश्येरंमदपाणिन्ध० ३।२।३७
उच्चैरुदात्तः १।२।२९
उच्चैस्तरां वा वषट्कारः १।२।३५
उञः ऊँ १।१।१७
उञि च पदे ८।३।२१
उञ्छति ४।४।३२
उञ्छादीनां च ६।१।१५४
उणादयो बहुलम् ३।३।१
उतश्च प्रत्यया० ६।४।१०६
उताप्योः समर्थयो० ३।३।१५२
उतो वृद्धिर्लुकि हलि ७।३।८९
उत्क उन्मनाः ५।२।८०
उत्करादिभ्यश्छः ४।२।८९
उत्तमैकाभ्यां च ५।४।९०
उत्तरपथेनाहृतं च ५।१।७६
उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ६।२।१०५
उत्तरपदस्य ७।३।१०
उत्तरपदादिः ६।२।११०
उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ५।४।९८
उत्तराच्च ५।३।३८
उत्तराधरदक्षिणादा० ५।३।३४
उत्परस्यातः ७।४।८८
उत्सादिभ्योऽञ् ४।१।८६
उद ईत् ६।४।१३९
उदः स्थास्तम्भोः पूर्व० ८।४।६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदकस्योदः संज्ञायाम् ६।३।५६
उदकेऽकेवले ६।२।९६
उदक्च विपाशः ४।२।७३
उदङ्कोऽनुदके ३।३।१२३
उदन्वानुदधौ च ८।२।१३
उदराट्ठगाद्यूने ५।२।६७
उदराश्वेषुषु क्षेपे ६।२।१०७
उदश्चरः सकर्मकात् १।३।५३
उदश्वितोऽन्यतरस्या० ४।२।१८
उदात्तयणो हल्पूर्वात् ६।१।१६८
उदात्तस्वरितपरस्य० १।२।४०
उदात्तस्वरितयोर्यणः० ८।२।४
उदात्तादनुदात्तस्य० ८।४।६५
उदि कूले रुजिवहोः ३।१।३१
उदि ग्रहः ३।३।३५
उदितो वा ७।२।५६
उदिश्रयतियौतिपूद्रुवः ३।३।४९
उदीचां माङो व्यती० ३।४।१९
उदीचां वृद्धादगो० ४।१।१५७
उदीचामातः स्थाने० ७।३।४६
उदीचामिञ् ४।१।१५३
उदीच्यग्रामाच्च बह्व० ४।२।१०८
उदुपधाद्भावादिकम० १।२।२१
उदोऽनूर्ध्वकर्मणि १।३।२४
उदोष्ठ्यपूर्वस्य ७।१।१०२
उद्घनोऽत्याधानम् ३।३।८०
उद्विभ्यां काकुदस्य ५।४।१४८
उद्विभ्यां तपः १।३।२७
उन्न्योर्ग्रः ३।३।२९
उपकादिभ्योऽन्यतर० २।४।६९
उपघ्न आश्रये ३।३।८५
उपजानूपकर्णोपनी० ४।३।४०
उपज्ञाते ४।३।११५
उपज्ञोपक्रमं तदाद्या० २।४।२१
उपदंशस्तृतीयायाम् ३।४।४७
उपदेशेऽजनुनासिक० १।३।२
उपदेशेऽत्वतः ७।२।६२
उपधायां च ८।२।७८
उपधायाश्च ७।१।१०१
उपपदमतिङ् २।२।१९
उपपराभ्याम् १।३।३९
उपमानं शब्दार्थ० ६।२।८०
उपमानाच्च ५।४।१३७
उपमानादप्राणिषु ५।४।९७
उपमानादाचारे ३।१।१०
उपमानानि सामान्य० २।१।५५
उपमाने कर्मणि च ३।४।४५
उपमितं व्याघ्रादिभिः० २।१।५६
उपरिस्विदासीदि० ८।२।१०२
उपर्यध्यधसः सामीप्ये ८।१।७
उपर्युपरिष्टात् ५।३।३१
उपसंवादाशङ्कयोश्च ३।४।८
उपसर्गप्रादुर्भ्यामि० ८।३।८७
उपसर्गव्यपेतं च ८।१।३८
उपसर्गस्य घञ्यम० ६।३।१२२
उपसर्गस्यायतौ ८।२।१९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपसर्गाच्च ५।४।११९
उपसर्गाच्छन्दसि० ५।१।११७
उपसर्गात्खल्घञोः ७।१।६७
उपसर्गात्सुनोतिसुव० ८।३।६५
उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रु० ६।२।१७६
उपसर्गादध्वनः ५।४।८५
उपसर्गादसमासे० ८।४।१४
उपसर्गादृति धातौ ६।१।८८
उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ७।४।२३
उपसर्गादनोत्परः ८।४।२७
उपसर्गे घोः किः ३।३।९२
उपसर्गे च संज्ञायाम् ३।२।९९
उपसर्गेऽदः ३।३।५९
उपसर्गे रुवः ३।३।२२
उपसर्जनं पूर्वम् २।२।३० २।२।३६
उपसर्याकाल्या प्र० ३।१।१०४
उपाच्च १।३।८४
उपाजेऽन्वाजे १।४।७२
उपात्प्रतियत्नवैकृत० ६।१।१३४
उपात्प्रशंसायाम् ७।१।६६
उपाद् द्व्यजजिनम० ६।२।१९३
उपाद्यमः स्वकरणे १।३।५६
उपाधिभ्यां त्यकन्ना० ५।२।३४
उपान्मन्त्रकरणे १।३।२५
उपान्वध्याङ्वसः १।४।४८
उपेयिवाननाश्वान० ३।२।१०९
उपोत्तमं रिति ६।१।२११
उपोऽधिके च १।४।८६
उप्ते च ४।३।५४
उभयथर्क्षु ८।३।८
उभयप्राप्तौ कर्मणि २।३।६६
उभादुदात्तो नित्यम् ५।२।४४
उभे अभ्यस्तम् ६।१।५
उभे वनस्पत्यादिषु० ६।२।१३९
उभौ साभ्यासस्य ८।४।२०
उमोर्णयोर्वा ४।३।१५६
उरः प्रभृतिभ्यः कप् ५।४।१५१
उरण् रपरः १।१।५०
उरत् ७।४।६६
उरसोऽण् च ४।४।९४
उरसो यच्च ४।१।११४
उॠत् ७।४।७
उश्च १।२।१२
उषविदजागृभ्यो० ३।१।३८
उषासोषसः ६।३।३०
उष्ट्रः सादिवाम्योः ६।२।४०
उष्ट्राद् वुञ् ४।३।१५५
उस्यपदान्तात् ६।१।९३
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घ० १।२।२७
ऊङुतः ४।१।६६
ऊडिदम्पदाद्यप्पुम्रै० ६।१।१६५
ऊतियूतिजूतिसाति० ३।३।९७
ऊदनोर्देशे ६।३।९७
ऊदुपधाया गोहः ६।४।८९
ऊधसोऽनङ् ५।४।१३१
ऊनार्थकलहं तृती० ६।२।१५२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊरूत्तरपदादौपम्ये ४।१।६९
ऊर्णाया युस् ५।२।१२३
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।३।९०
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।२।६
ऊर्ध्वाद्विभाषा ५।४।१३०
ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ३।४।४४
ऊर्यादिच्विडाचश्च १।४।६०
ऊषसुषिमुष्कमधोरः ५।२।१०७
ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे ५।४।७४
ऋचः शे ६।३।५४
ऋचि तुनुघमक्षुत० ६।३।१३२
ऋच्छत्यृताम् ७।४।११
ऋणमाधमर्ण्ये ८।२।६०
ऋत उत् ६।१।१०७
ऋतश्च ७।४।९२
ऋतश्च संयोगादेः ७।२।४३
ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ७।४।१०
ऋतश्छन्दसि ५।४।१५८
ऋतष्ठञ् ४।३।७८
ऋतेरीयङ् ३।१।२९
ऋतो ङिसर्वनाम० ७।३।११०
ऋतोऽञ् ४।४।४९
ऋतो भारद्वाजस्य ७।२।६३
ऋतोरण् ५।१।१०४
ऋतो विद्यायोनिसंब० ६।३।२२
ऋत्यकः ६।१।१२४
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगु० ३।२।५९
ऋत्व्यवास्त्व्यवा० ६।४।१७५
ऋदुपधाच्चाक्लृपि० ३।१।११०
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽने० ७।१।९४
ऋदृशोऽङि गुणः ७।४।१६
ऋद्धनोः स्ये ७।२।७०
ऋन्नेभ्यो ङीप् ४।१।५
ऋषभोपानहोर्ञ्यः ५।१।१४
ऋष्यन्धकवृष्णिकु० ४।१।११४
ऋहलोर्ण्यत् ३।१।१२४
ऋत इद्धातोः ७।१।१००
ऋदोरप् ३।३।५७ अप्
एकः पूर्वपरयोः ६।१।८१
एकगोपूर्वाट्ठञ्नि० ५।२।११८
एकतद्धिते च ६।३।६१
एकधुराल्लुक्च ४।४।७९
एकम्बहुव्रीहिवत् ८।१।९
एकवचनं संबुद्धिः २।३।४९
एकवचनस्य च ७।१।३२
एकविभक्ति चापूर्व० १।२।४४ 1/2।
एकशालायाष्ठज० ५।३।१०९
एकश्रुति दूरात्संबुद्धौ १।२।३३
एकस्य सकृच्च ५।४।१९
एकहलादौ पूरयित० ६।३।५८
एकाच उपदेशेऽनु० ७।२।१०
एकाचो द्वे प्रथमस्य ६।१।१
एकाचो बशो भष् झ० ८।२।३७
एकाच्च प्राचाम् ५।३।९४
एकाजुत्तरपदे णः ८।४।१२
एकादाकिनिच्चास० ५।३।५२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकादिश्चैकस्य चादुक् ६।३।७५
एकादेश उदात्तेनोदात्तः ८।२।५
एकाद्धो ध्यमुञन्य० ५।३।४४
एकान्याभ्यां समर्था० ८।१।६५
एको गोत्रे ४।१।९३
एङः पदान्तादति ६।१।१०५
एङि पररूपम् ६।१।९१
एङ् प्राचां देशे १।१।७४
एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः ६।१।६७
एच इग्घ्रस्वादेशे १।१।४७
एचोऽप्रगृह्यस्या० ८।२।१०७
एचोऽयवायावः ६।१।७५--६।१।७८
एजेः खश् ३।२।२८ [से ८० तक]
एण्या ढञ् ४।३।१५७
एत ईद् बहुवचने ८।२।८१
एत ऐ ३।४।९३
एतत्तदोः सुलोपो० ६।१।१२८
एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ० २।४।३२
एतदोऽन् ५।३।५
एति संज्ञायामगात् ८।३।९९
एतिस्तुशास्वृदृजु० ३।१।१०९
एतेतौ रथोः ५।३।४
एतेर्लिङि ७।४।२४
एत्येधत्यूठ्सु ६।१।८६
एधाच्च ५।३।४६
एनपा द्वितीया २।१।३१
एनबन्यतरस्यामदूरे० ५।३।३५
एरच् ३।३।५६-3।1।135
एरनेकाचोऽसंयोग० ६।४।८२
एरुः ३।३।८६
एर्लिङि ६।४।६७
एहि मन्ये प्रहासे लृट् ८।१।४६
ऐकागारिकट्चौरे ४।१।११२
ऐषमोह्यःश्वसोऽन्य० ४।२।१०४
ओः पुयण्ज्यपरे ७।४।८०
ओः सुपि ६।४।८३
ओक उचः के ७।३।६४
ओजः सहोम्भसा० ४।४।२७
ओजःसहोऽम्भस्तमस० ६।३।३
ओजसोऽहनि यत्खौ ४।४।१३०
ओत् १।१।१५
ओतः श्यनि ७।३।७१
ओतो गार्ग्यस्य ८।३।२०
ओदितश्च ८।२।४५
ओमभ्यादाने ८।२।८७
ओमाङोश्च ५।१।९२
ओरञ् ४।२।७०
ओरञ् ४।३।१३७
ओरावश्यके ३।१।१२५
ओर्गुणः ६।४।१४६
ओर्देशे ठञ् ४।२।११८
ओषधेरजातौ ५।४।३७
ओषधेश्च विभक्ता० ६।३।१३१
ओसि च ७।३।१०४
औक्षमनपत्ये ६।४।१७३
औङ आपः ७।१।१८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औतोऽम्शसोः ६।१।९०
औदच्च घेः ७।३।११८
कः करत्करतिकृ० ८।३।५०
कंशंभ्यां बभयुस्ति० ५।२।१३८
कंसमन्थशूर्पपाय्य० ६।२।१२२
कंसाट्टिठन् ५।१।२५
कंसीयपरशव्ययो० ४।३।१६६
ककुदस्यावस्थायां० ५।४।१४६
कच्छाग्निवक्त्र० ४।२।१२५
कच्छादिभ्यश्च ४।२।१३२
कठचरकाल्लुक् ४।१।१०७
कठिनान्तप्रस्तारसं० ४।४।७२
कडङ्करदक्षिणाच्छ च ५।१।६८
कडाराः कर्मधारये २।२।३८
कणेमनसी श्रद्धाप्रति० १।४।६५
कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ६।२।११३
कण्ड्वादिभ्यो यक् ३।१।२७
कण्वादिभ्यो गोत्रे ४।२।१११
कतरकतमौ कर्मधा० ६।२।५७
कतरकतमौ जातिप० २।१।६२
कत्र्यादिभ्यो ढकञ् ४।२।९४
कथादिभ्यष्ठक् ४।४।१०२
कद्रुकमण्डल्वोश्छ० ४।१।७१
कन्था च ६।२।१२३
कन्थापलदनगरग्रा० ४।२।१४२
कन्थायाष्ठक् ४।२।१०२
कन्यायाः कनीन च ४।१।११६
कपिज्ञात्योर्ढक् ५।१।१२६
कपि पूर्वम् ६।१।१७२
कपिबोधादाङ्गिरसे ४।१।१०७
कपिष्ठलो गोत्रे ८।३।९१
कर्मेणिङ् ३।१।३०
कम्बलाच्च संज्ञायाम् ५।१।३
कम्बोजाल्लुक् ४।१।१७३
करणाधिकरणयोश्च ३।३।११७
करणे च स्तोकाल्प० २।३।३३
करणे यजः ३।२।८५
करणेऽयोविद्रुषु ३।३।८२
करणे हनः ३।४।३७
कर्कलोहितादीकक् ५।३।११०
कर्णललाटात्कनल० ४।३।६५
कर्णे लक्षणस्यावि० ६।३।११४
कर्णो वर्णलक्षणात् ६।२।११२
कर्तरि कर्मव्यतिहारे १।३।१४
कर्तरि कृत् ३।४।६७
कर्तरि च २।२।१६
कर्तरि चर्षिदेवतयोः ३।२।१८६
कर्तरि भुवः खिष्णुच्० ३।२।५७
कर्तरि शप् ३।१।६८
कर्तर्युपमाने ३।२।७९
कर्तुः क्यङ् सलोपश्च ३।१।११
कर्तुरीप्सिततमं कर्म १।४।४९
कर्तृकरणयोस्तृतीया २।३।१८
कर्तृकरणे कृता बहु० २।१।३२
कर्तृकर्मणोः कृति २।३।६५
कर्तृकर्मणोश्च भूकृ० ३।३।१२७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्तृस्थे चाशरीरे क० १।३।३७
कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्न० ३।४।४३
कर्मण उकञ् ५।१।१०२
कर्मणा यमभिप्रैति १।४।३२
कर्मणि घटोऽठच् ५।२।३५
कर्मणि च २।२।१४
कर्मणि च येन सं० ३।३।११६
कर्मणि दृशिविदोः० ३।४।२६
कर्मणि द्वितीया २।३।२
कर्मणि भृतौ ३।२।२२
कर्मणि हनः ३।२।८६
कर्मणीनि विक्रियः ३।२।६३
कर्मणो रोमन्थतपो० ३।१।१५
कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ३।२।६२
कर्मण्यण् ३।२।१
कर्मण्यधिकरणे च ३।३।६३
कर्मण्याक्रोशे कृ० ३।४।२५
कर्मधारयवदुत्तरेषु ८।१।८१
कर्मधारयेऽनिष्ठा ६।२।४६
कर्मन्दकृशाश्वादि० ४।३।१११
कर्मप्रवचनीययुक्ते २।३।८
कर्मप्रवचनीयाः १।४।८२
कर्मवत्कर्मणा तुल्य० ३।१।८७
कर्मवेषाद्यत् ५।१।६६
कर्मव्यतिहारे णच्० ३।३।४३
कर्माध्ययने वृत्तम् ४।४।६३
कर्षात्वतो घ० ६।१।१५३
कलापिनोऽण् ४।३।१०८
कलापिवैशम्पाय० ४।३।१०८
कलाप्यश्वत्थयवबु० ४।३।४८
कल्याण्यादीनामि० ४।१।१२६
कवं चोष्णे ६।३।१०६
कव्यध्वरपृतनस्यर्चि० ७।४।३६
कव्यपुरीषपुरीष्येषु० ३।२।६५
कषादिषु यथाविध्य० ३।४।५६
कष्टाय क्रमणे ३।१।१४
कस्कादिषु च ८।३।४८
कस्य च दः ५।३।७२
कस्येत् ४।२।२४
काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ५।२।१११
काण्डान्तात्क्षेत्रे ४।१।२३
कानाम्रेडिते ८।३।१२
का पथ्यक्षयोः ६।२।१०३
कापिश्याः ष्फक् ४।२।६८
कामप्रवेदनेऽक० ३।३।१५३
काम्यच्च ३।१।६
कारकाद्दत्तश्रुतयो० ६।२।१४७
कारके १।४।२३
कारनाम्नि च प्राचां० ६।३।६
कारे सत्यागदस्य ६।३।६६
कार्तकौजपादयश्च ६।२।३७
कार्मस्ताच्छील्ये ६।४।१७२
कालप्रयोजनाद्रोगे ५।२।८१
कालविभागे चान० ३।३।१३७
कालसमयवेलासु० ३।३।१६७
कालाः २।१।२७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालाः परिमाणिना २।२।५
कालाच्च ५।४।३३
कालाठ्ठञ् ४।३।११
कालात् ५।१।७७
कालात्साधुपुष्प्यत्प० ४।३।४३
कालाद्यत् ५।१।१०६
कालाध्वनोरत्यन्त० २।३।५
कालेभ्यो भववत् ४।२।३३
कालोपसर्जने च० १।२।५७
काश्यपकौशिका० ४।३।१०२
काश्यादिभ्यष्ठ० ४।२।११५
कासूगोणीभ्यां ष्टरच् ५।३।९०
कास्तीराजस्तुन्दे० ६।१।१५०
कास्प्रत्ययादाममन्त्रे० ३।१।३५
किंयत्तदोर्निर्धारणे० ५।३।९२
किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ८।१।४८
किंवृत्ते लिङ्लृटौ ३।३।१४४
किंवृत्ते लिप्सायाम् ३।३।६
किंसर्वनामबहुभ्यो० ५।३।२
किंकिलास्त्यर्थेषु० ३।३।१४६
किं क्रियाप्रश्नेऽनुप० ८।१।४४
किं क्षेपे २।१।६३
कितः ६।१।१५९
किति च ७।२।११८
किदाशिषि ३।४।१०४
किमः कः ७।२।१०३
किमः क्षेपे ४।५।७०
किमः संख्यापरि० ५।२।४१
किमश्च ५।३।२५
किमिदंभ्यां वो घः ५।२।४०
किमेत्तिङव्ययघादा० ५।४।११
किमोऽत् ५।३।१२
किरतौ लवने ६।१।१३५
किरश्च पञ्चभ्यः ७।२।७५
किसरादिभ्यः ष्ठन् ४।४।५३
कुगतिप्रादयः २।२।१८
कुटीशमीशुण्डा० ५।३।८८
कुण्डं वनम् ६।२।१३५
कु तिहोः ७।२।१०४
कुत्वा डुपच् ५।३।८९
कुत्सने च सुप्यगो० ८।१।६९
कुत्सितानि कुत्सनैः २।१।५२
कुत्सिते ५।३।७४
कुप्वोः ≍क ≍पौ च ८।३।३७
कुमति च ८।४।१३
कुमहद्भ्यामन्य० ५।४।१०५
कुमारश्रमणादिभिः २।१।६९
कुमारशीर्षयोर्णिनिः ३।२।५१
कुमारश्च ६।२।२६
कुमार्यां वयसि ६।२।९५
कुमुदनडवेतसेभ्यो० ४।२।८६
कुम्भपदीषु च ५।४।१३९
कुरुगार्हपतरिक्तगु० ६।२।४२
कुरुनादिभ्यो ण्यः ४।१।१७०
कुर्वादिभ्यो ण्यः ४।१।१५१
कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः० ४।२।९५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुलटाया वा ४।१।१२७
कुलत्थकोपधादण् ४।४।४
कुलात्खः ४।१।१३९
कुलालादिभ्यो वुञ् ४।३।११८
कुलिजाल्लुक्खौ च ५।१।५४
कुल्माषादञ् ५।२।८३
कुशाग्राच्छः ५।३।१०५
कुषिरजोः प्राचां श्य० ३।१।९०
कुसीददशैकादशात्ष्ठ० ४।४।३१
कुसूलकूपकुम्भशा० ६।२।१०२
कुस्तुम्बुरूणि जातिः ६।१।१३८
कुहोश्चुः ७।४।६२
कूलतीरतूलमूल० ६।२।१२१
कूलसूदस्थलक० ६।२।१२९
कृकणपर्णाद्भारद्वा० ४।२।१४५
कृच्छ्रगहनयोः कषः ७।२।२२
कृञः प्रतियत्ने २।३।५३
कृञः श च ३।३।१००
कृञो द्वितीयतृतीय० ५।४।५८
कृञो हेतुताच्छील्या० ३।२।२०
कृञ् चानुप्रयुज्यते० ३।१।४०
कृतलब्धक्रीतकुश० ४।३।३८
कृते ग्रन्थे ४।३।११६
कृत्तद्धितसमासाश्च १।२।४६
कृत्यचः ८।४।२९
कृत्यतुल्याख्या अजा० २।१।६८
कृत्यल्युटो बहुलम् ३।३।११३
कृत्याः ३।१।९५
कृत्यानां कर्तरि वा २।३।७१
कृत्यार्थे तवैकेन्केन्य० ३।४।१४
कृत्याश्च ३।३।१७१
कृत्यैरधिकार्थवचने २।१।३३
कृत्यैर्ऋणे २।१।४३
कृत्योकेष्णुच्चार्वादि० ६।२।१६०
कृत्वोऽर्थप्रयोगे का० २।३।६४
कृदतिङ् ३।१।९३
कृन्मेजन्तः १।१।३९
कृपो रो लः ८।२।१८
कृभ्वस्तियोगे संपद्य० ५।४।५०
कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ३।१।५९
कृषश्छन्दसि ७।४।६४
कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो० ७।२।१३
कॄ धान्ये ३।३।३०
केकयमित्रयुप्रलयानां० ७।३।२
केऽणः ७।४।१३
केदाराद्यञ्च ४।२।४०
केवलमामकभागधेय० ४।१।३०
केशाद्वोऽन्यतर० ५।२।१०९
केशाश्वाभ्यां य० ४।२।४८
कोः कत्तत्पुरुषेऽचि ६।३।१०१
कोपधाच्च ४।२।७९
कोपधाच्च ४।३।१३७
कोपधादण् ४।२।१३२
कोशाड्ढञ् ४।३।४२
कौमारापूर्ववचने ४।२।१३
कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ४।१।१९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

कौशल्यकार्मार्या० ४।१।१५५
क्ङिति च १।१।५
क्तक्तवतू निष्ठा १।१।२५
क्तस्य च वर्तमाने २।३।६७
क्तादल्पाख्यायाम् ४।१।५१
क्तिच्क्तौ च सं० ३।३।१७४
क्ते च ६।२।४५
क्तेन च पूजायाम् २।२।१२
क्तेन नञ्विशिष्टे० २।१।५९
क्तेनाहोरात्रावयवाः २।१।४४
क्ते नित्यार्थे ६।२।६१
क्तोऽधिकरणे च ध्रौ० ३।४।७६
क्त्रेर्मम्नित्यम् ४।४।२०
क्त्वा च २।२।२२
क्त्वातोसुन्कसुनः १।१।३९
क्त्वाऽपि च्छन्दसि ७।१।३८
क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ६।४।३१
क्त्वो यक् ७।१।४७
क्यङ्मानिनोश्च ६।३।३५
क्यचि च ७।४।३३
क्यच्व्योश्च ६।४।१५२
क्यस्य विभाषा ६।४।५०
क्याच्छन्दसि ३।२।१७०
क्रतुयज्ञेभ्यश्च ४।३।६८
क्रतूक्थादिसूत्रान्ता० ४।२।५९
क्रतौ कुण्डपाय्यसं० ३।१।१३०
क्रत्वादयश्च ६।२।११७
क्रमः परस्मैपदेषु ७।३।७६

क्रमश्च क्त्वि ६।४।१८
क्रमादिभ्यो वुन् ४।२।६०
क्रय्यस्तदर्थे ६।१।७९
क्रव्ये च ३।२।६९
क्रियार्थोपपदस्य च क० २।३।१४
क्रियासमभिहारे लोट्० ३।४।२
क्रीङ्जीनां णौ ६।१।४७
क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च १।३।२१
क्रीतवत्परिमाणात् ४।३।१५४
क्रीतात्करणपूर्वात् ४।१।५०
क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्था० १।४।३७
क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म १।४।३८
क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ३।२।१५१
क्रौड्यादिभ्यश्च ४।१।८०
क्र्यादिभ्यः श्ना ३।१।८१
क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ७।२।५०
क्वणो वीणायां च ३।३।६५
क्वसुश्च ३।२।१०७
क्वाति ७।२।१०५
क्विन्प्रत्ययस्य कुः ८।२।६२
क्विप् च ३।२।७६
क्षत्राद् घः ४।१।१३८
क्षयो निवासे ६।१।२०१
क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ६।१।७८
क्षायो मः ८।२।५३
क्षिप्रवचने लृट् ३।३।१३३
क्षियः ६।४।५९
क्षियाशीःप्रैषेषु ति० ८।२।१०४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षियो दीर्घात् ८।२।४६
क्षीराड् ढञ् ४।२।१९
क्षुद्रजन्तवः २।४।८
क्षुद्राभ्यो वा ४।१।१३१
क्षुद्राभ्रमरवटरपा० ४।३।११९
क्षुब्धस्वान्तध्वान्त० ७।२।१८
क्षुभ्नादिषु च ८।४।३८
क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ६।२।३९
क्षेत्रियच्परक्षेत्रे चि० ५।२।९२
क्षेपे २।१।४६
क्षेमप्रियमद्रेऽण्च ३।२।४४
क्सस्याचि ७।३।७२
खः सर्वधुरात् ४।४।७८
ख च ४।४।१३२
खचि ह्रस्वः ६।४।९४
खट्वा क्षेपे २।१।२५
खण्डिकादिभ्यश्च ४।२।४४
खनो घ च ३।३।१२५
खरवसानयोर्विसर्जं० ८।३।१५
खरि च ८।४।५४
खलगोरथात् ४।२।४९
खलयवमाषतिलवृष० ५।१।७
खार्या ईकन् ५।२।३३
खार्याः प्राचाम् ५।४।१०१
खित्यनव्ययस्य ६।३।६५
खिदेश्छन्दसि ६।१।५१
ख्यत्यात्परस्य ६।१।१०८
गतिकारकोपपदा० ६।२।१३९
गतिबुद्धिप्रत्यवसाना० १।४।५२
गतिरनन्तरः ६।२।४९
गतिर्गतौ ८।१।७०
गतिश्च १।४।५९ *गतिसंज्ञा*
गत्यर्थकर्मणि द्वितीया २।३।१२
गत्यर्थलोटा लृण्न० ८।१।५१
गत्यर्थाकर्मकश्लिष० ३।४।७२
गत्वरश्च ३।२।१६४
गदमदचरयमश्चा० ३।१।१००
गन्तव्यपण्यं वाणिजे ६।२।१३
गन्धनावक्षेपणसेवन० १।३।३२
गन्धस्येदुत्पूतिसुसु० ५।४।१३५
गमः क्वौ ६।४।४०
गमश्च ३।२।४७
गमहनजनखनघ० ६।४।९८
गमेरिट् परस्मैपदेषु ७।२।५८
गम्भीराञ्ञ्यः ४।३।५८
गर्गादिभ्यो यञ् ४।१।१०५
गर्तोत्तरपदाच्छः ४।२।१३६
गर्हायां लडपि० ३।३।१४२
गर्हायां च ३।३।१४९
गवाश्वप्रभृतीनि च २।४।११
गवियुधिभ्यां स्थिरः ८।३।९५
गः स्थकन् ३।१।१४६
गहादिभ्यश्च ४।२।१३७
गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णि० १।२।१
गाङ् लिटि २।४।४९
गाण्डयजगात्संज्ञा० ५।२।११०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गातिस्थाघुपाभूभ्यः २।४।७७
गाथिविदथिकेशि० ६।४।१६५
गाधलवणयोः प्रमाणे ६।२।४
गापोष्टक् ३।२।८
गिरेश्च सेनकस्य ५।४।११२
गुडादिभ्यष्ठञ् ४।४।१०३
गुणवचनब्राह्मणा० ५।१।१२३
गुणोऽपृक्ते ७।३।९१
गुणो यङ्लुकोः ७।४।८२
गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ७।४।२९
गुपूधूपविच्छिपणि० ३।१।२८
गुपेश्छन्दसि ३।१।५०
गुप्तिज्किद्भ्यः सन् ३।१।५
गुरोरनृतोऽनन्त्यस्या० ८।२।८६
गुरोश्च हलः ३।३।१०३
गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने १।३।६९
गृष्टयादिभ्यश्च ४।१।१३६
गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ४।४।९०
गेहे कः ३।१।१४४
गोः पादान्ते ७।१।५७
गोचरसंचरवहव्रज० ३।३।११९
गोतन्तियवं पाले ६।२।७८
गोतो णित् ७।१।९०
गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो० ४।३।९९
गोत्रचरणाच्छ्लाघा० ५।१।१३३
गोत्रचरणाद् वुञ् ४।३।१२६
गोत्रस्त्रियाः कुत्सने० ४।१।१४७
गोत्राद्अङ्कवत् ४।३।८०
गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् ४।१।९४
गोत्रान्तेवासिमाणव० ६।२।६९
गोत्रावयवात् ४।१।७९
गोत्रे कुञ्जादिभ्यः० ४।१।९८
गोत्रेऽलुगचि ४।१।८९
गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराज० ४।२।३८
गोद्व्यचोऽसंख्या ५।१।३८
गोधाया ढ्रक् ४।१।१२९
गोपयसोर्यत् ४।३।१५८
गोपुच्छाट्ठञ् ४।४।६
गोयवाग्वोश्च ४।२।१३५
गोरतद्धितलुकि ५।४।९२
गोबिडालसिंहसैन्धव० ६।२।७२
गोश्च पुरीषे ४।३।१४३
गोषदादिभ्यो वुन् ५।२।६२
गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे ५।२।१८
गोष्पदं सेवितासे० ६।१।१४०
गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य १।२।४८
गौः सादसादिसार० ६।२।४१
ग्रन्थान्ताधिके च ६।३।७८
ग्रसितस्कभितस्त० ७।२।३४
ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ३।३।५८
ग्रहिज्यावयिव्यधिव० ६।१।१६
ग्रहोऽलिटि दीर्घः ७।२।३७
ग्रामः शिल्पिनि ६।२।६२
ग्रामकौटाभ्यां च त० ५।४।९५
ग्रामजनपदैकदेशाद० ४।३।७
ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ४।२।४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ४।३।६१
ग्रामाद्यखञौ ४।२।९३
ग्रामेऽनिवसन्तः ६।२।८४
ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरु० १।२।७३
ग्रीवाभ्योऽण्च ४।३।५७
ग्रीष्मवसन्तादन्यतर० ४।३।४६
ग्रीष्मावरसमाद् वुञ् ४।३।४९
ग्रो यङि ८।२।२०
ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः ३।२।१३९
घकालतनेषु कालना० ६।३।१६
घच्छौ च ४।४।११७
घञः साऽस्यां क्रिये० ४।२।५७
घञपोश्च २।४।३८
घञि च भावकरणयोः ६।४।२७
घनिलचौ च ५।३।७९
घरूपकल्पचेलड्ब्रुव० ६।३।४२
घसिभसोर्हलि च ६।४।१००
घुमास्थागापाजहा० ६।४।६६
घुषिरविशब्दने ७।२।२३
घेर्ङिति ७।३।१११
घोर्लोपो लेटि वा ७।२।७०
घोषादिषु च ६।२।८५
घ्वसोरेद्धावभ्यास० ६।४।११९
ङमो ह्रस्वादचि ङमु० ८।३।३२
ङयि च ६।१।२०६
ङसिङसोश्च ६।१।१०६
ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ७।१।१५
ङिच्च १।१।५२
ङिति ह्रस्वश्च १।४।६
ङे प्रथमयोरम् ७।१।२८
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ७।३।११६
ङेर्यः ७।१।१३
ङ्णोः कुक्टुक्शरि ८।३।२८
ङ्यापोः संज्ञाछन्दसो० ६।३।६२
ङ्याप्प्रातिपदिकात् ४।१।१
ङ्याश्छन्दसि बहु० ६।१।१७२
चक्षिङः ख्याञ् २।४।५४
चङि ६।१।११
चङ्यन्यतरस्याम् ६।१।२१२
चजोः कु घिण्ण्यतोः ७।३।५२
चटकाया ऐरक् ४।१।१२८
चतुरः शसि ६।१।१६१
चतुरनडुहोरामुदात्तः ७।१।९८
चतुर्थी चाशिष्यायु० २।३।७३
चतुर्थी तदर्थार्थब० २।१।३५
चतुर्थी तदर्थे ६।२।४३
चतुर्थी सम्प्रदाने २।३।१३
चतुर्थ्यर्थे बहुलं छ० २।३।६२
चतुष्पादो गर्भिण्या २।१।७०
चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ४।१।१३५
चनचिदिवगोत्रादि० ८।१।५७
चरणे ब्रह्मचारिणि ६।३।८५
चरणेभ्यो धर्मवत् ४।२।४५
चरति ४।४।८
चरफलोश्च ७।४।८७
चरेष्टः ३।२।१६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चर्मणोऽञ् ५।१।१५
चर्मोदरयोः पूरेः ३।४।३१
चलनशब्दार्थादक० ३।२।१४८
चवायोगे प्रथमा ८।१।५९
चादयोऽसत्त्वे १।४।५७
चादिलोपे विभाषा ८।१।६३
चादिषु च ८।१।५८
चायः की ६।१।२१
चायः की ६।१।३४
चार्थे द्वन्द्वः २।२।२९
चाहलोप एवेत्यव० ८।१।६२
चिणो लुक् ६।४।१०४
चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्य० ६।४।९३
चिण्ते पदः ३।१।६०
चिण्भावकर्मणोः ३।१।६६
चितः ६।१।१५७
चितेः कपि ६।३।१२६
चित्तवति नित्यम् ५।१।८८
चित्याग्निचित्ये च ३।१।१३२
चित्रीकरणे च ३।३।१५०
चिदिति चोपमार्थे० ८।२।१०१
चिन्तिपूजिकथि० ३।३।१०५
चिस्फुरोर्णौ ६।१।५३
चीरमुपमानम् ६।२।१२६
चुटू १।३।७
चूर्णादिनिः ४।४।२३
चूर्णादीन्यप्राणि० ६।२।१३३
चेलखेटकटुककाo ६।२।१२५
चेले क्नोपेः ३।४।३३
चोः कुः ८।२।३०
चौ ६।१।२१६
चौ ६।३।१३७
च्छ्वोः शूडनुनासिके च ६।४।१९
च्लि लुङि ३।१।४३
च्लेः सिच् ३।१।४४
च्वौ च ७।४।२६
छगलिनो ढिनुक् ४।३।१०९
छ च ४।२।२७
छत्रादिभ्यो णः ४।४।६२
छदिरुपधिबलेर्ढञ् ५।१।१३
छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ३।३।१२९
छन्दसि घस् ५।१।१०५
छन्दसि च ५।१।६६
छन्दसि च ५।४।१४२
छन्दसि च ६।३।१२५
छन्दसि ठञ् ४।३।१९
छन्दसि निष्टर्क्य० ३।१।१२३
छन्दसि परिपन्थि० ५।२।८९
छन्दसि परेऽपि १।४।८१
छन्दसि पुनर्वस्वोरे० १।२।६१
छन्दसि लिट् ३।२।१०५
छन्दसि लुङ्लङ्० ३।४।६
छन्दसि वनसनर० ३।२।२७
छन्दसि वा प्राम्रे० ८।३।४९
छन्दसि शायजपि ३।१।८४
छन्दसि सहः ३।२।६३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छन्दसीरः ८।२।१५
छन्दसो निर्मिते ४।४।९३
छन्दसो यदणौ ४।३।७१
छन्दस्यनेकमपि० ८।१।३५
छन्दस्यपि दृश्यते ६।४।७३;७।१।१६
छन्दस्युभयथा ३।४।११७
छन्दस्युभयथा ६।४।५
छन्दस्युभयथा ६।४।८६
छन्दस्यृदवग्रहात् ८।४।२५
छन्दोगौक्थिकया० ४।३।१२९
छन्दोनाम्नि च ३।३।३४
छन्दोनाम्नि च ८।३।९४
छन्दोब्राह्मणानि च त० ४।२।६५
छात्र्यादयः शालायाम् ६।२।८६
छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ६।४।९६
छाया बाहुल्ये २।४।२२
छे च ६।१।७१
छेदादिभ्यो नित्यम् ५।१।६३
जश्शसोः शिः ७।१।२०
जक्षित्यादयः षट् ६।१।६
जङ्गलधेनुवलजान्त० ७।३।२५
जनपदतदवध्योश्च ४।२।१२३
जनपदशब्दात्क्ष० ४।१।१६६
जनपदिनां जनपद० ४।३।१००
जनपदे लुप् ४।२।८०
जनसनखनक्रमगमो० ३।२।६७
जनसनखनां सञ्झलोः ६।४।४२
जनिकर्तुः प्रकृतिः १।४।३०
जनिता मन्त्रे ६।४।५३
जनिवध्योश्च ७।३।३५
जपजभदहदशभञ्ज० ७।४।८६
जम्ब्वा वा ४।३।१६३
जम्भासुहरिततृण० ५।४।१२५
जयः करणम् ६।१।१९६
जराया जरसन्य० ७।२।१०१
जल्पभिक्षकुट्टलुण्ट० ३।२।१५५
जसः शी ७।१।१७
जसि च ७।३।१०९
जहातेश्च ६।४।११६
जहातेश्च क्त्वि ७।४।४३
जागुरूकः ३।२।१६५
जाग्रोऽविचिण्ण० ७।३।८५
जातरूपेभ्यः प० ४।३।१५१
जातिकालसुखा० ६।२।१६९
जातिनाम्नः कन् ५।३।८१
जातिरप्राणिनाम् २।४।६
जातुयदोर्लिङ् ३।३।१४७
जातेरस्त्रीविषयाद० ४।१।६३
जातेश्च ६।३।४०
जात्यन्ताच्छ बन्धुनि० ५।४।९
जात्याख्यायामेक० १।२।५८
जात्वपूर्वं ८।१।४७
जानपदकुण्ड० ४।१।४२
जान्तनशां विभाषा ६।४।३२
जायाया निङ् ५।४।१३४
जालमानायः ३।३।१२४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जासिनिप्रहणनाट० २।३।५६
जिघ्रतेर्वा ७।४।६
जिदृक्षिविश्री० ३।२।१५७
जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ४।३।६२
जीर्यतेरतृन् ३।२।१०४
जीवति तु वंश्ये० ४।१।१६३
जीविकार्थे चापण्ये ५।३।९९
जीविकोपनिषदावौ० १।४।७८
जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्य० ३।२।१५०
जुष्टार्पिते च च्छ० ६।१।२०३
जुसि च ७।३।८३
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः २।४।७५
जॄव्रश्च्योः क्त्वि ७।२।५५
जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचु० ३।१।५८
जे प्रोष्ठपदानाम् ७।३।१८
ज्ञाजनोर्जा ७।३।७९
ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः १।३।५७
ज्ञोऽविदर्थस्य करणे २।३।५१
ज्य च ५।३।६१
ज्यश्च ६।१।४१
ज्यादादीयसः ६।४।१६०
ज्योतिरायुषः स्तोमः ८।३।८३
ज्योतिर्जनपदरा० ६।३।८४
ज्योत्स्नातमिस्रा० ५।२।११४
ज्वरत्वरस्रिव्यवि० ६।४।२०
ज्वलितिकसन्ते० ३।१।१४०
झयः ५।४।१११
झयः ८।२।१०
झयो होऽन्यतरस्याम् ८।४।६२
झरो झरि सवर्णे ८।४।६४
झलां जशोऽन्ते ८।२।३९
झलां जश्झशि ८।४।५३
झलो झलि ८।२।२६
झल्युपोत्तमम् ६।१।१८०
झषस्तथोर्धोऽधः ८।२।४०
झस्य रन् ३।४।१०५
झेर्जुस् ३।४।१०८
झोऽन्तः ७।१।३
ञितश्च तत्प्रत्ययात् ४।३।१५५
ञीतः क्तः ३।२।१८७
ञ्नित्यादिर्नित्यम् ६।१।१९७
ञ्यादयस्तद्राजाः ५।३।११९
टाङसिङसामि० ७।१।१२
टाबृचि ४।१।९
टिड्ढाणञ्द्वयसज्० ४।१।१५
टित आत्मनेपदानां० ३।४।७९
टेः ६।४।१४३ टेर्लोपः)
टेः ६।४।१५५
ट्वितोऽथुच् ३।३।८९
ठक्छौ च ४।२।८४
ठगायस्थानेभ्यः ४।३।७५
ठञ्कवचिनश्च ४।२।४०
ठस्येकः ७।३।५०
ठाजादावूर्ध्वं द्वितीo ५।३।८३
डः सि धुट् ८।३।२९
डति च १।१।२५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डाबुभाभ्यामन्य० ४।१।१३
ड्वितः क्त्रिः ३।३।८८
ढकि लोपः ४।१।१३३
ढक्च मण्डूकात् ४।१।११६
ढश्छन्दसि ४।४।१०६
ढे लोपोऽकद्र्वाः ६।४।१४७
ढो ढे लोपः ८।३।१३
ढ्लोपे पूर्वस्य० ६।३।१११
णचः स्त्रियामञ् ५।४।१४
णलुत्तमो वा ७।१।९१
णिचश्च १।३।७४
णिजां त्रयाणां ७।४।७५
णिनि ६।२।७९
णिश्रिद्रुस्रु० ३।१।४८
णेरणौ यत्कर्मणौ० १।३।६७
णेरध्ययने वृत्तम् ७।२।२६
णेरनिटि ६।४।५१
णेर्विभाषा ८।४।२९
णेश्छन्दसि ३।२।१३७
णो नः ६।१।६३
णौ गमिरबोधने २।४।४६
णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ७।४।१
णौ च संश्चङोः २।४।५१
णौ च संश्चङोः ६।१।३१
ण्य आवश्यके ७।३।६५
ण्यक्षत्रियार्षञितो० २।४।५८
ण्यासश्रन्थो युच् ३।३।१०७
ण्युट् च ३।३।१४७
ण्वुल्तृचौ ३।१।१३३
तङानावात्मनेपदम् १।४।९९
तत आगतः ४।३।७४
तत्पुरुषः २।१।२१
तत्पुरुषः समानाधि० १।२।४२
तत्पुरुषस्याङ्गुलेः० ५।४।८६
तत्पुरुषे कृति ब० ६।३।१३
तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीया० ६।२।२
तत्पुरुषे शालायां० ६।२।१२२
तत्पुरुषोऽनञ्कर्म० २।४।१९
तत्प्रकृतवचने मयट् ५।४।२१
तत्प्रत्यनुपूर्वमीप० ४।४।२८
तत्प्रत्ययस्य च ७।३।२९
तत्प्रयोजको हेतुश्च १।४।५४
तत्र २।१।४५
तत्र कुशलः पथः ५।२।६३
तत्र च दीयते कार्यं० ५।१।९५
तत्र जातः ४।३।२५
तत्र तस्येव ५।१।११५
तत्र तेनेदमिति स० २।२।२७
तत्र नियुक्तः ४।४।६९
तत्र भवः ४।३।५३
तत्र विदित इति च ५।१।४२
तत्र साधुः ४।४।९८
तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ४।२।१३
तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ३।१।९२
तत्सर्वादेः० ५।२।७
तथायुक्तं चानी० १।४।५०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तद्धीते तद्वेद ४।२।५८
तदधीनवचने ५।४।५४
तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ५।१।१२
तदर्हति ५।१।६२
तदर्हम् ५।१।११६
तदशिष्यं संज्ञाप्र० १।२।५३
तदस्मिन्नधिकमि० ५।२।४५
तदस्मिन्नन्नं प्राये० ५।२।८२
तदस्मिन्नस्तीति देशे ४।२।६६
तदस्मिन्वृद्ध्यायला० ५।१।४६
तदस्मै दीयते नि० ४।४।६६
तदस्य तदस्मिन्स्या० ५।१।१६
तदस्य पण्यम् ४।४।५१
तदस्य परिमाणम् ५।१।५६
तदस्य ब्रह्मचर्यम् ५।१।६३
तदस्य संजातं तार० ५।२।३६
तदस्य सोढम् ४।३।५२
तदस्यां प्रहरणमि० ४।२।५६
तदस्यास्त्यस्मिन्नि० ५।२।६४ मतुप्
तदोः सः सावन०। ७।२।१०६
तदो दा च ५।३।१६
तद्गच्छति पथिदूतयोः ४।३।८५
तद्धरतिवहत्यावहति० ५।१।४६
तद्धितश्चासर्वविभक्तिः १।१।३७
तद्धितस्य ६।१।१५८
तद्धिताः ४।१।७६ तद्धितसंज्ञा
तद्धितार्थोत्तरपद० २।१।५०
तद्धितेष्वचामादेः ७।२।११७
तद्युक्तात्कर्मणोऽण् ५।४।३६
तद्राजस्य बहुषु० २।४।६२
तद्वहति रथयुगप्रास० ४।४।७६
तद्वानासामुपधानो० ४।४।१२५
तनादिकृञ्भ्य उः ३।१।७६
तनादिभ्यस्तथासोः २।४।७६
तनिपत्योश्छन्दसि ६।४।६६
तनूकरणे तक्षः ३।१।७६
तनोतेर्यकि ६।४।४४
तनोतेर्विभाषा ६।४।१७
तन्त्रादचिरापहृते ५।२।७०
तपःसहस्राभ्यां वि० ५।२।१०२
तपरस्तत्कालस्य १।१।६६
तपस्तपःकर्मकस्यैव ३।१।८८
तपोऽनुतापे च ३।१।६५
तप्तनप्तनथनाश्च ७।१।४५
तमधीष्टो भृतो भूतो० ५।१।७६
तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ३।४।७०
तयोर्दाहिलौ च च्छ० ५।३।२०
तयोर्य्वावचि संहि० ८।२।१०८
तरति ४।४।५
तरप्तमपौ घः १।१।२२
तवकममकावेकवचने ४।३।३
तवममौ ङसि ७।२।६६
तवै चान्तश्च युगपत् ६।२।५१
तव्यत्तव्यानीयरः ३।१।६६
तसिलादिष्वाकृत्व० ६।३।३४
तसिश्च ४।३।११३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तसेश्च ५।३।८
तसौ मत्वर्थे १।४।१६
तस्थस्थमिपां तां० ३।४।१०१
तस्माच्छसो नः पुंसि ६।१।६६
तस्मादित्युत्तरस्य १।१।६६
तस्मान्नुडचि ६।३।७३
तस्मान्नुड् द्विहलः ७।४।७१
तस्मिन्नणि च युष्माका० ४।३।२
तस्मिन्निति निर्दिष्टे० १।१।६५
तस्मै प्रभवति सं० ५।१।१००
तस्मै हितम् ५।१।५
तस्य तात् ७।१।४४
तस्य च दक्षिणा यज्ञा० ५।१।६४
तस्य धर्म्यम् ४।४।४७
तस्य निमित्तं संयो० ५।१।३७
तस्य निवासः ४।२।६८
तस्य परमाम्रेडितम् ८।१।२
तस्य पाकमूले पी० ५।२।२४
तस्य पूरणे डट् ५।२।४८
तस्य भावस्त्वतलौ ५।१।११८
तस्य लोपः १।३।६
तस्य वापः ५।१।४४
तस्य विकारः ४।३।१३२
तस्य व्याख्यान इति० ४।३।६६
तस्य समूहः ४।२।३६
तस्यादित उदात्त० १।२।३२
तस्यापत्यम् ४।१।६२
तस्येदम् ४।३।११९
तस्येश्वरः ५।१।४१
ताच्छील्यवयोवच० ३।२।१२६
तादौ च निति कृ० ६।२।५०
तान्येकवचनद्विव० १।४।१०१
ताभ्यामन्यत्रोणादयः ३।४।७५
तालादिभ्योऽण् ४।३।१५०
तावतिथं ग्रहणमिति० ५।२।७७
तासस्त्योर्लोपः ७।४।५०
तासि च क्लृपः ७।२।६०
तास्यनुदात्तेन्ङिद० ६।१।१८०
तिककितवादिभ्या० २।४।६८
तिकादिभ्यः फिञ् ४।१।१५४
तिङश्च ५।३।५६
तिङस्त्रीणित्रीणि० १।४।१००
तिङि चोदात्तवति ८।१।७१
तिङो गोत्रादीनि कु० ८।१।२७
तिङ्ङतिङः ८।१।२८
तिङ्शित्सार्वधातु० ३।४।११३
ति च ७।४।८६
तितुत्रतथसिसुसरक० ७।२।६
तित्तिरिवरतन्तु० ४।३।१०२
तित्स्वरितम् ६।१।१७६ ॥ ६/१/२०८॥
तिप्तस्झिसिप्थस्थमि० ३।४।७८
तिप्यनस्तेः ८।२।७३
तिरसस्तिर्यलोपे ६।३।६३
तिरसोऽन्यतरस्याम् ८।३।४२
तिरोऽन्तर्धौ १।४।७०
तिर्यच्यपवर्गे ३।४।६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिविंशतेर्डिति ६।४।१४२
तिष्ठतेरित् ७।४।५
तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च २।१।१६
तिष्युपुनर्वस्वोर्नक्षत्र० १।२।६३
तिसृभ्यो जसः ६।१।१६०
तीररूप्योत्तरपदा० ४।२।१०५
तीर्थे ये ६।३।८६
तीषसहलुभरुषरिषः ७।२।४८
तुग्राद्धन् ४।४।११५
तुजादीनां दीर्घो० ६।१।७
तुदादिभ्यः शः ३।१।७७
तुन्दशोकयोः परिमृ० ३।२।५
तुन्दादिभ्य इलच्च ५।२।११७
तुन्दिवलिवटेर्भः ५।२।१३९
तुपश्यपश्यताहैः पू० ८।१।३९
तुभ्यमह्यौ ङयि ७।२।९५
तुमर्थाच्च भाववचनात् २।३।१५
तुमर्थे सेसेनसे० ३।४।९
तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां० ३।३।१० 3।3।10
तुरिष्ठेमेयःसु ६।४।१५४
तुरुस्तुशम्यमः सा० ७।३।९५
तुल्यार्थैरतुलोपमा० २।३।७२
तुल्यास्यप्रयत्नं स० १।१।९ ||1|1|10
तुश्छन्दसि ५।३।५९
तुह्योस्तातङ्ङाशि० ७।१।३५
तूदीशलातुरवर्मती० ३।४।९४
तूष्णीमि भुवः ३।४।६३
तृजकाभ्यां कर्तरि २।२।१५
तृज्वत्क्रोष्टुः ७।१।९५
तृणह इम् ७।३।९२
तृणे च जातौ ६।३।१०२
तृतीया कर्मणि ६।२।४८
तृतीया च होश्छन्दसि २।३।३
तृतीया तत्कृतार्थेन० २।१।२९
तृतीयादिषु भाषित० ७।१।७४
तृतीयाप्रभृतीन्य० २।२।२१
तृतीयार्थे १।४।८४
तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् २।४।८४
तृतीयासमासे १।१।२९
तृन् ३।२।१३५ 3।1।133
तृफिमृषिकृषेः काश्य० १।२।२५
तृफलभजत्रपश्च ६।४।१२२
ते तद्राजाः ४।१।१७२, 5।3।119
तेन क्रीतम् ५।१।३६
तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः ५।१।११४
तेन दीव्यति खनति० ४।४।२
तेन निर्वृत्तम् ४।२।६७
तेन निर्वृत्तम् । ५।१।७८
तेन परिजय्यलभ्य० ५।१।९२
तेन प्रोक्तम् ४।३।१०१
तेन यथाकथाचहस्ता० ५।१।९७
तेन रक्तं रागात् ४।२।१
तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ५।२।२६
तेन सहेति तुल्य० २।२।२८
तेनैकदिक् ४।३।११२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ते प्राग्धातोः १।४।७६
तेमयावेकवचनस्य ८।१।२२
तोः षि ८।४।४२
तोर्लि ८।४।५९
तौ सत् ३।२।१२७
त्यदादिषु दृशोऽना० ३।२।६०
त्यदादीनामः ७।२।१०२
त्यदादीनि च १।१।७३
त्यदादीनि सर्वैर्नि० १।२।७२
त्यागरागहासकु० ६।१।२१०
त्रपुजतुनोः षुक् ४।३।१३६
त्रसिगृधिधृषिक्षि० ३।२।१४०
त्रिंशच्चत्वारिंशतो० ५।१।६१
त्रिककुत्पर्वते ५।४।१४७
त्रिचतुरोः स्त्रियां० ७।२।९९
त्रिप्रभृतिषु शाकटा० ८।४।४९
त्रेः संप्रसारणं च ५।२।५५
त्रेस्त्रयः ६।३।४७
त्रेस्त्रयः ७।१।५३
त्वमावेकवचने ७।२।९७
त्वामौ द्वितीयायाः ८।१।२३
त्वाहौ सौ ७।२।९४
त्वे च ६।३।६३
थट् च च्छन्दसि ५।२।५०
थलि च सेटि ६।४।१२१
थलि च सेटीड० ६।१।१९६
थाथघञ्क्ताजबि० ६।२।१४३
थासः से ३।४।८०
था हेतौ च च्छन्दसि ५।३।२६
थो न्थः ७।१।८७
दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ६।४।२५
दक्षिणादाच् ५।३।३६
दक्षिणापश्चात्पुर० ४।२।९७
दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ५।४।१२६
दक्षिणोत्तराभ्यामत० ५।३।२८
दण्डव्यवसर्गयोश्च ५।४।२
दण्डादिभ्यो यत् ५।१।६५
ददातिदधात्योर्वि० ३।१।१३९
दधस्तथोश्च ८।२।३८
दधातेर्हिः ७।४।४२
दध्नष्ठक् ४।२।१७
दन्त उन्नत उरच् ५।२।१०६
दन्तशिखात्संज्ञा० ५।२।११३
दम्भ इच्च ७।४।५६
दयतेर्दिगि लिटि ७।४।९
दयायासश्च ३।१।३७
दश्च ७।२।१०९
दश्च ८।२।७५
दस्ति ६।३।१२३
दाणश्च सा चेच्चतु० १।३।५५
दाण्डिनायनहा० ६।४।१७४
दादेर्धातोर्घः ८।२।३२
दाधर्तिदर्धर्ति० ७।४।६५
दाधा घ्वदाप् १।१।१९
दाधेट्सिशदस० ३।२।१५९
दानीं च ५।३।१८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दामन्यादित्रि० ५।३।११६
दामहायनान्ताच्च ४।१।२७
दाम्नीशसयुयुज० ३।२।१८२
दायाद्यं दायादे ६।२।५
दाशगोघ्नौ सं० ३।४।७३
दाश्वान्साह्वान्मी० ६।१।१२
दिक्शब्दा ग्रामज० ६।२।१०३
दिक्शब्देभ्यः सप्तमी० ५।३।२७
दिक्पूर्वपदाट् ठञ्च ४।३।६
दिक्पूर्वपदादसंज्ञा० ४।२।१०६
दिक्पूर्वपदान्ङीप् ४।१।६०
दिक्संख्ये संज्ञायाम् २।१।४९
दिगादिभ्यो यत् ४।३।५४
दिङ्नामान्यन्तराले २।२।२६
दित्यदित्यादित्य० ४।१।८५
दिव उत् ६।१।१२७
दिव औत् ७।१।८४
दिवः कर्म च १।४।४३
दिवसश्च पृथिव्याम् ६।३।२९
दिवस्तदर्थस्य ३।३।५८
दिवादिभ्यः श्यन् ३।१।६९
दिवाविभानिशाप्रभा० ३।२।२१
दिवो झल् ६।१।१७७
दिवो द्यावा ६।३।२८
दिवोऽविजिगीषा० ८।२।४९
दिशोऽमद्राणाम् ७।३।१३
दिष्टिवितस्त्योश्च ६।२।३१
दीङो युडचि क्ङिति ६।४।६३
दीधीवेवीटाम् १।१।६
दृपजनबुधपूरि० ३।१।६१
दीर्घ इणः किति ७।४।६९
दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्र० ६।२।८३
दीर्घजिह्वी च च्छन्द० ४।१।५९
दीर्घं च १।४।१२
दीर्घाच्च वरुणस्य ७।३।२३
दीर्घाज्जसि च ६।१।१०१
दीर्घात् पदान्ताद् वा ६।१।७३
दीर्घादटि समानपादे ८।३।९
दीर्घादाचार्याणम् ८।४।५१
दीर्घोऽकितः ७।४।८३
दीर्घो लघोः ७।४।९४
दुःखात् प्रातिलोम्ये ५।४।६४
दुन्योरनुपसर्गे ३।१।१४२
दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृ० ७।४।३६
दुष्कुलाड् ढक् ४।१।१४२
दुहः कब्घश्च ३।२।७०
दुहश्च ३।१।६३
दूतस्य भागकर्म० ४।४।१२०
दूराद्धूते च ८।२।८४
दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वि० २।३।३५
दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्य० २।३।३४
दृक्स्ववस्स्वतवसां० ७।१।८३
दृग्दृशवतुषु ६।३।८८
दृढः स्थूलबलयोः ७।२।२०
दृतिकुक्षिकलशिव० ४।३।५६
दृशेः क्वनिप् ३।२।९४

३।२।७४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृशे विख्ये च ३।४।११
दृष्टं साम ४।२।७
देयमृणे ४।३।४७
देये त्रा च ५।४।५५
देवताद्वन्द्वे च ६।२।१४०; ६।३।२५
देवताद्वन्द्वे च ७।३।२१
देवतान्तात्तादर्थ्ये० ५।४।२४
देवपथादिभ्यश्च ५।३।१००
देवब्रह्मणोरनु० १।२।३८
देवमनुष्यपुरुष० ५।४।५६
देवसुम्नयोर्यजुषि० ७।४।३८
देवात्तल् ५।४।२७
देविकाशिंशपा० ७।३।१
देविक्रुशोश्चोप० ३।२।१४७
देशे लुबिलचौ च ५।२।१०५
दैवयज्ञिशौचिवृक्षि० ४।१।८१
दो दद्घोः ७।४।४६
दोषो णौ ६।४।९०
द्यतिस्यतिमास्था० ७।४।४०
द्यावापृथिवीशुना० ४।२।३१
द्युतिस्वाप्योः सं० ७।४।६७
द्युद्भ्यो लुङि १।३।९१
द्युद्रुभ्यां मः ५।२।१०८
द्युप्रागपागुदक्प्र० ४।२।१००
द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ६।१।२४
द्रव्यं च भव्ये ५।३।१०४
द्रोणपर्वतजीवन्ता० ४।१।१०३
द्रोश्च ४।३।१५९
द्वन्द्वं रहस्यमर्यादाव० ८।१।१५
द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ५।१।१३२
द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य० २।४।२
द्वन्द्वाच्चुदषहा० ५।४।१०६
द्वन्द्वाच्छः ४।२।६
द्वन्द्वाद् वुन् वैरमैथु० ४।३।१२५
द्वन्द्वे घि २।२।३२
द्वन्द्वे च १।१।३०
द्वन्द्वोपतापगर्ह्या० ५।२।१२८
द्वारादीनां च ७।३।४
द्विगुरेकवचनम् २।४।१
द्विगुश्च २।१।२२
द्विगोः ४।१।२१
द्विगोष्ठंश्च ५।१।५३
द्विगोर्यप् ५।१।८१
द्विगोर्लुगनपत्ये ४।१।८८
द्विगोर्वा ५।१।८५
द्विगौ क्रतौ ६।२।९७
द्विगौ प्रमाणे ६।२।१२
द्वितीयतृतीयचतुर्थ० २।२।३
द्वितीयाटौस्स्वेनः २।४।३४
द्वितीया ब्राह्मणे २।३।६०
द्वितीयायां च ३।४।५३
द्वितीयायां च ७।२।८७
द्वितीयाश्रितातीत० २।१।२३
द्वितीये चानुपाख्ये ६।३।७९
द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ५।४।१८
द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ५।१।३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ५।४।११५
द्वित्रिभ्यां तयस्याय० ५।२।४३
द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ५।४।१०२
द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु० ६।२।१९७
द्वित्र्योश्च धमुञ् ५।३।४५
द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ५।४।१२८
द्विर्वचनेऽचि १।१।५८
द्विवचनविभज्यो० ५।३।५७
द्विषत्परयोस्तापेः ३।२।३९
द्विषश्च ३।४।११२
द्विषोऽमित्रे ३।२।१३१
द्विस्तावा त्रिस्तावा० ५।४।८४
द्विस्त्रिश्चतुरिति० ८।३।४३
द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ४।३।१०
द्वेस्तीयः ५।२।५४
द्वैपवैयाघ्रादञ् ४।२।११
द्व्यचः ४।१।१२१
द्व्यचश्छन्दसि ४।३।१४८
द्व्यचोऽतस्तिङः ६।३।१३४
द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमा० ४।३।७२
द्व्यञ्मगधकलिङ्ग० ४।१।१६८
द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ६।३।९६
द्व्यष्टनः संख्यायाम० ६।३।४६
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने १।४।२२
धः कर्मणि ष्ट्रन् ३।२।१८१
धनगणं लब्धा ४।४।८४
धनहिरण्यात् कामे ५।२।६५
धनुषश्च ५।४।१३२

धन्वयोपधाद् वुञ् ४।२।१२०
धर्मं चरति ४।४।४१
धर्मपथ्यर्थन्याया० ४।४।९२
धर्मशीलवर्णान्ताच्च ५।२।१३२
धर्मादनिच्केवलात् ५।४।१२४
धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ३।४।१
धातोः ३।१।९१
धातोः ६।१।१५६
धातोः कर्मणः स० ३।१।७
धातोरेकाचो हला० ३।१।२२
धातोस्तन्निमि० ६।१।७७
धात्वादेः षः सः ६।१।६२
धान्यानां भवने क्षेत्रे० ५।२।१
धारेरुत्तमर्णः १।४।३५
धि च ८।२।२५
धिन्विकृण्व्योर च ३।१।८०
धुरो यड्ढकौ ४।४।७७
धूमादिभ्यश्च ४।२।१२६
धृषिशसी वैयात्ये ७।२।१९
ध्रुवमपायेऽपादानम् १।४।२४
ध्वमो ध्वात् ७।१।४२
ध्वाङ्क्षेण क्षेपे २।१।४१
नः क्ये १।४।१५
न कपि ७।४।१४
न कर्मव्यतिहारे ७।३।६
न कवतेर्यङि ७।४।६३
न कोपधायाः ६।३।३६
न क्तिचि दीर्घश्च ६।४।३९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न क्त्वा सेट् १।२।१८
न क्रोडादिबह्वचः ४।१।५६
न क्वादेः ७।३।५९
नक्षत्राद् घः ४।४।१४१
नक्षत्राद्वा ८।३।१००
नक्षत्रे च लुपि २।३।४५
नक्षत्रेण युक्तः कालः ४।२।३
नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ४।३।३७
नखमुखात्संज्ञायाम् ४।१।५८
न गतिहिंसार्थेभ्यः १।३।१५
नगरात्कुत्सनप्रावीण्योः ४।२।१२७
न गुणादयोऽवयवाः ६।२।१७५
न गोपवनादिभ्यः २।४।६७
नगोऽप्राणिष्वन्य० ६।३।७७
न गोश्वन्साववर्ण० ६।१।१७६
न ङिसंबुद्ध्योः ८।२।८
न चवाहाहैवयुक्ते ८।१।२४
न च्छन्दस्यपुत्रस्य ७।४।३५
नञ् २।२।६
नञः शुचीश्वरक्षेत्र० ७।३।३०
नञस्तत्पुरुषात् ५।४।७१
नञो गुणप्रतिषेधे० ६।२।१५४
नञो जरमरमित्र० ६।२।११५
नञ्दुःसुभ्यो हलि० ५।४।१२१
नञ्सुभ्याम् ६।२।१७१
नडशादाड् वलच् ४।२।८७
नडादिभ्यः फक् ४।१।९९
नडादीनां कुक्च ४।१।६०
न तिसृचतसृ ६।४।४
नते नासिकायाः सं० ५।२।३१
न तौल्वलिभ्यः २।४।६१
न दण्डमाणवान्ते० ४।३।१३०
न दधिपयआदीनि २।४।१४
नदीपौर्णमास्याग्र० ५।४।११०
नदी बन्धुनि ६।२।१०८
नदीभिश्च २।१।१९
न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ३।१।८९
न दृशः ३।१।४७
नद्याः शेषस्यान्य० ६।३।४३
नद्यादिभ्यो ढक् ४।२।९६
नद्यां मतुप् ४।२।८४
नद्यृतश्च ५।४।१५३
न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु ४।२।११२
न धातुलोप आर्ध० १।१।४
न ध्याख्यापॄमूर्च्छि० ८।२।५७
न नञ्पूर्वात्तत्पुरु० ५।१।१२०
न निर्धारणे २।२।१०
न निविभ्याम् ६।२।१८०
ननौ पृष्टप्रतिवचने ३।२।१२१
नन्दिग्रहिपचादि० ३।१।१३४
नन्द्राः संयोगादयः ६।१।३
नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ८।१।४३
नन्वोर्विभाषा ३।२।१२१
न पदान्तद्विर्वचन० १।१।५७
न पदान्ताट्टोरनाम् ८।४।४१
न परे नः ८।३।२७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न पादम्याङ्यमाङ्य० १।३।८९
नपुंसकमनपुंसके० १।२।६९
नपुंसकस्य झलचः ७।१।७२
नपुंसकाच्च ७।१।१९
नपुंसकादन्यतरस्याम् ५।४।१०९
नपुंसके भावे क्तः ३।३।११४
न पूजनात ५।४।६९
न प्राच्यभर्गादि० ४।१।१७८
न बहुव्रीहौ १।१।२८
न भकुर्छुराम् ८।२।७९
न भाभूपूकमिगमि० ८।४।३३
न भूताधिकसंजीव० ६।२।९१
न भूवाक्चिद्दिधिषु ६।२।१९
न भूसुधियोः ६।४।८५
न भ्राण्नपान्नवेदाना० ६।३।७४
न मपूर्वोऽपत्येऽव० ६।४।१७०
नमः स्वस्तिस्वाहास्व० २।३।१६
नमस्पुरसोर्गत्योः ८।३।४०
न माङ्योगे ६।४।७४
नमिकम्पिस्म्यजस० ३।२।१६७
न मुने ८।२।३
नमोवरिवश्चित्रङः० ३।१।१९
न यः ३।२।१५२
न यदि ३।२।११३
न यद्यनाकाङ्क्ष ३।४।२३
न यासयोः ७।३।४५
न य्वाभ्यां पदान्ता० ७।३।३
न रपरसृपिसृजि० ८।३।११०
न रुधः ३।१।६४
नरे संज्ञायाम् ६।३।१२८
न लिङि ७।२।३९
न लुट् ८।१।२९
न लुमताङ्गस्य १।१।६३
नलोकाव्ययनिष्ठा० २।३।६९
न लोपः प्रातिपदि० ८।२।७
नलोपः सुप्स्वर० ८।२।२
नलोपो नञः ६।३।७३
न ल्यपि ६।४।६९
न वशः ६।१।२०
न विभक्तौ तुस्माः १।३।४
न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ७।२।५९
न वेति विभाषा १।१।४४
न व्यो लिटि ६।१।४६
न शब्दश्लोककलह० ३।२।२३
न शसददवादि० ६।४।१२६
नशेः षान्तस्य ८।४।३६
नशेर्वा ८।२।६३
नश्च ८।३।३०
नश्च धातुस्थो० ८।४।२७
नश्चापदान्तस्य झलि ८।३।२४
नश्छव्यप्रशान् ८।३।७
न षट्स्वस्रादिभ्यः ४।१।१०
न संयोगाद्वमन्तात् ६।४।१३७
न संख्यादेः स० ५।२।८९
न संज्ञायाम ५।४।१५५
नसत्तनिषत्तानु० ८।२।६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न संप्रसारणे सं० ६।१।३६
न सामिवचने ५।४।५
न सुदुभ्यां केवलाभ्याम् ७।१।६८
न सुब्रह्मण्यायां स्व० १।२।३७
नस्तद्धिते ६।४।१४४
नह प्रत्यारम्भे ८।१।३१
न हास्तिनफलक० ६।२।१०१
नहिवृतिवृषि० ६।३।११५
नहो धः ८।२।३४
नाग्लोपिशास्वृदिताम् ७।४।२
नाचार्यराजर्त्वि० ६।२।१३२
नाज्झलौ १।१।१०
नाञ्चेः पूजायाम् ६।४।३०
नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ५।४।१५९
नाडीमुष्टयोश्च ३।२।३०
नाऽतः परस्य ७।३।२७
नादिचि ६।१।१००
नादिन्याक्रोशे० ८।४।४७
नाद्धस्य ८।२।१७
नाधार्थप्रत्यये० ३।४।६२
नानद्यतनवत्० ३।३।१३५
नानोर्ज्ञः १।३।५८
नान्तादसंख्यादेर्मट् ५।२।४९
नाभ्यस्तस्याचि पिति० ७।३।८७
नाभ्यस्ताच्छतुः ७।१।७८
नामन्त्रिते समा० ८।१।७३
नामन्यतरस्याम् ६।१।१७१
नामि ६।४।३
नाम्न्यादिशिग्रहोः ३।४।५८
नाम्रेडितस्यान्त्य० ६।१।९९
नावो द्विगोः ५।४।९९
नाव्ययदिक्शब्द० ६।२।१६७
नाव्ययीभावादतो० २।४।८३
नासिकास्तनयो० ३।२।२९
नासिकोदरौष्ठ० ४।१।५५
निकटे वसति ४।४।७३
निगरणचलनार्थेभ्यश्च १।३।८७
निगृह्यानुयोगे च ८।२।९४
निघो निमितम् ३।३।८७
नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ४।३।१४२
नित्यं शतादिमा० ५।२।५७
नित्य सञ्ज्ञाछन्दसोः ४।१।२९
नित्यं सपत्न्यादिषु ४।१।३५
नित्यं समासेऽनुत्तर० ८।३।४५
नित्यं स्मयतेः ६।१।५९
नित्यं हस्ते पाणा० १।४।७६
नित्यङ्करोतेः ६।४।१०८
नित्यङ्कौटिल्ये गतौ ३।१।२३
नित्यङ्क्रीडाजीविकयोः २।२।१७
नित्यं ङितः ३।४।९९
नित्यं छन्दसि ४।१।४६
नित्यं छन्दसि ७।४।८
नित्यमसिच्प्रजामेधयोः ५।४।१२२
नित्यं पणः परिमाणे ३।३।६६
नित्यं मन्त्रे ६।१।२०४
नित्यवीप्सयोः ८।१।४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निनदीभ्यां स्नातेः० ८।३।८९
निन्दहिंसक्लिशखा० ३।२।१४६
निपात एकाजनाङ् १।१।१४
निपातस्य च ६।३।१३५
निपातैर्यद्यदिहन्तकु० ८।१।३०
निपानमाहावः ३।३।७४
निमूलसमूलयोः कषः ३।४।३४
निरः कुषः ७।२।४६
निरभ्योः पूल्वोः ३।३।२८
निरुदकादीनि च ६।२।१८३
निर्वाणोऽवाते ८।२।५०
निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ४।४।१९
निवाते वातत्राणे ६।२।८
निवासचितिशरी० ३।३।४१
निव्यभिभ्योऽड्व्य० ८।३।११९
निशाप्रदोषाभ्यां च ४।३।१४
निष्कुलान्निष्कोपणे ५।४।६२
निष्ठा २।२।३६ २।२।३६।।
निष्ठा ३।२।१०२
निष्ठा च द्व्यजनात् ६।१।१९९
निष्ठायां सेटि६।४।५२
निष्ठायामण्यदर्थे ६।४।६०
निष्ठाशीङ्स्विदि० १।२।१९
निष्ठोपमानादन्यत० ६।२।१६८
निष्ठोपसर्गपूर्वमन्य० ६।२।११०
निष्प्रवाणिश्च ५।४।१६०
निसमुपविभ्यो ह्वः १।३।३०
निसस्तपतावना० ८।३।१०२
नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसु० ७।४।८४
नीचैरनुदात्तः १।२।३०
नीतौ च तद्युक्तात् ५।३।७७
नुगतोऽनुनासिका० ७।४।८५
नुदविदोन्दत्राघ्रा० ८।२।५६
नुम्विसर्जनीयशर्व्य० ८।३।५८
नृ च ६।४।६
नृ चान्यतरस्याम् ६।१।१७८
नॄन्पे ८।३।१०
नेटि ७।२।४
नेटचलिटि रधेः ७।१।६२
नेड्वशि कृति ७।२।८
नेतराच्छन्दसि ७।१।२६
नेदमदसोरकोः ७।१।११
नेन्द्रस्य परस्य ७।३।२२
नेन्सिद्धबध्नातिषु च ६।३।१९
नेयङुवङ्स्थानावस्त्री १।४।४
नेरनिधाने ६।२।१९१
नेर्गदनदपतपद० ८।४।१७
नेर्बिडज्बिरीसचौ ५।२।३२
नेर्विशः १।३।१७
नोङ्धात्वोः ६।१।१७५
नोत्तरपदेऽनुदात्ता० ६।२।१४२
नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ४।३।१५१
नोदात्तस्वरितोदय० ८।४।६७
नोदात्तोपदेशस्य० ७।३।३४
नोनयतिध्वनयत्ये० ३।१।५१
नोपधात्थफान्ताद्वा १।२।२३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नोपधायाः ६।४।७
नौ गदनदपठस्वनः ३।३।६४
नौ ण च ३।३।६०
नौ द्व्यचष्ठन् ४।४।७
नौवयोधर्मविषमूल० ४।४।९१
नौ वृ धान्ये ३।३।४८
न्यग्रोधस्य च केवलस्य ७।३।५
न्यङ्क्वादीनां च ७।३।५३
न्यधी च ६।२।५३
पक्षात्तिः ५।२।२५
पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति ४।४।३५
पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्च० ५।१।५८
पङ्क्तेश्च ४।१।६८
पचो वः ८।२।५२
पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ५।१।५९
पञ्चमी भयेन २।१।३६
पञ्चमी विभक्ते २।३।४२
पञ्चम्यपाङ्परिभिः २।३।१०
पञ्चम्या अत् ७।१।३१
पञ्चम्या परावध्यर्थे ८।३।५१
पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ६।३।२
पञ्चम्यामजातौ ३।२।९८
पञ्चम्यास्तसिल् ५।३।७ ५।४।४४
पणपादमाषशताद्यत् ५।१।३४
पतः पुम् ७।४।१९
पतिः समास एव १।४।८
पत्यन्तपुरोहिता० ५।१।१२७
पत्यावैश्वर्ये ६।२।१८
पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ४।१।३३
पत्त्रपूर्वादञ् ४।३।१२२
पत्त्राध्वर्युपरिषदश्च ४।३।१२३
पथः पन्थ च ४।३।२९
पथः ष्कन् ५।१।७४
पथि च छन्दसि ६।३।१०७
पथिमथोः सर्वना० ६।१।१९३
पथिमध्यृभुक्षामात् ७।१।८५
पथा विभाषा ५।४।७२
पथ्यतिथिवसति० ४।४।१०४
पदमस्मिन्दृश्यम् ४।४।८७
पदरुजविशस्पृशो० ३।३।१६
पदव्यवायेऽपि ८।४।३७
पदस्य ८।१।१६
पदात् ८।१।१७
पदान्तस्य ८।४।३६
पदान्तस्यान्यतरस्याम् ७।३।९
पदास्वैरिबाह्यापं० ३।१।११९
पदेऽपदेशे ६।२।७
पदोत्तरपदं गृह्णाति ४।४।३९
पद्दन्नोमास्हृन्निशस० ६।१।६१
पद्यत्यतदर्थे ६।३।५२
पन्थो ण नित्यम् ५।१।७५
परः सन्निकर्षः सं० १।४।१०८ संहिता
परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पु० २।४।२६
परश्च ३।१।२
परश्वधाट्ठञ्च ४।४।५८
परस्मिन्विभाषा ३।३।१३८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

.CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परस्मैपदानां णल० ३।४।८२
पराजेरसोढः १।४।२६
परादिश्छन्दसि० ६।२।१९८
परावनुपात्यय इणः ३।३।३८
परावरयोगे च ३।४।२०
परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ४।३।५
परिक्रयणे संप्रदानम० १।४।४४
परिक्लिश्यमाने च ३।४।५५
परिखाया ढञ् ५।१।१७
परिनिविभ्यः सेव० ८।३।७०
परिन्योर्नीणोर्द्यूता० ३।३।३७
परिपन्थं च तिष्ठति ४।४।३६
परिप्रत्युपापा वर्ज्य० ६।२।३३
परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ३।३।२०
परिमाणान्तस्यासं० ७।३।१७
परिमाणे पचः ३।२।३३
परिमुखं च ४।४।२९
परिवृतो रथः ४।२।९
परिव्यवेभ्यः क्रियः १।३।१८
परिषदो ण्यः ४।४।४४
परिषदो ण्यः ४।४।१०१
परिस्कन्दः प्राच्यभ० ८।३।७५
परेरभितो भाविम० ६।२।१८१
परेर्मृषः १।३।८२
परेर्वर्जने ८।१।५
परेश्च ८।३।७४
परेश्च घाङ्कयोः ८।२।२२
परोक्षे लिट् ३।२।११५

परोवरपरम्परपुत्रपौ० ५।२।१०
परौ घः ३।३।८४
परौ भुवोऽवज्ञाने ३।३।५५
परौ यज्ञे ३।३।४७
पर्पादिभ्यः ष्ठन् ४।४।१०
पर्यभिभ्यां च ५।३।८
पर्याप्तिवचनेष्वलम० ३।४।६६
पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ३।३।१११
पर्वताच्च ४।२।१४२
पर्श्वादियौधेयादि० ५।३।११७
पललसूपशाकं मिश्रे ६।२।१२७
पलाशादिभ्यो वा ४।३।१३९
पश्चपश्चा च च्छन्दसि ५।३।३३
पश्चात् ५।३।३२
पश्यार्थैश्चानालोचने ८।१।२५
पाककर्णपर्णपुष्पफ० ४।१।६४
पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ३।१।१३७
पाघ्राध्मास्थाम्नादा० ७।३।७८
पाणिघताडघौ शि० ३।२।५५
पाण्डुकम्बलादिनिः ४।२।१०
पातौ च बहुलम् ८।३।५२
पात्रात् ष्ठन् ५।१।४५
पात्राद्घंश्च ५।१।६७
पात्रेसमितादयश्च २।१।४७
पाथोनदीभ्यां ड्यण् ४।४।१११
पादः पत् ६।४।१३०
पादशतस्य संख्यादे० ५।४।१
पादस्य पदाज्याति० ६।३।५१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पादस्य लोपोऽह० ५।४।१३८
पादार्घाभ्यां च ५।४।२५
पादोऽन्यतरस्याम् ४।१।८
पानं देशे ८।४।९
पापं च शिल्पिनि ६।२।६८
पापाणके कुत्सितैः २।१।५४
पाप्यसांनाय्यनि० ३।१।१२९
पारस्करप्रभृतीनि० ६।१।१५१
पारायणतुरायणचा० ५।१।७१
पाराशर्यशिलालि० ४।३।११०
पारेमध्ये षष्ठचा वा २।१।१७
पार्श्वेनान्विच्छति ५।२।७५
पाशादिभ्यो यः ४।२।४८
पितरामातरा च छ० ६।३।३२
पिता मात्रा १।२।७०
पितुर्यच्च ४।३।७९
पितृव्यमातुलमाता० ४।२।३५
पितृष्वसुश्छण् ४।१।१३२
पिष्टाच्च ४।३।१४४
पीलाया वा ४।१।११८
पुंयोगादाख्यायाम् ४।१।४९
पुंवत्कर्मधारयजाती० ६।३।४१
पुंसि संज्ञायां घः० ३।३।११८
पुंसोऽसुङ् ७।१।८९
पुगन्तलघूपधस्य च ७।३।८६
पुच्छभाण्डचीवरा० ३।१।२०
पुत्रः पुम्भ्यः ६।२।१३१
पुत्राच्छ च ५।१।३९
पुत्रान्तादन्यत० ४।१।१५९
पुत्रेऽन्यतरस्याम् ६।३।२१
पुमः खय्यम्परे ८।३।६
पुमान्स्त्रिया १।२।६७
पुरा च परीप्सायाम् ८।१।४२
पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्म० ४।३।१०५
पुरि लुङ् चास्मे ३।२।१२२
पुरुषश्चाऽन्वादिष्टः ६।२।१८९
पुरुषहस्तिभ्यामण्च ५।२।३८
पुरुषात्प्रमाणेऽन्य० ४।१।२४
पुरे प्राचाम् ६।२।९९
पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ३।२।१८
पुरोऽव्ययम् १।४।६६
पुवः संज्ञायाम् ३।२।१८५
पुषादिद्युताद्यॢदि० ३।१।५५
पुष्करादिभ्यो देशे ५।२।१३५
पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ३।१।११६
पूःसर्वयोर्दारिसहोः ३।२।४१
पूगाञ्ञ्योऽग्रा० ५।३।११२
पूगेष्वन्यतरस्याम् ६।२।२८
पूङः क्त्वा च १।२।२२
पूङश्च ७।२।५१
पूङ्यजोः शानन् ३।२।१२८
पूजनात्पूजितमनु० ८।१।६७
पूजायां नानन्तरम् ८।१।३७
पूतक्रतोरै च ४।१।३६
पूरणगुणसुहितार्थ० २।२।११
पूरणाद्भागे तीयादन् ५।३।४८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरणार्धाट्‌ ठन्‌ ५।१।४७
पूर्णाद्विभाषा ५।४।१४९
पूर्वकालैकसर्वजरत्पु० २।१।४८
पूर्वत्रासिद्धम्‌ ८।२।१
पूर्वं तु भाषायाम्‌ ८।२।९७
पूर्वपदात्‌ ८।३।१०६
पूर्वपदात्संज्ञायामगः ८।४।३
पूर्वपरावरदक्षिणो० १।१।३३
पूर्ववत्सनः १।३।६२
पूर्ववदश्ववडवौ २।४।२७
पूर्वसदृशसमोनार्थ० २।१।३०
पूर्वादिनिः ५।२।८६
पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ७।१।१६
पूर्वाधरावराणामसि० ५।३।३९
पूर्वापरप्रथमचरम० २।१।५७
पूर्वापराधरोत्तरमेक० २।२।१
पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामू० ४।३।२८
पूर्वे कर्तरि ३।२।१९
पूर्वे भूतपूर्वे ६।२।२२
पूर्वैः कृतमिनयौ च ४।४।१३३
पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४
पृथग्विनानानाभि० २।३।३२
पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ५।१।१२१
पृषोदरादीनि यथो० ६।३।१०८
पेषं वासवाहनधिषु च ६।३।५७
पैलादिभ्यश्च २।४।५९
पोटायुवतिस्तोक० २।१।६४
पोरदुपधात्‌ ३।१।९८

पौरोडाशपुरोडाशा० ४।३।७०
प्यायः पी ६।१।२८
प्रकारवचने जातो० ५।३।६९
प्रकारवचने थाल्‌ ५।३।२३
प्रकारे गुणवचनस्य ८।१।१२
प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च १।३।२३
प्रकृत्यान्तःपादम० ६।१।११५
प्रकृत्या भगालम्‌ ६।२।१३६
प्रकृत्याशिषि ३।६।८२
प्रकृत्यैकाच्‌ ६।४।१६३
प्रकृष्टे ठञ्‌ ५।१।१०७
प्रजने वीयतेः ६।१।५४
प्रजने सर्तेः ३।३।७१
प्रजोरिनिः ३।२।१५६
प्रज्ञादिभ्यश्च ५।४।३८
प्रज्ञाश्रद्धार्चा० ५।२।१०१
प्रणवष्टेः ८।२।८९
प्रणाय्योऽसंमतौ ३।१।१२८
प्रतिः प्रतिनि० १।४।९१
प्रतिकण्ठार्थललामं च ४।४।४०
प्रतिजनादिभ्यः खञ्‌ ४।४।९९
प्रतिनिधिप्रतिदाने च० २।३।११
प्रतिपथमेति ठंश्च ४।४।४२
प्रतिबन्धिचिरकृ० ६।२।६
प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ५।४।४४
प्रतिश्रवणे च ८।२।९९
प्रतिष्कशश्च कशेः ६।१।१४७
प्रतिस्तब्धनिस्त० ८।३।११४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ६।२।१९२
प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ५।४।८२
प्रतेश्च ६।१।२५
प्रत्नपूर्वविश्वेमात्था० ५।३।१११
प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ३।१।११८
प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ८।२।८३
प्रत्ययः ३।१।१
प्रत्ययलोपे प्रत्यय० १।१।६१
प्रत्ययस्थात्कात्पूर्व० ७।३।४४
प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः १।१।६०
प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ७।२।९८
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः १।३।५९
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पू० १।४।४०
प्रथने वावशब्दे ३।३।३३
प्रथमचरमतयाल्पा० १।१।३२
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ६।१।९८
१।२।४४ प्रथमानिर्दिष्टं समा० १।२।४३
प्रथमायाश्च द्विवच० ७।२।८८
प्रथमोऽचिरोपसपत्तौ ६।२।५६
प्रधानप्रत्ययार्थ० १।२।५६
प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षा० ८।४।५
प्रभवति ४।३।८३
प्रभौ परिवृढः ७।२।२१
प्रमदसंमदौ हर्षे ३।३।६८
प्रमाणे च ३।४।५१
प्रमाणे द्वयसज्द० ५।२।३७ मात्रच्
प्रयच्छति गर्ह्यम् ४।४।३०
प्रयाजानुयाजौ य० ७।३।६२
प्रयै रोहिष्यै अव्य० ३।४।१०
प्रयोजनम् ५।१।१०८
प्रयोज्यनियोज्यौ० ७।३।६८
प्रवाहणस्य ढे ७।३।२८
प्रवृद्धादीनां च ६।२।१४७
प्रशंसायां रूपप् ५।३।६६
प्रशंसावचनैश्च २।१।६५
प्रशस्यस्य श्रः ५।३।६०
प्रश्ने चासन्नकाले ३।२।११७
प्रष्ठोऽग्रगामिनि ८।३।९२
प्रसमुपोदः पादपूरणे ८।१।६
प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः ५।४।१२९
प्रसितोत्सुकाभ्यां० २।३।४४
प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रा० ६।१।१४८
प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ८।२।५४
प्रस्थपुरवहान्ताच्च ४।२।१२१
प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्या० ६।२।८७
प्रस्थोत्तरपदपल० ४।२।११०
प्रहरणम् ४.४।५७
प्रहासे च मन्योपप० १।४।१०५
प्राक् कडारात्समासः २।१।३
प्राक् क्रीताच्छः ५।१।१
प्राक्सितादड्व्यवा० ८।३।६३
प्रागिवात्कः ५।३।७०
प्रागेकादशभ्योऽच्छ० ५।३।४९
प्राग्घिताद्यत् ४।४।७५
प्राग्दिशो विभक्तिः ५।३।१
प्राग्दीव्यतोऽण् ४।१।८३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राग्रीश्वरान्निपाताः १।४।५६
प्राग्वतेष्ठञ् ५।१।१८
प्राग्वहतेष्ठक् ४।४।१
प्राचां ष्फ तद्धितः ४।१।१७
प्राचां कटादेः ४।२।१३८
प्राचां क्रीडायाम् ६।२।७४
प्राचां ग्रामनगराणाम् ७।३।१४
प्राचां नगरान्ते ७।३।२४
प्राचामवृद्धात्फिन्० ४।१।१६०
प्राचामुपादेरड० ५।३।८०
प्राणभृज्जातिवयो० ५।१।१२८
प्राणिरजतादिभ्यो० ४।३।१५२
प्राणिस्थादातो लज० ५।२।९६
प्रातिपदिकान्तनुम्० ८।४।११
प्रातिपदिकार्थलिङ्ग० २।३।४६
प्रादय उपसर्गाः १।४।५८ उपसर्ग-संज्ञा
प्रादस्वाङ्गं संज्ञा० ६।२।१८२
प्राद्वहः १।३।८१
प्राध्वं बन्धने १।४।७७
प्राप्तापन्ने च द्वितीयया २।२।४
प्रायभवः ४।३।३९
प्रावृट्शरत्कालदि० ६।३।१४
प्रावृष एण्यः ४।३।१७
प्रावृषष्ठप् ४।३।२६
प्रियवशे वदः खच् ३।२।३८
प्रियस्थिरस्फिरोरु० ६।४।१५७
प्रीतौ च ६।२।१६
प्रुसृल्वः समभि० ३।१।१४९
प्रे दाज्ञः ३।२।६
प्रे द्रुस्तुस्रुवः ३।३।२७
प्रे वणिजाम् ३।३।५२
प्रे लपसृद्रुमथवदवसः ३।२।१४५
प्रे लिप्सायाम् ३।३।४६
प्रैष्यब्रुवोर्हविषो दे० २।३।६१
प्रे स्त्रोऽयज्ञे ३।३।३२
प्रैषातिसर्गप्राप्तका० ३।३।१६३
प्रोक्ताल्लुक् ४।२।६३
प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपा० १।३।६४
प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् १।३।४२
प्लक्षादिभ्योऽण् ४।३।१६२
प्लुतप्रगृह्या अचि० ६।१।१२१
प्लुतावैच इदुतौ ८।२।१०६
प्वादीनां ह्रस्वः ७।३।८०
फक्फिञोरन्यत० ४।१।९१
फणां च सप्तानाम् ६।४।१२५
फलेग्रहिरात्मंभरिश्च ३।२।२६
फले लुक् ४।३।१६१
फल्गुनीप्रोष्ठपदा० १।२।६०
फाण्टाहृतिमिमता० ४।१।१५०
फेनादिलच्च ५।२।९९
फेश्छ च ४।१।१४९
बन्धने चर्षौ ४।४।९६
बन्धुनि बहुव्रीहौ ६।१।१४
बन्धे च विभाषा ६।३।१२
बभूथाततन्थजगृ० ७।२।६४
बर्हिषि दत्तम् ४।४।११९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वलादिभ्यो मतुव० ५।२।१३६
वहुगणवतुडति संख्या १।१।२२
वहुपूगगणसङ्घस्य० ५।२।५२
वहुप्रजाश्छन्दसि ५।४।१२३
वहुलं छन्दसि २।४।३९
वहुलं छन्दसि २।४।७३
वहुलं छन्दसि २।४।७६
वहुलं छन्दसि ३।२।८८
वहुलं छन्दसि ५।२।१२२
वहुलं छन्दसि ६।१।३३
वहुलं छन्दसि ७।१।८
वहुलं छन्दसि ७।१।१०
वहुलं छन्दसि ७।१।१०३
वहुलं छन्दसि ७।३।९७
वहुलं छन्दसि ७।४।७८
वहुलं छन्दस्यमा० ६।४।७५
वहुलमाभीक्ष्ण्ये ३।२।८१
वहुवचनस्य वस्नसौ ८।१।२१
वहुवचने झल्येत् ७।३।१०३
वहुव्रीहाविदमेत० ६।२।१६१
वहुव्रीहेरूधसो ङीष् ४।१।२५
वहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ४।१।५२
वहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्व० ६।२।१
वहुव्रीहौ विश्वं सं० ६।२।१०६
वहुव्रीहौ सक्थ्य० ५।४।११३
वहुव्रीहौ सख्येये० ५।४।७३
वहुषु बहुवचनम् १।४।२१
वहोर्नञ्वदुत्तरपद० ६।२।१७५
बहोर्लोपो भू च बहोः ६।४।१५८
बह्वच इञः प्राच्यभ० २।४।६६
वह्वचः कूपेषु ४।२।७२
वह्वचोऽन्तोदात्ताट् ठञ् ४।३।६७
वह्वचो मनुष्यना० ५।३।७८
वह्वच्पूर्वपदा० ४।४।६४
वह्वन्यतरस्याम् ६।२।३०
वह्वल्पार्थाच्छस्का० ५।४।४२
वह्वादिभ्यश्च ४।१।४५
बाष्पोष्मभ्यामुद्व० ३।१।१६
वह्वन्तात्संज्ञायाम् ४।१।६७
वाह्वादिभ्यश्च ४।१।९६
बिभेतेर्हेतुभये ६।१।५५
बिल्वकादिभ्यश्छ० ६।४।१५३
विल्वादिभ्योऽण् ४।३।१३४
विस्ताच्च ५।१।३१
बुधयुधनशजनेङ्० १।३।८६
बृहत्या आच्छादने ५।४।६
ब्रह्मणस्त्वः ५।१।१३५
ब्रह्मणो जानपदा० ५।४।१०४
ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् ३।२।८७
ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ५।४।७८
ब्राह्मणकोष्णिके सं० ५।२।७१
ब्राह्मणमाणववाडवाद्यन् ४।२।४१
ब्राह्मोऽजातौ ६।४।१७१
ब्रुव ईट् ७।३।९३
ब्रुवः पञ्चानामा० ३।४।८४
ब्रुवो वचिः २।४।५३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौष० ८।२।९१
भक्ताख्यास्तदर्थेषु ६।२।७१
भक्ताण्णः ४।४।१००
भक्तादणन्यतरस्याम् ४।४।६८
भक्तिः ४।३।९५
भक्ष्येण मिश्रीकरणम् २।१।३४
भजो ण्विः ३।२।६२
भञ्जभासमिदो घुरच् ३।२।१६१
भञ्जेश्च चिणि ६।४।३३
भय्यप्रवय्ये च छन्दसि ६।१।८०
भर्गात्त्रैगर्ते ४।१।१११
भवतष्ठक्छसौ ४।२।११४
भवतेरः ७।४।७३
भविष्यति गम्यादयः ३।३।३
भविष्यति मर्यादा० ३।३।१३६
भवे छन्दसि ४।४।११०
भव्यगेयप्रवचनीयो० ३।४।६८
भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ४।४।१६
भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा न० ७।३।४७
भस्य ६।४।१२९
भस्य टेर्लोपः ७।१।८८
भागाद्यच्च ५।१।४९
भावकर्मणोः १।३।१३
भावलक्षणे स्थेण्कृ० ३।४।१६
भाववचनाश्च ३।३।११
भावे ३।३।१८, ३।३।१२१,
भावे च ४।४।१४४
भावेऽनुपसर्गस्य ३।३।७५
भाषायां सदवसश्रुवः ३।२।१०८
भासनोपसंभाषा० १।३।४७
भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३७
भिक्षासेनादायेषु च ३।२।१७
भित्तं शकलम् ८।२।५९
भिद्योद्ध्यौ नदे ३।१।११५
भियः क्रुक्लुकनौ ३।२।१७४
भियोऽन्यतरस्याम् ६।४।११५
भियो हेतुभये षुक् ७।३।४०
भीत्रार्थानां भयहेतुः १।४।२५
भीमादयोऽपादाने ३।४।७४
भीरोः स्थानम् ८।३।८१
भीस्म्योर्हेतुभये १।३।६८
भीह्रीभृहुमदजनधन० ६।१।१८६
भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ३।१।३९
भुजन्युब्जौ पाण्युप० ७।३।६१
भुजोऽनवने १।३।६६
भुवः प्रभवः १।४।३१
भुवः संज्ञान्तरयोः ३।२।१७९
भुवश्च ३।२।१३८
भुवश्च ४।१।४७
भुवश्च महाव्याहृतेः ८।२।७१
भुवो भावे ३।१।१०७
भुवो वुग्लुङ्लिटोः ६।४।८८
भूतपूर्वे चरट् ५।३।५३
भूते ३।२।८४
भूते च ३।३।१४०
भूतेऽपि दृश्यन्ते ३।३।२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूवादयो धातवः १।३।१
भूषणेऽलम् १।४।६३
भूसुवोस्तिङि ७।३।८८
भृञामित् ७।४।७६
भृञोऽसंज्ञायाम् ३।१।११२
भृशादिभ्यो भुव्यच्वे० ३।१।१२
भोज्यं भक्ष्ये ७।३।६९
भोभगोअघोअपूर्व० ८।३।१७
भौरिक्याद्यैषुकार्या० ४।२।५३
भ्यसो भ्यम् ७।१।३०
भ्रस्जो रोपधयो० ६।४।४७
भ्राजभासधुर्विद्यु० ३।२।१७७
भ्राजभासभाषदीप० ७।४।३
भ्रातरि च ज्यायसि ४।१।१६४
भ्रातुर्व्यच्च ४।१।१४४
भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहि० १।२।६८
भ्रुवो वुक्च ४।१।१२५
मघवा बहुलम् ६।४।१२८
मड्डुकझर्झरादणन्य० ४।४।५६
मतजनहलात्करण० ४।४।९७
मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ३।२।१८८
मतुवसो रु संबुद्धौ० ८।३।१
मतोः पूर्वमात् संज्ञा० ६।१।२१३
मतोश्च बह्वजङ्गात् ४।२।७१
मतौ च ४।४।१३६
मतौ छः सूक्तसाम्नोः ५।२।५९
मतौ बह्वचोऽनजि० ६।३।११९
मत्वर्थे मासतन्वोः ४।४।१२८
मदोऽनुपसर्गे ३।३।६७
मद्रवृज्योः कन् ४।२।१३०
मद्रात्परिवापणे ५।४।६७
मद्रेभ्योऽञ् ४।२।१०७
मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मण० ४।१।१०६
मधोः ४।४।१३९
मधोर्ञ च ४।४।१२९
मध्याद् गुरौ ६।३।१०
मध्यान्मः ४।३।८
मध्येपदेनिवचने च १।४।७५
मध्वादिभ्यश्च ४।२।८५
मनः ३।२।८२
मनः ४।१।११
मनसः संज्ञयाम् ६।३।४
मनुष्यतत्स्थयो० ४।२।१३३
मनोरौ वा ४।१।३८
मनोर्जातावञ्य० ४।१।१६१
मन्क्तिन्व्याख्यान० ६।२।१५०
मन्त्रे घसह्वरणश० २।४।८०
मन्त्रे वृषेषपचमन० ३।३।९६
मन्त्रे श्वेतवहोक्थश० ३।२।७१
मन्त्रेष्वाङ्यादे० ६।४।१४१
मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय० ६।३।१३०
मन्थौदनसक्तुबि० ६।३।५९
मन्यकर्मण्यनादरे वि० २।३।१७
मपर्यन्तस्य ७।२।९१
मय उञो वो वा ८।३।३३
मयट् च ४।३।८२ तैल आगया" में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मयड्वैतयोर्भाषा० ४।३।१४१
मयतेरिदन्यतर० ६।४।७०
मयूरव्यंसकादयश्च २।१।७१
मये च ४।४।१३८
मस्करमस्करिणौ० ६।१।१४६
मस्जिनशोर्झलि ७।१।६०
महाकुलादञ्खञौ ४।१।१४१
महान्व्रीह्यपराह्णगृष्टी० ६।२।३८
महाराजप्रोष्ठपदा० ४।२।३४
महाराजाट्ठञ् ४।३।९७
महेन्द्राद्घाणौ च ४।२।२८
माङि लुङ् ३।३।१७५
माणवचरकाभ्यां खञ् ५।१।११
मातरपितरावुदीचाम् ६।३।३१
मातुःपितुर्भ्यामन्य० ८।३।८५ मातुर
मातुरुत्संख्यासंभद्र० ४।१।११५
मातृपितृभ्यां स्वसा ८।३।८४
मातृष्वसुश्च ४।१।१३४
मात्रोपज्ञोपक्रम० ६।२।१४
माथोत्तरपद० ४।४।३७
मादुपधायाश्च म० ८।२।९
मानपश्वङ्गयोः कन्० ५।३।५१
माने वयः ४।३।१६०
मान्बधदान्शान्० ३।१।६
मायायामण् ४।४।१२४
मालादीनां च ६।२।८८
मासाद्वयसि य० ५।१।८०
मितनखे च ३।२।३४
मितां ह्रस्वः ६।४।९२
मित्रे चर्षौ ६।३।१२९
मिथ्योपपदात्कृ० १।३।७१
मिदचोऽन्त्या० १।१।४६।।१।१।४५
मिदेर्गुणः ७।३।८२
मिश्रं चानुपसर्ग० ६।२।१५३
मीनातिमिनोतिदी० ६।१।४६
मीनातेर्निगमे ७।३।८१
मुखं स्वाङ्गम् ६।२।१६६
मुखनासिकावच० १।१।८
मुचोऽकर्मकस्य० ७।४।५७
मुण्डमिश्रश्लक्ष्ण० ३।१।२१
मुद्गादण् ४।४।२५
मूर्तौ घनः ३।३।७७
मूलमस्याबर्हि ४।४।८८
मृजेर्विभाषा ३।१।११३
मृजेर्वृद्धिः ७।२।११४
मृडमृदगुध० १।२।७
मृदस्तिकन् ५।४।३९
मृषस्तितिक्षायाम् १।२।२०
मेघर्तिभयेषु कृञः ३।२।४३
मेर्निः ३।४।८९
मोऽनुस्वारः ८।३।२३
मो नो धातोः ८।२।६४
मो राजि समः कौ ८।३।२५
म्रियतेर्लुङ्लि० १।३।६१
म्वोश्च ८।२।६५
यः सौ ७।२।११०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यङश्चाप् ४।१।७४
यङि च ७।४।३०
यङोऽचि च २।४।७४
यङो वा ७।३।९४
यचि भम् १।४।१८
यच्चयत्रयोः ३।३।१४८
यजजपदशां यङः ३।२।१६६
यजध्वैनमिति च ७।१।४३
यजयाचयतविच्छ० ३।३।९०
यजयाचरुचप्रवचर्चं० ७।३।६६
यजुष्युरः ६।१।११३
यजुष्येकेषाम् ८।३।१०४
यजेश्च करणे २।३।६३
यज्ञकर्मण्यजप० १।२।३४
यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ ५।१।७०
यज्ञे समि स्तुवः ३।३।३१
यञञोश्च २।४।६४
यञश्च ४।१।१६
यञिञोश्च ४।१।१०१
यतश्च निर्धारणम् २।३।४१
यतोऽनावः ६।१।२०७
यत्तदेतेभ्यः परिमाणे० ५।२।३९
यथातथयोरसू० ३।४।२८
यथातथयथापुर० ७।३।३१
यथामुखसंमु० ५।२।६
यथाविध्यनुप्र० ३।४।४
यथासंख्यमनु० १।३।१०
यथाऽसादृश्ये २।१।७
यथास्वे यथायथम् ८।१।१४
यद्धितुपरं छन्दसि ८।१।५६
यद्वृत्तान्नित्यम् ८।१।६६
यमः समुपनिविषु च ३।३।६३
यमरमनमातां० ७।२।७३
यमो गन्धने १।२।१५
ययतोश्चातदर्थे ६।२।१५५
यरोऽनुनासिकेऽनु० ८।४।४५
यवयवकषष्टिका० ५।२।३
यश्च यङः ३।२।१७६
यसोऽनुपसर्गात् ३।१।७१
यस्कादिभ्यो गोत्रे २।४।६३
यस्मात्प्रत्ययविधि० १।४।१३
यस्मादधिकं यस्य चे० २।३।९
यस्य च भावेन० २।३।३७
यस्य चायामः २।१।१५
यस्य विभाषा ७।२।१५
यस्य हलः ६।४।४९
यस्येति च ६।४।१४८
याजकादिभिश्च २।२।९
याज्यान्तः ८।२।९०
याडापः ७।३।११३
याप्ये पाशप् ५।३।४७
यावति विन्दजीवोः ३।४।३०
यावत्पुरानिपात० ३।३।४
यावदवधारणे २।१।८
यावद्यथाभ्याम् ८।१।३६
यावादिभ्यः कन् ५।४।२९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यासुट् परस्मैपदे० ३।४।१०३
यीवर्णयोर्दीधीवे० ७।४।५३
युक्तरोह्यादयश्च ६।२।८१
युक्ते च ६।२।६६
पुग्यं च पत्रे ३।१।१२१
युजेरसमासे ७।१।७१
युप्लुवोदीर्घ० ६।४।५८
युवा खलतिप० २।१।६६
युवाल्पयोः कनन्य० ५।३।६४
युवावौ द्विवचने ७।२।९२
युवोरनाकौ ७।१।१
युष्मत्तत्तत्क्षु० ८।३।१०३
युष्मदस्मदोः षठी० ८।१।२०
युष्मस्मदोरनादे० ७।२।८६
युष्मदस्मदोरन्य० ४।३।१
युष्मदस्मदोर्ङसि ६।१।२०५
युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ७।१।२७
युष्मद्युपपदे स० १।४।१०४
यूनस्तिः ४।१।७७
यूनि लुक् ४।१।९०
यूयवयौ जसि ७।२।९३
यू स्त्र्याख्यौ नदी १।४।३
ये च ६।४।१०९
ये च तद्धिते ६।१।६०
ये चाभावकर्म० ६।४।१६८
येन विधिस्तदन्तस्य १।१।७१
येनाङ्गविकारः २।३।२०
ये यज्ञकर्मणि ८।२।८८
ये विभाषा ६।४।४३
येषां च विरोधः शा० २।४।९
योगप्रमाणे च० १।२।५५
योगाद्यच्च ५।१।१०१
योऽचि ७।२।८९
योजनं गच्छति ५।१।७३
योपधाद्गुरूपोत्त० ५।१।१३१
र ऋतो हलादेर्ल० ६।४।१६१
रक्ते ५।४।३२; रक्षति ४।४।३३
रक्षोयातूनां ह० ४।४।१२१
रङ्कोरमनुष्ये० ४।२।९९
रज कृष्यासु० ५।२।११२
रञ्जेश्च ६।४।२६
रथवदयोश्च ६।३।१०१
रथाद्यत् ४।३।१२१
रदाभ्यां निष्ठातो नः० ८।२।४५
रधादिभ्यश्च ७।२।४५
रधिजभोरचि ७।१।६१
रभेरशब्लिटोः ७।१।६३
रलोव्युपधाद्ध० १।२।२६
रश्मौ च ३।३।५३
रषाभ्यां नो णः स० ८।४।१
रसादिभ्यश्च ५।२।९५
राजदन्तादिषु० २।२।३१
राजनि युधिकृञः ३।२।९५
राजन्यबहुवचन० ६।२।३४
राजन्यादिभ्यो वु० ४।२।५२
राजन्वान्सौराज्ये ८।२।१४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजश्वशुराद्यत् ४।१।१३७
राजसूयसूर्य० ३।१।११४
राजा च ६।२।५९
राजा च प्रशंसायाम् ६।२।६३
राजाहःसखि० ५।४।९१
राज्ञः क च ४।२।१३९
रात्राह्नाहाः पुंसि २।४।२९
रात्रेः कृति वि० ६।३।७१
रात्रेश्चाजसौ ४।१।३१
रात्र्यहःसंवत्स० ५।१।८६
रात्सस्य ८।२।२४
राधीक्ष्योर्यस्य० १।४।३९
राधो हिंसायाम् ६।४।१२३
रायो हलि ७।२।८५
राल्लोपः ६।४।२१
राष्ट्रावारपारा० ४।२।९२
रिक्ते विभाषा ६।१।२०२
रिङ् शयग्लिङ्क्षु ७।४।२८
रि च ७।४।५१
रीगृदुपधस्य च ७।४।९०
रीङ् ऋतः ७।४।२७
रुग्रिकौ च लुकि ७।४।९१
रुच्यर्थानां प्रीयमाणः १।४।३३
रुजार्थानां भावव० २।३।५४
रुदविदमुषग्रहि० १।२।७
रुदश्च पञ्चभ्यः ७।३।९८
रुदादिभ्यः सार्व० ७।२।७६
रुधादिभ्यः श्नम् ३।१।७८
रुष्यमत्वरसंघु० ७।२।२८
रुहः पोऽन्यतरस्याम् ७।३।४३
रूपादाहतप्र० ५।२।१२०
रेवतीजगती० ४।४।१२२
रेवत्यादिभ्यष्ठक् ४।१।१४६
रैवतिकादिभ्यश्छः ४।३।१३१
रोः सुपि ८।३।१६
रोगाख्यायां ण्वु० ३।३।१०८
रोगाच्चापनयने ५।३।४९
रोणी ४।२।७७
रोपधेतोः प्राचाम् ४।२।१२३
रो रि ८।३।१४
रोऽसुपि ८।२।६९
र्वोरुपधाया० ८।२।७६
लः कर्मणि च भावे० ३।४।६९
लः परस्मैपदम् १।४।९९
लक्षणहेत्वोः० ३।२।१२६
लक्षणे जायापत्योष्टक् ३।२।५२
लक्षणेत्थंभूताख्यान० १।४।९०
लक्षणेनाभिप्रती० २।१।१४
लङः शाकटायन० ३।४।१११
लटः शतृशानचा० ३।२।१२४
लट् स्मे ३।२।११८
लभेश्च ७।१।६४
लवणाट्ठञ् ४।४।५२
लवणाल्लुक् ४।४।२४
लशक्वतद्धिते १।३।८
लषपतपदस्था० ३।२।१५४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लस्य ३।४।७७
लाक्षारोचनाट्ठक् ४।२।२
लिङः सलोपोऽन० ७।२।७९
लिङः सीयुट् ३।४।१०२
लिङर्थे लेट् ३।४।७
लिङाशिषि ३।४।११६
लिङ् च ३।३।१५९
लिङ् चोर्ध्वमौहू० ३।३।१६४
लिङ्निमित्ते लृङ्० ३।३।१३९
लिङ् यदि ३।३।१६८
लिङ्याशिष्यङ् ३।१।८६
लिङ्सिचावात्म० १।२।११
लिङ्सिचोरात्म० ७।२।४२
लिटः कानज्वा ३।२।१०६
लिटस्तझयोरेशि० ३।४।८१
लिटि धातोरनभ्या० ६।१।८
लिटि वयो यः ६।१।३८
लिट् च ३।४।११५
लिट्यन्यतरस्याम् २।४।४०
लिट्यभ्यासस्यो० ६।१।१७
लिड्यङोश्च ६।१।२९
लिति ६।१।१८७
लिपिसिचिह्वश्च ३।१।५३
लिप्स्यमानसि० ३।३।७
लियः संमानन० १।३।७०
लीलोर्नुग्लुकावन्य० ७।३।३९
लुक्तद्धितलुकि १।२।४९
लुक् स्त्रियाम् ४।१।१०९
लुग्वादुहदिह० ७।३।७३
लुङ् ३।२।११०
लुङि च २।४।४३
लुङ्लङ्लृङ्० ६।४।७१
लुङ्सनोर्घस्लृ २।४।३७
लुटः प्रथमस्य० २।४।८५
लुटि च क्लृपः १।३।९३
लुपसदचरजप० ३।१।२४
लुपि युक्तवद् व्यक्ति० १।२।५१
लुप् च ४।३।१६४
लुबविशेषे ४।२।४
लुब्योगाप्रख्या० १।२।५४
लुभो विमोहने ७।२।५४
लुम्मनुष्ये ५।३।९८
लृटः सद्वा ३।३।१४
लृट् शेषे च ३।३।१३
लेटोऽडाटौ ३।४।९४
लोकसर्वलोका० ५।१।४३
लोटो लङ्वत् ३।४।८५
लोट् च ३।३।१६२
लोट् च ८।१।५२
लोडर्थलक्षणे च ३।३।८
लोपः पिबतेरी० ७।४।४
लोपः शाकल्यस्य ८।३।१९
लोपश्चास्यान्यतर० ६।४।१०७
लोपस्त आत्मनेप० ७।१।४१
लोपे विभाषा ८।१।४५
लोपो यि ६।४।११८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोपो व्योर्वलि ६।१।६४
लोमादिपामादि० ५।२।१००
लोहितादिडाज्भ्यः० ३।१।१३
लोहितान्मणौ ५।४।३०
ल्यपि च ६।१।४०
ल्यपि लघुपूर्वात् ६।४।५६
ल्युट् च ३।३।११५
ल्वादिभ्यः ८।२।४४
वच उम् ७।४।२०
वचिस्वपियजादी० ६।१।१५
वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ७।३।६७
वञ्चिलुञ्च्यृतश्च १।२।२४
वञ्चेर्गतौ ७।३।६३
वतण्डाच्च ४।१।१०८
वतोरिड् वा ५।१।२३
वतोरिथुक् ५।२।५३
वत्सरान्ताच्छश्छ० ५।१।९०
वत्सशालाभिजिद० ४।३।३६
वत्सांसाभ्यां कामबले ५।२।९८
वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च० ५।३।९१
वदः सुपि क्यप् च ३।१।१०६
वदव्रजहलन्तस्याचः ७।२।३
वनं समासे ६।१।१७७
वनगिर्योः संज्ञायां० ६।३।११६
वनं पुरगामिश्रका० ८।४।४
वनो र च ४।१।७
वन्दिते भ्रातुः ५।४।१५७
वमोर्वा ८।४।२२

वयसि च ३।२।१०
वयसि दन्तस्य दतृ ५।४।१४१
वयसि पूरणात् ५।२।१३०
वयसि प्रथमे ४।१।२०
वयस्यासु मूर्ध्नो म० ४।४।१२७
वरणादिभ्यश्च ४।२।८१
वर्गान्ताच्च ४।३।६३
वर्ग्यादयश्च ६।२।१३०
वर्चस्केऽवस्करः ६।१।१४८
वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च ५।१।१२२
वर्णादनुदात्तात्तोप० ४।१।३९
वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ५।२।१३४
वर्णे चानित्ये ५।४।३१
वर्णो वर्णेन २।१।६९
वर्णो वर्णेष्वनेते ६।२।३
वर्णौ वुक् ४।२।१०२
वर्तमानसामीप्ये व० ३।३।१३१
वर्तमाने लट् ३।२।१२३
वर्षप्रमाण ऊलोपश्चा० ३।४।३२
वर्षस्याभविष्यति ७।३।१६
वर्षाभ्वश्च ६।४।८४
वर्षाभ्यष्ठक् ४।३।१८
वर्षाल्लुक्च ५।१।८७
वले ६।३।११८
वशं गतः ४।४।८६
वश्चास्यान्यतरस्या० ६।१।३८
वसतिक्षुधोरिट् ७।२।५२
वसन्ताच्च ४।३।२०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसन्तादिभ्यष्ठक् ४।२।६२
वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां० ८।२।७२
वसोः समूहे च ४।४।१४०
वसोः सम्प्रसारणम् ६।४।१३१
वस्तेर्ढञ् ५।३।१०१
वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् ४।४।१३
वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ५।१।५०
वस्वेकाजाद्घसाम् ७।२।६७
वहश्च ३।२।६४
वहाभ्रे लिहः ३।२।३२
वहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि०
६।२।१७४
वह्यं करणम् ३।१।१०२
वाकिनादीनां कुक्च ४।१।१५८
वा क्यषः १।३।९०
वाक्यस्य टेः प्लुत उ० ८।२।८२
वाक्यादेरामन्त्रित० ८।१।८
वा क्रोशदैन्ययोः ६।४।७१
वा गमः १।२।१३
वा घोषमिश्रशब्देषु ६।३।५५
वाचंयमपुरंदरौ च ६।३।६८
वा चित्तविरागे ६।४।९१
वाचि यमो व्रते ३।२।४०
वाचो ग्मिनिः ५।२।१२४
वाचो व्याहृतार्थायाम् ५।४।६५
वा छन्दसि ३।४।८८
वा छन्दसि ६।१।१०२
वा जाते ६।२।१७०
वा जॄभ्रमुत्रसाम् ६।४।१२४
वातातीसाराभ्यां० ५।२।१२९
वा दान्तशान्तपूर्ण० ७।२।२७
वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम ८।२।३३
वा नपुंसकस्य ७।१।७९
वा निसनिक्षनिन्दाम् ८।४।३३
वान्तो यि प्रत्यये ६।१।७९
वान्यस्मिन्त्सपि० ४।१।१६५
वान्यस्य संयोगादेः ६।४।६८
वा पदान्तस्य ८।४।५९
वा बहूनां जातिपरि० ५।३।९३
वा भावकरणयोः ८।४।१०
वा भुवनम् ६।२।२०
वा भ्राशभ्लाशभ्रमु० ३।१।७०
वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ४।२।९
वाऽऽमि १।४।५
वाऽम्शसोः ६।४।८०
वा यौ २।४।५७
वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ४।२।३१
वारणार्थानामीप्सितः १।४।२७
वा लिटि २।४।५५
वा ल्यपि ६।४।३८
वाऽवसाने ८।४।५६
वा शरि ८।३।३६
वा शोकष्यञ्रोगेषु ६।३।५१
वा षपूर्वस्य निगमे ६।४।९
वा संज्ञायाम् ५।४।१३३
वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ३।१।९४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ४।३।९८
वा सुप्यापिशलेः ६।१।८९
वाह ऊठ् ६।४।१३२
वाहः ४।१।६१
वा ह च च्छन्दसि ५।३।१३
वाहनमाहितात् ८।४।८
वाहिताग्न्यादिषु २।२।३७
वाहीकग्रामेभ्यश्च ४।२।११६
विंशतिकात्खः ५।१।३२
विंशतित्रिंशद्भ्यां० ५।१।२४
विंशत्यादिभ्यस्तमड० ५।२।५६
विकर्णकुषीतका० ४।१।१२४
विकर्णशुङ्गच्छग० ४।१।११७
विकुशमिपरिभ्यः० ८।३।९६
विचार्यमाणानाम् ८।२।९७
विज इट् १।२।२
विजुपे छन्दसि ३।२।७३
विड्वनोरनुनासिक० ६।४।४१
वित्तो भोगप्रत्यययोः ८।२।५८
विदांकुर्वन्त्वित्य० ३।१।४१
विदिभिदिच्छिदेः० ३।२।१६२
विदूराञ्ञ्यः ४।३।८४
विदेः शतुर्वसुः ७।१।३६
विदो लटो वा ३।४।८३
विद्यायोनिसंबन्धे० ४।३।७७
विधिनिमन्त्रणा० ३।३।१६१
विध्यत्यधनुषा ४।४।८३
विध्वरुषोस्तुदः ३।२।३५
विनञ्भ्यां नानाञौ० ५।२।२७
विनयादिभ्यष्ठक् ५।४।३४
विन्दुरिच्छुः ३।२।१६९
विन्मतोर्लुक् ५।३।६५
विपराभ्यां जेः १।३।१९
विपूयविनीयजि० ३।१।११७
विप्रतिषिद्धं चानधि० २।४।१३
विप्रतिषेधे परं कार्यम् १।४।२
विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञा० ३।२।१८०
विभक्तिश्च १।४।१०३
विभाषर्जोश्छन्दसि ६।४।१६२
विभाषापपरिबहि० २।१।११
विभाषा कथमि० ३।३।१४३
विभाषा कदाकर्ह्योः ३।३।५
विभाषाऽकर्मकात् १।३।८५
विभाषा कार्षापणस० ५।१।२९
विभाषा कुरुयुग० ४।२।१२९
विभाषा कृञि १।४।७१
विभाषा कृञि १।४।९७
विभाषा कृवृषोः ३।१।१२०
विभाषाऽऽख्यानपरि० ३।३।११०
विभाषा गमहनवि० ७।२।६८
विभाषा गुणेऽस्त्रि० २।३।२५
विभाषा ग्रहः ३।१।१४३
विभाषाऽप्रे प्रथमपूर्वेषु ३।४।२४
विभाषा घ्राधेट्शा० २।४।७८
विभाषाङि रुप्लुवोः ३।३।५०
विभाषा ङिश्योः ६।४।१३६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभाषा चत्वारिंश० ६।३।४९
विभाषा चिण्णमुलोः ७।१।६९
विभाषा चेः ७।३।५८
विभाषा छन्दसि १।२।३६
विभाषा छन्दसि ६।२।१६३
विभाषा छन्दसि ७।४।४४
विभाष जसि १।१।३१
विभाषाञ्चेरदिक्स्त्र० ५।४।८
विभाषा तिलमाषो० ५।२।४
विभाषा तृतीया० ७।१।९७
विभाषा तृन्नन्नती० ६।२।१६०
विभाषा दिक्समासे० १।१।२७
विभाषा द्वितीयातृ० ७।३।११५
विभाषा धातौ सं० ३।३।१५५
विभाषा घेट्श्व्योः ३।१।४९
विभाषाऽध्यक्षे ६।२।६७
विभाषाऽपः ६।४।५७
विभाषा परावराभ्याम् ५।३।२९
विभाषा परेः ६।१।४३
विभाषा पुरुषे ६।३।१०५
विभाषा पूर्वाह्णापरा० ४।३।२४
विभाषा पृष्टप्रतिवच० ८।२।९३
विभाषा फाल्गुनीश्र० ४।२।२२
१३।५२ विभाषा बहोर्धाविप्र० ५।४।२०
विभाषा भावादिक० ७।२।१७
विभाषा भाषायाम् ६।१।१७५
विभाषाभ्यवपूर्वस्य ६।१।२६
विभाषा मनुष्ये ४।२।१४३
विभाषा रोगातपयोः ४।३।१३
विभाषा लीयतेः ६।१।५०
विभाषा लुङ्लृङोः २।४।५०
विभाषाऽवरस्य ५।३।४१
विभाषा वर्षक्षरशरव० ६।३।१५
विभाषा विप्रलापे १।३।५०
विभाषा विवधात् ४।४।१७
विभाषा वृक्षमृगतृ० २।४।१२
विभाषा वेण्विन्धा० ६।१।२०९
विभाषा वेष्टिचेष्टयोः ७।४।९६
विभाषा श्यावारो० ५।४।११४
विभाषा श्वेः ६।१।३०
विभाषा सपूर्वस्य ४।१।३४
विभाषा समीपे २।४।१६
विभाषा साकाङ्क्षे ३।२।११४
विभाषा साति का० ५।४।५२
विभाषा सुपो बहुच्पु० ५।३।६८
विभाषा सृजिदृशोः ७।२।६५
विभाषा सेनासुरा० २।४।२५
विभाषा स्वसृपत्योः ६।३।२३
विभाषा हविरपूपादि० ५।१।४
विभाषितं सोपसर्ग० ८।१।५३
विभाषेटः ८।३।७९
विभाषोत्पुच्छे ६।२।१९५
विभाषोदरे ६।३।८७
विभाषोपपदेन प्रती० १।३।७७
विभाषोपयमने १।२।१६
विभाषोपसर्गे २।३।५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभाषोर्णोः १।२।३
विभाषोशीनरेषु ४।२।११७
विभाषौषधिवनस्प० ८।४।६
विमुक्तादिभ्योऽण् ५।२।६१
विरामोऽवसानम् १।४।१०९
विशाखयोश्च १।२।६२
विशाखाषाढाद० ५।१।१०९
विशिपतिपदिस्क० ३।४।५६
विशिष्टलिङ्गो नदादे० २।४।७
विशेषणं विशेष्ये० २।१।५६
विशेषणानां चाजातेः १।२।५२
विश्वस्य वसुराटोः ६।३।१२७
विषयो देशे ४।२।५१
विष्करः शकुनौ वा ६।१।१४५
विष्वग्देवयोश्च टेर० ६।३।९१
विसर्जनीयस्य सः ८।३।३४
विसारिणो मत्स्ये ५।४।१६
विस्पष्टादीनि गुणव० ६।२।२४
वीरवीर्यौ च ६।२।११९
वुञ्छण्कठजिलसे० ४।२।७९
वृकज्येष्ठाभ्यां ति० ५।४।४१
वृकाट्टेण्यण् ५।३।११५
वृक्षासनयोर्विष्टरः ८।३।९३
वृणोतेराच्छादने ३।३।५४
वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः १।३।३८
वृद्धस्य च ५।३।६२
वृद्धाच्छः ४।२।११३
वृद्धाट्ठक् सौवीरेषु० ४।१।१४८
वृद्धात्प्राचाम् ४।२।११९
वृद्धादकेकान्त वा० ४।२ १४०
वृद्धिनिमित्तस्य च० ६।३।३८
वृद्धिरादैच् १।१।१
वृद्धिरेचि ६।१।८५
वृद्धिर्यस्याचामादि० १।१।७२
वृद्धेत्कोसलाजादा० ४।१।१६९
वृद्धो यूना तल्लक्षण० १।२।६५
वृद्भ्यः स्यसनोः १।३।९२
वृन्दारकनागकुञ्ज० २।१।६१
वृषाकप्यग्निकुसि० ४।१।३७
वृषादीनां च ६।१।१९७
वॄतो वा ७।२।३८
वेः पादविहरणे १।३।४१
वेः शब्दकर्मणः १।३।३४
वेः शालच्छङ्कटचौ ५।२।२८
वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ८।३।७३
वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् ८।३।७७
वेञः ६।१।३९
वेञो वयिः २।४।४१
वेतनादिभ्यो जीवति ४।४।१२
वेत्तेर्विभाषा ७।१।७
वेरपृक्तस्य ६।१।६५
वेशन्तहिमवद्भ्या० ४।४।११२
वेशोयशआदेर्भगा० ४।४।१३१
वेश्च स्वनो भोजने ८।३।६९
वैतोऽन्यत्र ३।४।९६
वैयाकरणाख्यायां चतु० ६।३।७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैवावेति च च्छन्दसि ८।१।६४
वोताप्योः ३।३।१४१
वोतो गुणवचनात् ४।१।४४
वाोपसर्जनस्य ६।३।८१
वो विधूनने जुक् ७।३।३८
वौ कषलसकत्थ० ३।२।१४३
वौ क्षुश्रुवः ३।३।२५
व्यक्तवाचां समुच्चारणे १।३।४८
व्यञ्जनैरुपसिक्ते ४।४।२६
व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५
व्यथो लिटि ७।४।६८
व्यधजपोरनुपसर्गे ३।३।६१
व्यन् सपत्ने ४।१।१४५
व्यवहिताश्च १।४।८१
व्यवहृपणोः समर्थयोः २।३।५७
व्यवायिनोऽन्तरम् ६।२।१६५
व्यश्च ६।१।४२
व्याङ्परिभ्यो रमः १।३।८३
व्याहरति मृगः ४।३।५१
व्युपयोः शेतेः पर्याये ३।३।३९
व्युष्टादिभ्योऽण् ५।१।९६
व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ८।३।१८
व्रजयजोर्भावे क्यप् ३।३।९८
व्रते ३।२।८०
व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ८।२।३६
व्रातच्फञोरस्त्रियाम ५।३।११३
व्रातेन जीवति ५।२।२१
व्रीहिशाल्योर्ढक् ५।२।२
व्रीहेः पुरोडाशे ४।३।१४६
व्रीह्यादिभ्यश्च ५।२।११६
शकटादण् ४।४।८०
शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहा० ३।४।६५
शकि णमुल्कमुलौ ३।४।१२
शकि लिङ् च ३।३।१७२
शकि सहोश्च ३।१।९९
शक्तियष्टयोरीकक् ४।४।५९
शक्तौ हस्तिकपाटयोः ३।२।५४
शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ४।३।९२
शतमानविंशतिकस० ५।१।२७
शतसहस्रान्ताच्च० ५।२।११९
शताच्च ठन्यतावशते ५।१।२१
शतुरनुमो नद्यजादी ६।१।१६७
शदन्तविंशतेश्च ५।२।४६
शदेः शितः १।३।६०
शदेरगतौ तः ७।२।४२
शप्श्यनोर्नित्यम् ७।१।८१
शब्ददर्दुरं करोति ४।४।३४
शब्दवैरकलहाभ्र० ३।१।१७
शमामष्टानां दीर्घः० ७।३।७४
शमिता यज्ञे ६।४।५४
शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ३।२।१४१
शमिधातोः संज्ञायाम् ३।२।१४
शम्याः ष्लञ् ४।३।१४०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शयवासवासिष्वका० ६।३।१७
शरद्वच्छुनकदर्भा० ४।१।१०२
शरादीनां च ६।३।११९
शरीरावयवाच्च ४।३।५५
शरीरावयवाद्यत् ५।१।६
शरोऽचि ८।४।४८
शर्करादिभ्योऽण् ५।३।१०७
शर्कराया वा ४।२।८२
शर्परे विसर्जनीयः ८।३।३५
शर्पूर्वाः खयः ७।४।६१
शल इगुपधादनिटः० ३।१।४५
शलालुनोऽन्यतर० ४।४।५४
शश्छोऽटि ८।४।६२
शसो न ७।१।२९
शाकलाद्वा ४।३।१२८
शाखादिभ्यो यः ५।३।१०३
शाच्छासाह्वाव्यावे० ७।३।३७
शाच्छोरन्यतरस्याम् ७।४।४१
शाणाद्वा ५।१।३५
शात् ८।४।४३
शारदेऽनार्तवे ६।२।९
शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ४।१।७३
शालीनकौपीने अ० ५।२।२०
शास इदङ्हलोः ६।४।३४
शासिवसिघसीनां च ८।३।६०
शा हौ ६।४।३५
शिखाया वलच् ४।२।८८
शि तुक् ८।३।३१
शितेर्नित्याबह्वज्ब० ६।२।१३७
शिलाया ढः ५।३।१०२
शिल्पम् ४।४।५५
शिल्पिनि चाकृञः ६।२।७६
शिल्पिनि ष्वुन् ३।१।१४५
शिवशममरिष्टस्य करे ४।४।१४३
शिवादिभ्योऽण् ४।१।११२
शिशुक्रन्दयमसभ० ४।३।८८
शि सर्वनामस्थानम् १।१।४२ सर्वनाम० - संज्ञा
शीङः सार्वधातुके० ७।४।२१
शीङो रुट् ७।१।६
शीतोष्णाभ्यां कारिणि ५।२।७२
शीर्षश्छन्दसि ६।१।५९
शीर्षच्छेदाद्यच्च ५।१।६४
शीलम् ४।४।६१
शुक्राद् घन् ४।२।२६
शुण्डिकादिभ्योऽण् ४।३।७६
शुभ्रादिभ्यश्च ४।१।१२३
शुषः कः ८।२।५१
शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ३।४।३५
शुष्कधृष्टौ ६।१।२००
शूद्राणामनिरवसि० २।४।१०
शूर्पादञन्यतरस्याम् ५।१।२६
शूलात् पाके ५।४।६५
शूलोखाद्यत् ४।२।१७
शृङ्खलमस्य बन्ध० ५।२।७९
शृङ्गमवस्थायां च ६।२।११४
शृतं पाके ६।१।२७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ७।४।१२
शॄवन्द्योरारुः ३।२।१७३
शे १।१।१३
शे मुचादीनाम् ७।१।५९
शेवलसुपरिविशाल० ५।३।८४
शेश्छन्दसि बहुलम् ६।१।६८
शेषात्कर्तरि पर० १।३।७८
शेषाद्विभाषा ५।४।१५४
शेषे ४।२।९१
शेषे प्रथमः १।४।१०७
शेषे लृडयदौ ३।३।१५१
शेषे लोपः ७।२।९०
शेषे विभाषा ८।१।४१
शेषे विभाषा ८।१।५०
शेषे विभाषाऽकखा० ८।४।१८
शेषो घ्यसखि १।४।७
शेषो बहुव्रीहिः २।२।२३
शोणात् प्राचाम् ४।१।४३
शौनकादिभ्यश्छ० ४।३।१०६
श्नसोरल्लोपः ६।४।१११
श्नान्नलोपः ६।४।२३
श्नाभ्यस्तयोरातः ६।४।११२
श्याद्व्यधास्रुसं० ३।१।१४१
श्येनतिलस्य पाते० ६।३।७०
श्योऽस्पर्शे ८।२।४७
श्रज्यावमकन्पाप० ६।२।२५
श्रविष्ठाफल्गुन्यनु० ४।३।३४
श्राणामांसौदनाट्टिठन् ४।४।६७

श्राद्धमनेन भुक्त० ५।२।८५
श्राद्धे शरदः ४।३।१२
श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे० ३।३।२४
श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ७।१।५६
श्रुवः शृ च ३।१।७४
श्रुशृणुपॄकृवृ० ६।४।१०२
श्रेण्यादयः कृता० २।१।५८
श्रोत्रियश्छन्दो० ५।२।८४
श्र्युकः किति ७।४।११
श्लाघह्नुङ्स्थाश० १।४।३४
श्लिष आलिङ्गने ३।१।४६
श्लौ ६।१।१०
श्वगणाट्ठञ्च ४।४।११
श्वयतेरः ७।४।१८
श्वयुवमघोनामत० ६।४।१३३
श्वशुरः श्वश्र्वा १।२।७१
श्वसस्तुट् च ४।३।१५
श्वसो वसीयःश्रेयसः ५।४।८०
श्वादेरिञि ७।३।८
श्वीदितो निष्ठायाम् ७।२।१४
षः प्रत्ययस्य १।३।६
षट्कतिकतिपय० ५।२।५१
षट् च काण्डादीनि ६।२।१३४
षट्चतुर्भ्यश्च ७।१।५५
षट्त्रिचतुर्भ्यो० ६।१।१७३
षड्भ्यो लुक् ७।१।२२
षढोः कः सि ८।२।४१
षण्मासाण्यच्च ५।१।८२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षत्वतुकोरसिद्धः ६।१।८३
षपूर्वहन्धृत० ६।४।१३५
षष्टिकाः षष्टिरा० ५।१।८९
षष्टचादेश्चासंख्यादेः ५।२।५८
षष्टाष्टमाभ्यां ञ च ५।३।५०
षष्ठी २।२।८ ष.तत्पु. समासः
षष्ठी चानादरे २।३।३८
षष्ठी प्रत्येनसि ६।२।६०
षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा १।४।९
षष्ठी शेषे २।३।५०
षष्ठी स्थानेयोगा १।१।४८
षष्ठी हेतुप्रयोगे २।३।२६
षष्ठ्यतसर्थप्र० २।३।३०
षष्ठ्या आक्रोशे ६।३।२०
षष्ठ्याः पतिपुत्रपृ० ८।३।५३
षष्ठ्या रूप्य च ५।३।५४
षष्ठ्या व्याश्रये ५।४।४८
षात्पदान्तात् ८।४।३४
षिद्गौरादिभ्यश्च ४।१।४१ ङीष्
षिद्भिदादिभ्योऽङ् ३।३।१०४ अङ् प्रत्ययः
ष्टुना ष्टुः ८।४।४०
ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ७।३।७५
ष्णान्ता षट् १।१।२३
ष्यङः संप्रसारणम् ६।१।१३
स उत्तमस्य ३।४।९८
स एषां ग्रामणीः ५।२।७८
सः स्यार्धधातुके ७।४।४९
सः स्विदिस्वदिस० ८।३।६२
संयसश्च ३।१।७२
संयोगादिश्च ६।४।१६६
संयोगादेरातो धातो० ८।२।४३
संयोगान्तस्य लोपः ८।२।२३
संयोगे गुरु १।४।११
संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ४।३।५०
संशयमापन्नः ५।१।७२
संसृष्टे ४।४।२२
संस्कृतम् ४।४।३
संस्कृतं भक्षाः ४।२।१५
संहितशफल० ४।१।७०
संहितायाम् ६।१।७०
संहितायाम् ६।३।११३
सक्थं चाक्रा० ६।२।१९७
सख्यशिश्वीति० ४।१।६२
सख्युरसंबुद्धौ ७।१।९२
सख्युर्यः ५।१।१२५
सगतिरपि तिङ् ८।१।६८
सगर्भसयूथस० ४।४।११४
सङ्कलादिभ्यश्च ४।२।७४
सङ्ख्ययाव्ययासन्ना० २।२।२५
सङ्ख्या ६।२।३५
सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः २।१।५१
सङ्ख्याया अति० ५।१।२२
सङ्ख्याया अवयवे० ५।२।४२
सङ्ख्यायाः क्रियाभ्या० ५।४।१७
सङ्ख्यायाः संज्ञासङ्घ० ५।१।५७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सङ्ख्यायाः संवत्सर० ७।३।१५
सङ्ख्यायाः स्तनः ६।२।१६२
सङ्ख्याया गुणस्य० ५।२।४७
(201) सङ्ख्याया विधार्थे० ५।३।४२
सङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः ५।४।५९
सङ्ख्या वश्येन २।१।१९
सङ्ख्याविसायपूर्व० ६।३।१०९
सङ्ख्याऽव्ययादेर्ङीप् ४।१।२६
सङ्ख्यासुपूर्वस्य ५।४।१४०
सङ्ख्यैकवचना० ५।४।४३
सङ्ग्रामे प्रयोजन० ४।२।५५
सङ्घाङ्कलक्षण० ४।३।१२७
सङ्घे चानौत्तरा० ३।३।४२
सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः ३।३।८६
सञ्ज्ञापूरण्योश्च ६।३।३८
सञ्ज्ञायां लला० ४।४।४६
सञ्ज्ञायां शरदो० ४।३।२७
सञ्ज्ञायां श्रवणा० ४।२।५
सञ्ज्ञायां समजनि० ३।३।९९
सञ्ज्ञायाङ्कन् ४।३।१४५
सञ्ज्ञायाङ्कन् ५।३।७५
सञ्ज्ञायाङ्कन् ५।३।८७
सञ्ज्ञायाङ्कन्थोशीनरेषु २।४।२०
सञ्ज्ञायाङ्गिरिनि० ६।२।९४
सञ्ज्ञायाञ्च ५।३।९७
सञ्ज्ञायाञ्च ६।२।७७
सञ्ज्ञायाञ्जन्या ४।४।८२
सञ्ज्ञायान्धेनुष्या ४।४।८९
सञ्ज्ञायाम् २।१।४३
सञ्ज्ञायाम् ३।३।१०९
सञ्ज्ञायाम् ३।४।४२
सञ्ज्ञायाम् ४।१।७२
सञ्ज्ञायाम् ४।३।११७
सञ्ज्ञायाम् ६।२।१५८
सञ्ज्ञायाम् ८।२।११
सञ्ज्ञायामनाचिता० ६।२।१४६
सञ्ज्ञायामुपमानम् ६।१।१९८
सञ्ज्ञायाम्भृतॄवृजिधा० ३।२।४६
सञ्ज्ञायाम्मन्मा० ५।२।१३७
सञ्ज्ञायां मित्राजिनयोः ६।२।१६४
सञ्ज्ञोऽन्यतस्यां० २।३।२२
सञ्ज्ञौपम्ययोश्च ६।२।११३
सत्य प्रश्ने ८।१।३२
सत्यादशपथे ५।४।६६
सत्यापपाशरूपवी० ३।१।२५
सत्सूद्विषद्रुह० ३।२।६१
सदिरप्रतेः ८।३।६६
सदृशप्रतिरूपयोः० ६।२।११
सदेः परस्य लिटि ८।३।११८
सद्यः परुत्परार्यैषम० ५।३।२२
सधमादस्थयोश्छन्दसि ६।३।९५
सनः क्तिचि लो० ६।४।४५
स नपुंसकम् २।४।१७
सनाद्यन्ता धातवः ३।१।३२
सनाशंसभिक्ष उः ३।२।१६८
सनिंससनिवांसम् ७।२।६९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सनि ग्रहगुहोश्च ७।२।१२
सनि च २।४।४७
सनि मीमाघुरभल० ७।४।५४
सनीवन्तर्धभ्रस्जद० ७।२।४९
सनोतेरन: ८।३ १०८
सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रे० ४।३।१६
सन्महत्परमोत्तमो० २।१।६०
सन्यङो: ६।१।९
सन्यत: ७।४।७९
सन्लिटोर्जे: ७।३।५७
सन्वल्लघुनि चङ्परे० ७।४।९३
सपत्रनिष्पत्रादति० ५।४।६१
सपूर्वाच्च ५।२।८७
सपूर्वाया: प्रथमाया० ८।१।२६
सप्तनोऽञ्छन्दसि ५।१।६०
सप्तमीपञ्चम्यौ कार० २।३।७
सप्तमीविशेषणे बहु० २।२।३५
सप्तमी शौण्डै: २।१।३९
सप्तमी सिद्धशुष्कप० ६।२।३२
सप्तमी हारिणौ धर्म्ये० ६।२।६५
सप्तम्यधिकरणे च २।३।३६
सप्तम्या: पुण्यम् ६।२।१५१
सप्तम्याञ्चोपपीड० ३।४।४९
सप्तम्याञ्जनेर्ड: ३।२।९७
सप्तम्यास्त्रल् ५।३।१०
सभायां नपुंसके ६।२।९८
सभाया य: ४।४।१०५
सभा राजामनुष्यपूर्वा २।४।२३
सम: क्ष्णुव: १।३।६५
सम: प्रतिज्ञाने १।३।५२
सम: समि ६।३।९२
सम: सुटि ८।३।५
समयस्तदस्य० ५।१।१०३
समयाच्च यापनायाम् ५।४।६०
समर्थ: पदविधि: २।१।१
समर्थानां प्रथमाद्वा ४।१।८२
समवप्रविभ्य: स्थ: १।३।२२
समवायान्समवैति ४।४।४३
समवाये च ६।१।१३३
समस्तृतीयायुक्तात् १।३।५४
समांसमां विजायते ५।२।१२
समानकर्तृकयो: पूर्वकाले ३।४।२१ क्त्वा
समानकर्तृकेषु तुमुन् ३।३।१५८
समानतीर्थे वासी ४।४।१०७
समानस्य छन्द० ६।३।८३
समानोदरे श० ४।४।१०८
समापनात्सपूर्व० ५।१।१११
समाया: ख: ५।१।८४
समासत्तौ ३।४।५०
समासस्य ६।१।२१७ अन्तोदात्त:
समासाच्च तद्वि० ५।३।१०६
समासान्ता: ५।४।६८
समासेऽङ्गुले: सङ्ग: ८।३।८०
समासेऽनञ्पूर्वे० ७।१।३७ -ल्यप्
समाहार: स्वरित: १।२।३१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समि ख्यः ३।२।७
समि मुष्टौ ३।३।३६
समि युद्रुदुवः ३।३।२३
समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ३।४।३
समुच्चये सामान्यव० ३।४।५
समुदाङ्भ्यो० १।३।७५
समुदोरजः पशुषु ३।३।६९
समुद्राभ्राद्घः ४।४।११८
समूलाकृतजीवेषु० ३।४।३६
समूहवच्च बहुषु ५।४।२२
समो गम्यृच्छिभ्याम् १।३।२९
सम्परिपूर्वात्ख च ५।१।९१
सम्परिभ्यां करोतौ० ६।१।१३५
सम्पादिनि ५।१।९८
सम्पृचानुरुधा० ३।२।१४२
सम्प्रतिभ्यामनाध्याने १।३।४६
सम्प्रसारणस्य ६।३।१३८
सम्प्रसारणाच्च ६।१।१०८
सम्प्रोदश्च कटच् ५।२।२९
सम्बुद्धौ च ७।३।१०६
सम्बुद्धौ शाक० १।१।१६
सम्बोधने च २।३।४७
सम्बोधने च ३।२।१२५
सम्भवत्यवहर० ५।१।५२
सम्भावनेऽलमिति० ३।३।१५४
सम्भूते ४।३।४१
सम्माननोत्संजना० १।३।३६
सरूपाणामेकशे० १।२।६४
सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च ३।१।५६
सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ३।२।४२
सर्वङ्गुणकात्स्न्र्ये ६।२।९३
सर्वचर्मणः कृतः० ५।२।५
सर्वत्र लोहितादि० ४।१।१८
सर्वत्र विभाषा गोः ६।१।११८
सर्वत्र शाकल्यस्य ८।४।५०
सर्वत्राण् च त० ४।३।२२
सर्वदेवात्तातिल् ४।४।१४२
सर्वनामस्थाने चास० ६।४।८
सर्वनाम्नः स्मै ७।१।१४
सर्वनाम्नः स्याड्० ७।३।११४
सर्वनाम्नस्तृतीया० २।३।२७
सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ५।१।१०
सर्वभूमिपृथि० ५।१।४०
सर्वस्य द्वे ८।१।१
सर्वस्य सुपि ६।१।१८५
सर्वस्य सोऽन्यत० ५।३।६
सर्वादीनि सर्वनामानि १।१।२६
सर्वैकान्यकियत्तदः काले दा५।३।१५
सवाभ्यां वामौ ३।४।९१
सविधसनीडसमर्या० ६।२।२३
ससजुषो रुः ८।२।६६
ससूवेति निगमे ७।४।७४
सस्नौ प्रशंसायाम् ५।४।४०
सस्येन परिजातः ५।२।६८
सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ४।१।५७
सहयुक्तेऽप्रधाने २।३।१९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सह सुपा २।१।४
सहस्य सः संज्ञायाम् ६।३।७७
सहस्य सध्रिः ६।३।९४
सहस्रेण संमितौ घः ४।४।१३५
सहिवहोरोदवर्णस्य ६।३।१११
सहेः पृतनर्ताभ्यां च ८।३।१०९
सहेः साडः सः ८।३।५६
सहे च ३।२।९६
साक्षात्प्रभृतीनि च १।४।७३
साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम् ५।२।९१
साढ्यै साढ्वा साढे० ६।३।११२
सात्पदाद्योः ८।३।१११
साधकतमं करणम्० १।४।४२
साधुनिपुणाभ्याम० २।३।४३
सान्तमहतः संयोगस्य ६।४।१०
साप्तपदीनं सख्यम् ५।२।२२
साम आकम् ७।१।३३
सामन्त्रितम् २।३।४८
सामान्यवचनं विभाषितं० ८।१।७४
सामि २।१।२६
सायंचिरंप्राह्णेप्रगे० ४।३।२३
सार्वधातुकमपित् १।२।४
सार्वधातुकार्धधातुकयोः ७।३।८४
सार्वधातुके यक् ३।१।६७
साल्वावयवप्रत्य० ४।१।१७१
साल्वेयगान्धारिभ्यां च ४।१।१६७
सावनडुहः ७।१।८२
सावेकाचस्तृतीया० ६।१।१६२
सास्मिन्पौर्णमासीति० ४।२।२०
सास्य देवता ४।२।२३
सिकताशर्कराभ्यां च ५।२।१०४
सिचि च परस्मैपदेषु ७।२।४०
सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ७।२।१
सिचो यङि ८।३।११२
सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ३।४।१०९
सिति च १।४।१६
सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च २।१।४०
सिध्मादिभ्यश्च ५।२।९७
सिध्यतेरपारलौकिके ६।१।४८
सिन्धुतक्षशिलादि० ४।३।९३
सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ४।३।३२
सिपि धातो रुर्वा ८।२।७४
सिब्बहुलं लेटि ३।१।३४
सिवादीनां वाड्व्य० ८।३।७१
सुः पूजायाम् १।४।९३
सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ३।२।८९
सुखप्रिययोर्हिते ६।२।१५
सुखप्रियादानुलोम्ये ५।४।६३
सुखादिभ्यः कर्तृवे० ३।१।१८
सुखादिभ्यश्च ५।२।१३१
सुञः ८।३।१०७
सुञो यज्ञसंयोगे ३।२।१३२
सुट् कात्पूर्वः ६।१।१३१
सुट् तिथोः ३।४।१०७
सुडनपुंसकस्य १।१।४२ सर्वनामस्थान संज्ञा
सुधातुरकङ् च ४।१।९७

विभक्ति-उदात्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुधितवसुधितनेम० ७।४।४५
सुनोतेः स्यसनोः ८।३।११७
सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८
सुपः १।४।१०२
सुपां सुलुक्पूर्वसव० ७।१।३९
सुपि च ७।३।१०२
सुपि स्थः ३।२।४
सुपो धातुप्रातिप० २।४।७१
सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१४
सुप्प्रतिना मात्रार्थे २।१।९
सुप्यजातौ णिनिस्ता० ३।२।७८
सुप्रातसुश्वसुदिव० ५।४।१२०
सुबामन्त्रिते पराङ्गव० २।१।२
सुयजोर्ङ्वनिप् ३।२।१०३
सुवास्त्वादिभ्योऽण् ४।२।७९
सुविनिर्दुर्भ्यः सुपि० ८।३।८८
सुषामादिषु च ८।३।९८
सुसर्वार्धाज्जनपदस्य ७।३।१२
सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ५।४।१५०
सूत्रं प्रतिष्णातम् ८।३।९०
सूत्राच्च कोपधात् ४।२।६४
सूददीपदीक्षश्च ३।२।१५३
सूपमानात्क्तः ६।२।१४४
सूर्यतिष्यागस्त्यम० ६।४।१४९
सृघस्यदः क्मरच् ३।२।१६०
सृजिदृशोर्झल्यमकिति ६।१।५७
सृपितृदोः कसुन् ३।४।१७
सृ स्थिरे ३।३।१७
सेधतेर्गतौ ८।३।११३
सेनान्तलक्षणका० ४।१।१५२
सेनाया वा ४।४।४५
सेर्ह्यपिच्च ३।४।८७
सेऽसिचि कृतचृतछृ० ७।२।५७
सोऽचि लोपे चे० ६।१।१३०
सोढः ८।३।११५
सोदराद्यः ४।४।१०९
सोऽपदादौ ८।३।३८
सोममर्हति यः ४।४।१३७
सोमाट्ट्यण् ४।२।२९
सोमे सुञः ३।२।९०
सोमे ह्वरितः ७।२।३३
संरक्षेपणे ६।२।१९४
सोमनसी अलोमो० ६।२।११६
सोऽस्य निवासः ४।३।८९
सोऽस्यांशवस्नभृतयः ५।१।५५
सोऽस्यादिरिति छन्द० ४।२।५४
सौ च ६।४।१३
स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ८।२।२९
स्तन्भेः ८।३।६७
स्तम्बकर्णयोरमिजपोः ३।२।१३
स्तम्बशकृतोरिन् ३।२।६४
स्तम्बे क च ३।३।८३
स्तम्भुसिवुसहां चङि ८।३।११६
स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भु० ३।१।८२
स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ८।३।१०५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मै० ७।२।७२
स्तेनाद्यन्नलोपश्च ५।१।१२४
स्तोः श्चुना श्चुः ८।४।३९
स्तोकान्तिकदूरार्थ० २।१।३८
स्तौतिण्योरेव षण्य० ८।३।६१
स्त्यः प्रपूर्वस्य ६।१।२३
स्त्रियाः ६।४।७९
स्त्रियाः पुंवद्भाषित० ६।३।३३
स्त्रियां क्तिन् ३।३।९४ ॥ ३।३।१७४
स्त्रियां च ७।१।९६
स्त्रियां संज्ञायाम् ५।४।१४३
स्त्रियाम् ४।१।३
स्त्रियामवन्तिकु० ४।१।१७४
स्त्रीपुंवच्च १।२।६६
स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्न० ४।१।८७
स्त्रीभ्यो ढक् ४।१।१२०
स्त्रीषु सौवीरसाल्व० ४।२।७५
स्थः क च ३।२।७७
स्थण्डिलाच्छयि० ४।२।१४
स्थागापापचो भावे ३।३।९५
स्थाघ्वोरिच्च १।२।२७
स्थादिष्वभ्यासेन० ८।३।६४
स्थानान्तगोशाल० ४।३।३५
स्थानान्ताद्विभाषा० ५।४।१०
स्थानिवदादेशोऽन० १।१।५५
स्थानेऽन्तरतमः १।१।४९
स्थालीबिलात् ५।१।६९
स्थूलदूरयुवह्रस्व० ६।४।१५६
स्थूलादिभ्यः प्रकार० ५।४।३
स्थे च भाषायाम् ६।३।१९
स्थेशभासपिसक० ३।२।१७५
स्नात्व्यादयश्च ७।१।४९
स्नुक्रमोरनात्मनेपद० ७।२।३६
स्नेहने पिषः ३।४।३८
स्पर्धायामाङः १।३।३१
स्पृशोऽनुदके क्विन् ३।२।५८
स्पृहिगृहिपतिद० ३।२।१५८
स्पृहेरीप्सितः १।४।३६
स्फायः स्फी निष्ठायाम् ६।१।२२
स्फायो वः ७।३।४१
स्फिगपूतवीणाञ्जो० ६।२।१८६
स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ६।१।४६
स्फुरतिस्फुलत्योर्नि० ८।३।७६
स्मिपूङ्रञ्ज्वशां० ७।२।७४
स्मे लोट् ३।३।१६५
स्मोत्तरे लङ् च ३।३।१७६
स्यतासी लृलुटोः ३।१।३३
स्यदो जवे ६।४।२८
स्यश्छन्दसि बहुलम् ६।१।१२९
स्यसिच्सीयुट्तासिषु० ६।४।६२
स्रवतिशृणोतिद्रवति० ७।४।८१
स्रोतसो विभाषा० ४।४।११३
स्वं रूपं शब्दस्याश० १।१।६७
स्वं स्वामिनि ६।२।१७
स्वतन्त्रः कर्ता १।४।५४
स्वतवान् पायौ ८।३।११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वनहसोर्वा ३।३।६२
स्वपादिर्हिसामच्य० ६।१।१८२
स्वपितृषोर्नजिङ् ३।२।१७२
स्वपिस्यमिव्येञां यङि ६।१।१९
स्वपो नन् ३।३।९१
स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् १।१।३४
स्वमोर्नपुंसकात् ७।१।२३
स्वयं क्तेन २।१।२४
स्वरतिसूतिसूयति० ७।२।४४
स्वरादिनिपातमव्ययम् १।१।३६
स्वरितञितः क० १।३।७२
स्वरितमाम्रेडिते ८।२।१०३
स्वरितात्संहितायाम० १।२।३९
स्वरितेनाधिकारः १।३।११
स्वरितो वाऽनुदात्ते० ८।२।६
स्वसुश्छः ४।१।१४३
स्वागतादीनां च ७।३।७
स्वाङ्गाच्चेतः ६।३।३९
स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद० ४।१।५४
स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ३।४।६१
स्वाङ्गेऽध्रुवे ३।४।५४
स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ५।२।६६
स्वादिभ्यः श्नुः ३।१।७३
स्वादिष्वसर्वनामस्थाने १।४।१७
स्वादुमि णमुल् ३।४।२६
स्वापेश्चङि ६।१।१८
स्वामिन्नैश्वर्ये ५।२।१२६
स्वामीश्वराधिपति० २।३।३९
स्वे पुषः ३।४।४०
स्वौजसमौट्छष्टाभ्यां० ४।१।२
ह एति ७।४।५२
हनः सिच् १।२।१४
हनश्च वधः ३।३।७६
हनस्त च ३।१।१०८
हनस्तोऽचिण्णलोः ७।३।३२
हनो वध लिङि २।४।४२
हन्त च ८।१।५४
हन्तेरत्पूर्वस्य ८।४।२२
हन्तेर्जः ६।४।३६
हरतेरनुद्यमनेऽच् ३।२।९
हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ३।२।२५
हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ४।४।१५
हरितादिभ्योऽञः ४।१।१००
हरीतक्यादिभ्यश्च ४।३।१६७
हलः ६।४।२
हलः श्नः शानज्झौ ३।१।८३
हलदन्तात्सप्तम्याः सं० ६।३।८
हलन्ताच्च १।२।१०
हलन्त्यम् १।३।३
हलश्च ३।३।१२१ घञ्
हलश्चेजुपधात् ८।४।३०
हलसीराट्ठक् ४।४।८१
हलसीराट्ठक् ४।३।१२
हलसूकरयोः पुवः ३।२।१८३
हलस्तद्धितस्य ६।४।१५०
हलादिः शेषः ७।४।६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

हलि च ८।२।७७
हलि लोपः ७।२।११३
हलि सर्वेषाम् ८।३।२२
हलोऽनन्तराः संयोगः १।१।७
हलो यमां यमि लोपः ८।४।६३
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घा० ६।१।६६
हव्येऽनन्तःपादम् ३।२।६६
हशश्वतोर्लङ् च ३।२।११६
हशि च ६।१।११०
हश्च व्रीहिकालयोः ३।१।१४८
हस्ताजातौ ५।२।१३३
हस्तादाने चेरस्तेये ३।३।४०
हस्ते वर्तिग्रहोः ३।४।३९
हायनान्तयुवा० ५।१।१२९
हिंसायां प्रतेश्च ६।१।१३६
हिंसार्थानां च समा० ३।४।४८
हि च ८।१।३४
हितं भक्षाः ४।४।६५
हिनुमीना ८।४।१५
हिमकाषिहतिषु च ६।३।५३
हिरण्यपरिमाणं धने ६।२।५५
हीने १।४।८५
हीयमानपापयोगाच्च ५।४।४७
हुझल्भ्यो हेर्धिः ६।४।१०१
हुश्नुवोः सार्वधातुके ६।४।८७
हृक्रोरन्यतरस्याम् १।४।५३
हृदयस्य प्रियः ४।४।९५
हृदयस्य हृल्लेखयद० ६।३।४९
हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्व० ७।३।१९
हृषेर्लोमसु ७।२।२९
हेति क्षियायाम् ८।१।६०
हेतुमति च ३।१।२६
हेतुमनुष्येभ्योऽन्यत० ४।३।८१
हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३।३।१५६
हेतौ २।३।२३
हेमन्तशिशिराव० २।४।२८
हेमन्ताच्च ४।३।२१
हे मपरे वा ८।३।२६
हेरचङि ७।३।५६
हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् ५।२।२३
हैहेप्रयोगे हैहयोः ८।२।८५
हो ढः ८।२।३१
होत्राभ्यश्छः ५।१।१३४
हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ७।३।५४
ह्मयन्तक्षणश्वसजा० ७।२।५
ह्रस्वं लघु १।४।१०
ह्रस्वः ७।४।५९
ह्रस्वनद्यापो नुट् ७।१।५४
ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ६।१।१७०
ह्रस्वस्य गुणः ७।३।१०८
ह्रस्वस्य पिति कृति० ६।१।६९
ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तर० ६।१।१४६
ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ८।३।१०१
ह्रस्वादङ्गात् ८।२।२७
ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पू० ६।२।१७३
ह्रस्वे ५।३।८६

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ह्रस्वो नपुंसके० १।२।४७
ह्. ह्वरेश्छन्दसि ७।२।३१
ह्लादो निष्ठायाम् ६।४।९५
ह्वः सम्प्रसारणं च न्य० ३।३।७२
ह्वः सम्प्रसारणमभ्य० ६।१।३२
ह्वावामश्च ३।२।२

महादेवसिंह संग्रामसिंहजी
"लीलासदन" ४ ... मार्ग.

पाणिनीय व्याकरण-सम्बन्धी अन्य ग्रन्थ

१. **धातुपाठ** (मूलमात्र)—शुद्ध संस्करण १–२५
२. **अष्टाध्यायी** (मूलमात्र) ,, ,, १–२५
३. **संस्कृत धातुकोष**—अकारादि क्रम से हिन्दी में धातुओं के अर्थ तथा उपसर्ग योग से विशेषार्थ। ३–००
४. **शिक्षा-सूत्राणि**—आपिशल पाणिनीय चान्द्र सूत्र १–५०
५. **अष्टाध्यायी भाष्य** (प्रथमावृत्ति) श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत पदच्छेद समास अनुवृत्ति अर्थ उदाहरण तथा साधनिका सहित।
प्रथम भाग १५–०० द्वितीय भाग १५–००
तृतीय भाग १५–००
६. **महाभाष्य** (हिन्दी व्याख्या सहित) द्वितीय भाग अ० १ पाद २-३-४। व्याख्याकार—युधिष्ठिर मीमांसक। २०–००
७. **संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। प्रथम भाग ५–००। द्वितीय भाग ५–५०
८. **शब्दरूपावली** (विना रटे रूप बोधिका) ०–७५
९. **लिट् लुङ् लकार की रूपबोधक सरलविधि** १–५०
१०. **वामनीय लिङ्गानुशासनं स्वोपज्ञवृत्तिसहितम्** ३–००
११. **दवस्-पुरुषकारवार्त्तिकोपेतम्**—समान रूपोंवाली अनेक गणों में पढ़ी गई धातुओं का प्रयोजन-विवेचक ग्रन्थ ८–००
१२. **भागवृत्ति संकलनम्**—अष्टाध्यायी की प्राचीनवृत्ति ३–००
१३. **काशकृत्स्नधातुव्याख्यानम्**—संस्कृत टीका सहित ६–२५
१४. **काशकृत्स्न व्याकरणम्**—विस्तृत व्याख्या सहित ३–००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा संचालित

आर्यजगत् की महत्त्वपूर्ण मासिक-पत्रिका

वेदवाणी

नारी हॉस्पिटल के पास,
अहमदाबाद-३८० ००६.

यह पत्रिका निरन्तर २६ वर्ष से बिना किसी बाधा के प्रकाशित हो रही है। इसमें वेदादि सत्यशास्त्रों के सम्बन्ध में तथा आर्यसमाज के मन्तव्यसम्बन्धी खोजपूर्ण लेख छपते हैं। प्रतिवर्ष एक बृहत्काय विशेषाङ्क भी प्रकाशित होता है। कागज की मंहगाई के कारण इस वर्ष से विशेषाङ्क का लागत मूल्य २ रु० पृथक् लिया जा रहा है। वेदवाणी का सामान्य वार्षिक चन्दा ७ रु० मात्र है।

इस वर्ष का विशेषाङ्क—'आर्यसमाज के वेद-सेवक विद्वान्' छपा है।

मिलने का पता—

वेदवाणी कार्यालय
पो० बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१ - प्रि-प्रत्यक्ष - छात्र ॥३।३।१८॥
प्रत्यक्ष - ३।३।१९८॥

पुस्तक-प्राप्ति-स्थ—

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, जि
रामलाल कपूर एण्ड संस

गुरु बाजार, अमृतसर ।]
बिरहाना रोड़, कानपुर ।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृजन्त - पदोंके प्रत्यय भागमें उदात्त स्वर रहता है। अतः तृजन्त पदके अर्थमें क्रिया करनेवाले = कर्ता की मुख्यता होती है। यथा :-
पा रक्षणे + तृच् = पितृ = पिता। अर्थः - रक्षणकी क्रिया करनेवाला।

तृनन्त - पदोंके धातुभागमें उदात्त स्वर रहता है। अतः तृनन्त पदके अर्थमें धात्वर्थकी प्रधानता (मुख्यता) होती है। यथा :- पा रक्षणे + तृन् = पितृ = पिता। अर्थ - अच्छे प्रकार रक्षण करनेकी क्रिया करने वाला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi